श्रीगणेशाय नमः

गो० श्रीतुलसीदासजी-कृत

विनयपत्रिका

जिसमें

गोस्वामीजी ने अपने उपास्य-देव के आगे,
राग और द्वेष की भयंकर अग्नि से निरंतर
प्रज्वलित संसार के महा-विदाहक ताप
से त्राण-प्राप्ति के अर्थ अनेक विनय
के पद वर्णन किए हैं।

ग्यारहवीं बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा
नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित
सन् १९२९ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

विनयपत्रिका ॥

राग बिलावल ।

गाइये गणपति जगवन्दन । शंकरसुवन भवानी-नन्दन ॥ सिद्धिसदन गजवदन बिनायक । कृपासिन्धु सुन्दर सबलायक ॥ मोदकप्रिय मुदमंगलदाता । विद्या-वारिधि बुद्धिविधाता ॥ मांगत तुलसिदास कर जोरे । बसहिं राम सिय मानस मोरे १ दीनदयालु दिवाकर देवा । कर मुनिमनुज सुरासुर सेवा ॥ हिमतमकरिकेहरि करमाली । दहन दोष दुख दुरित रुजाली ॥ कोक कोक-नद लोक प्रकाशी । तेज प्रताप रूप रस राशी ॥ सारथि पंगु दिव्य रथगामी । हरिशंकरविधिमूरति स्वामी ॥ वेद पुराण प्रकट यश जागै । तुलसी रामभक्ति वर मांगै २ ॥

राग धनाश्री।

को याचिये शम्भु तजि आन। दीनदयालु भक्त आरत-हर सब प्रकार समरथ भगवान॥ कालकूटज्वर जरत सुरासुर निजपन लागि कियो विष पान। दारुण दनुज जगतदुखदायक मारेउ त्रिपुर एकही बान॥ जो गति अगम महामुनि दुर्लभ कहत सन्त श्रुति सकल पुरान। सो गति मरणकाल अपने पुर देत सदाशिव सबहि समान॥ सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पारवतीपति परमसुजान। देहु कामरिपु रामचरण रति तुलसिदास कहँ कृपानिधान ३ दानी कहुँ शंकरसम नाहीं। दीनदयालु दिबोई भावै याचक सदा सुहाहीं॥ मारिकै मार थप्यो जग में जाकी प्रथमरेख भटमाहीं। ता ठाकुर को रीझि निवाजिबो कह्यो क्यों परत मो पाहीं॥ योग कोटि करि जो गति हरिसों मुनि मांगत सकुचाहीं। वेदविदित तेहि पद पुरारिपुर कीट पतंग समाहीं॥ ईश उदार उमापति परिहरि अनत जे याचन जाहीं। तुलसिदास ते मूढ़ मांगने कबहुँ न पेट अघाहीं ४ बावरो रावरो नाह भवानी। दानि बड़ो दिन देत दयेबिनु वेद बड़ाई भानी॥ निज घरकी वर बात विलोकहु हौ तुम परम सयानी। शिवकी दई सम्पदा देखत श्रीशारदा सिहानी॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी

सुखकी नहीं निशानी। तिन रंकन को नाक सँवारत हौं आयो नकवानी॥ दुखी दीनता दुखियन के दुख याचकता अकुलानी। यह अधिकार सौंपिये औरहि भीख भली मैं जानी॥ प्रेमप्रशंसा विनय व्यंग्ययुत सुनि विधि की वर बानी। तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगतमातु मुसुकानी ५॥

राग रामकली।

याचिये गिरिजापति कासी। जासु भवन अणिमादिक दासी॥ अवढर दानि द्रवत पुनि थोरे। सकत न देखि दीन करजोरे॥ सुख सम्पति मति सुगति सुहाई। सकल सुलभ शंकर सेवकाई॥ गये शरण आरत के लीन्हे। निरखि निहाल निमिष महँ कीन्हे॥ तुलसिदास याचक यश गावै। विमल भक्ति रघुपति की पावै ६ कस न दीन पर द्रवहु उमावर। दारुण विपतिहरण करुणाकर॥ वेद पुराण कहत उदार हर। हमरि बेर कस भयहु कृपणतर॥ कवनि भक्ति कीन्हीं गुणनिधि द्विज। होइ प्रसन्न दीन्हेउ शिवपद निज॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं। तव पुर कीट पतंगहु पावहिं॥ देहु कामरिपु रामचरण रति। तुलसिदास प्रभु हरहु भेदमति ७ देव बड़े दाता बड़े शङ्कर बड़े भोरे। किये दूरि दुख सबनके जिन जिन कर

जोरे ॥ सेवा सुमिरण पूजिबो पात अक्षत थोरे । दियो जगत जहँ लगि सबै सुख गज रथ घोरे ॥ गाँव बसत वामदेव मैं कबहूं न निहोरे । अधिभौतिक बाधा भई ते किङ्कर तोरे ॥ बेगि बोलि बलि बरजिये करतूति कठोरे । तुलसी दलि रूंधोचहैं शठ शाख सहोरे ८ शिव शिव होइ प्रसन्न करु दाया । करुणामय उदारकीरति बलि जाउ हरहु निज माया ॥ जलजनयन गुणअयन मयनरिपु महिमा जान न कोई । बिनु तव कृपा रामपदपङ्कज सपनेहु भक्ति न होई ॥ ऋषी सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जग माहीं । तव पद विमुख न पार पाव कोउ कलप कोटि चलिजाहीं ॥ अहिभूषण दूषणरिपुसेवक देव देव त्रिपुरारी । मोहनिहारदिवाकर शङ्कर शरणशोकभयहारी ॥ गिरिजा-मनमानसमराल काशीश मसाननिवासी । तुलसिदास हरिचरणकमल वर देहु भक्ति अविनासी ९ ॥

राग धनाश्री ।

मोहतमतरणि हर रुद्र शङ्कर शरण हरण मम शोक लोकाभिरामं । बालशशिभालसुविशाल लोचनकमल काम शतकोटिलावण्यधामं ॥ कम्बुकुन्देन्दुकर्पूरविग्रह रुचिर तरुण रविकोटि तनु तेज भ्राजै । भस्म सर्वांग अर्द्धांग-शैलात्मजा व्याल नृकपाल माला विराजै ॥ मौलि संकुल

जटामुकुट विद्युच्छटा तटिनिवरवारि हरिचरणपूतं । श्रवण कुण्डल गरलकंठ करुणाकन्द सच्चिदानन्द वन्देवधूतं ॥ शूल शायक पिनाकासि कर शत्रुवनदहन इव धूमध्वज वृषभयानं । व्याघ्रगजचर्मपरिधान विज्ञानघन सिद्ध सुर मुनि मनुजसेव्यमानं ॥ तांडवितनृत्यपर डमरु डिमडिम प्रवर अशुभइव भांतिकल्याणराशी । महाकल्पांत ब्रह्माण्डमण्डल दवन भवनकैलास आसीनकाशी ॥ तज्ञ सर्वज्ञ यज्ञेश अच्युत विभव विश्व भवदंश संभव पुरारी । ब्रह्मेंद्र चंद्रार्क वरुणाग्नि वसु मरुत यम अर्च्य भवदंघ्रिसर्वाधिकारी ॥ अकल निरुपाधि निर्गुण निरंजन ब्रह्म कर्मपथमेकमज निर्विकारं । अखिलविग्रह उग्ररूप शिव भूपसुर सर्वगत सर्व सर्वोपकारं ॥ ज्ञान वैराग्यधन धर्म कैवल्य सुखसुभग सौभाग्य शिव सानुकूलं । तदपि नरमूढ़ आरूढ़ संसारपथ भ्रमत भव विमुख तव पादमूलं ॥ नष्टमति दुष्टअति कष्टरत खेदगत दासतुलसी शंभु शरण आया । देहि कामारि श्रीराम पदपंकजे भक्ति भवहरणि गत भेद माया १० भीषणाकार भैरव भयंकर भूतप्रेतप्रमथाधिपति विपतिहर्त्ता । मोह मूषकमार्जार संसार भयहरण तारणतरण अभय कर्त्ता ॥ अतुलबल विपुलविस्तार विग्रहगौर अमल अति धवल धरणीधराभं । शिरसि संकुलित कलजूटपिंगलजटा पटल

शतकोटिविद्युच्छटाभं ॥ आज विबुधापगा आप पावन परम मौलि मालेव शोभाविचित्रं । ललितलल्लाट पर राज रजनीशकलकलाधर नौमि हर धनदमित्रं ॥ इन्दु पावक भानु नयन मर्दनमयन ज्ञानगुणअयन विज्ञानरूपं । रवन गिरिजा भवनभूधराधिप सदा श्रवणकुण्डल वदनछवि अनूपं ॥ चर्म असि शूल धर डमरु शरचापकर यान वृष-भेश करुणानिधानं । जरत सुर असुर नर लोक शोकाकुलं मृदुल चित अजित कृतगरलपानं ॥ भस्मतनुभूषनं व्याघ्र-चर्माम्बरं उरग नरमौलि उरमालधारी । डाकिनी शाकिनी खेचरं भूचरं यंत्र मंत्र भंजन प्रबल कलमषारी ॥ काल अतिकाल कलिकाल व्यालादि खग त्रिपुरमर्दन भीम कर्म भारी । सकललोकान्त कल्पान्त शूलाग्रकृत दिग्गजाव्यक्त गुण नृत्यकारी ॥ पाप सन्ताप घनघोर संसृतिदीन भ्रमत जगयोनि नहिं कोपि त्राता । पाहि भैरवरूप रामरूपी रुद्र बंधु गुरु जनक जननी विधाता ॥ यस्य गुणगण गणति विमलमति शारदा निगम नारद प्रमुख ब्रह्मचारी । शेष स-वेंश आसीन आनन्दवन प्रणत तुलसीदास त्रासहारी ११

शंकरं संप्रदं सज्जनानंददं शैलकन्यावरं परमरम्यं । काम मदमोचनं तामरसलोचनं वामदेवं भजे भावगम्यं ॥ कम्बु-कुंदेंदु कर्पूरगौरं शिवं सुन्दरं सच्चिदानन्दकन्दं । सिद्धसन-

कादियोगीन्द्रवृन्दारका विष्णुविधिवंद्य चरणारविन्दं ॥ ब्रह्मकुलवल्लभं सुलभमतिदुर्लभं विकटवेषं विभुं वेदपारं । नौमि करुणाकरं गरलगंगाधरं निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं ॥ लोकनाथं शोकशूलनिर्मूलिनं शूलिनं मोहतमभूरिभानुं । कालकालं कलातीतमजरं हरं कठिन कलिकालकाननकृशानुं ॥ तज्ञमज्ञान पाथोधिघटसंभवं सर्वगं सर्वसौभाग्य मूलं । प्रचुरभवभंजनं प्रणतजनरंजनं दासतुलसीशरण सानुकूलं १२ ॥

राग वसन्त ।

सेवहु शिवचरण सरोजरेनु । कल्याण अखिलप्रद कामधेनु ॥ कर्पूरगौर करुणाउदार । संसारसार भुजगेंद्र हार ॥ सुखजन्मभूमि महिमाअपार । निर्गुणगुणनायक निराकार ॥ त्रयनयन मयनमर्दन महेश । अहंकारनिहार उदितदिनेश ॥ वरबालनिशाकर मौलि भ्राज । त्रैलोक्य शोकहर प्रमथराज ॥ जिन कहँ विधि सुगति न लिखी भाल । तिनकी गति काशीपति कृपाल ॥ उपकारी कोऽपर हर समान । सुर असुर जरत कृत गरलपान ॥ बहु कल्प उपायन करि अनेक । बिन शम्भु कृपा नहिं भो विवेक ॥ विज्ञानभुवन गिरिसुतारमन । कह तुलसिदास मम त्रास शमन १३ देखो देखो वन बन्यो आज उमाकान्त

मानो देखन तुमहिं आई ऋतु बसन्त ॥ मानोतनद्युति चम्पककुसुममाल । बरबसननील नूतनतमाल ॥ कलकदलि जंघ पदकमललाल । सूचक कटिकेहरि गतिमराल ॥ भूषण प्रसून बहु विविध रङ्ग । नूपुर किंकिणि कलरव विहङ्ग ॥ कर नवल बकुल पल्लव रसाल । श्रीफल कुच कंचुकि लताजाल ॥ आननसरोज कच मधुपपुंज । लोचनविशाल नवनीलकंज ॥ पिकवचन चरित वर बरहि कीर । सित सुमन हास लीला समीर ॥ कह तुलसिदास सुनु शिव सुजान । उर बसि प्रपंच रचे पंचबान ॥ करि कृपा हरिय भ्रमफंद काम । जेहि हृदय बसहिं सुखराशि राम १४ ॥

राग मारू ।

दुसहदोषदुखदलनि करु देवि दाया । विश्वमूलासि जन सानुकूलासि शरशूलधारिणि महामूलमाया ॥ तड़ित गर्भांगसर्वांगसुंदरलसत दिव्यपट भव्यभूषण विराजै । बालमृगमंजुखंजनविलोचनि चन्द्रवदनि लखि कोटि रति मार लाजै ॥ रूपसुखशीलसीमासि भीमासि रामासि वामासि वरबुद्धि बानी । छमुखहेरम्बअम्बासि जगदम्बिके शम्भुजायासि जय जय भवानी ॥ चंडभुजदंडखंडनि विहंडनिमुंड महिषमदभंगकर अंगतोरे । शुंभनिःशुंभकुंभीश रणकेशरिणि क्रोधवारिधिवैरिवृन्द बोरे ॥ निगम

आगम अगम गुर्वि तव गुण कथन उर्विधर कहत जेहि सहसजीहा। देहि मां मोहिं प्रण प्रेम निज नेम यह राम घनश्याम तुलसी पपीहा १५ ॥

राग सारंग।

जय जय जगजननि देवि सुरनरमुनिअसुरसेवि भक्ति मुक्तिदायिनि भयहरणि कालिका। मङ्गल मुदसिद्धिसदनि पर्वशर्वरीशवदनि तापतिमिरतरुणतरणि किरणमालिका ॥ वर्म चर्म करिकृपाण शूल सेल धनुष बाण धरणि दलनि दानवदल रण करालिका। पूतना पिशाच प्रेत डाकिनिशाकिनि समेत भूत ग्रह वेताल खग मृगालिजालिका ॥ जय महेशभामिनी अनेकरूप नामिनी समस्तलोकस्वामिनी हिमशैलबालिका। रघुपतिपदपरमप्रेम तुलसी यह अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणतपालिका १६ जय जय भगीरथनंदिनी मुनिचयचकोरचंदिनी नरनागविबुधवंदिनी जय जह्नुबालिका। विष्णुपदसरोज जासि ईशशीशपर विभासि त्रिपथगासि पुण्यरासि पापछालिका ॥ विमल विपुल बहसि बारि शीतल त्रयतापहारि भँवरवरविभंगतर तरंगमालिका। पुरजन पूजोपहार शोभित शशिधवलधार भंजनि भवभार भक्तकल्पथालिका ॥ निज तटवासी विहंग जल थल चर पशु पतंग कीट जटिल तापस सब

सरिसपालिका तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देहु मोहिं महिषकालिका १७ ॥

राग रामकली।

जयति जय सुरसरी जगदखिलपावनी। विष्णुपदकंज मकरन्द इव अम्बुवर बहसि दुखदहसि अघवृन्दविद्राविनी॥ मिलित जलपात्र अज युक्त हरिचरण रज विरज वर वारि त्रिपुरारि शिर धामिनी। जह्नुकन्या धन्य पुन्यकृत सगरसुत भूधरद्रोणि बिद्दरनि बहुनामिनी॥ यक्ष गन्धर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहिं सुकृत पुंज युत कामिनी। स्वर्गसोपान विज्ञानज्ञानप्रदे मोहमदमदनपाथोज हिमयामिनी॥ हरित गम्भीर बानीर दुहुँ तीर वर मध्य धारा विशद विश्वअभिरामिनी। नीलपर्यंककृतशयन सर्पेश जनु सहसशीशावली स्रोतसुरस्वामिनी॥ अमित महिमा अमितरूप भूपावलिमुकुटमणि वंदि त्रैलोक्यपथगामिनी। देहि रघुवीरपदप्रीति निर्भर मातु दासतुलसि त्रासहरणि भवभामिनी १८ हरणि पाप त्रिविध ताप सुमिरत सुरसरित। बिलसति महि कल्पबेलि मुद मनोरथ फरित॥ सोहति शशिधवलधार सुधासलिलभरित। विमलतरतरंग लसत रघुवरकेसे चरित॥ तो बिनु जगदम्ब गङ्ग कलियुग का करित। घोर भव अपार सिंधु तुलसी

कैसे तरित १९ ईश शीश बससि त्रिपथ लससि नभ-पताल धरनि। मुनि सुर नर नाग सिद्ध सुजन मंगल-करनि॥ देखत दुख दोष दुरित दाह दारिद दरनि। सगर सुवनशाँसतिशमनि जलनिधिजलभरनि॥ महिमा को अवधि करसि बहु विधि हरि हरनि। तुलसी करु बानि विमल विमलवारिवरनि २०॥

राग विलावल।

यमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न। त्यों त्यों सुकृत सुभट कलिभूपहि निदरि लगे बहु काढ़न॥ ज्यों ज्यों जलमलीन त्यों त्यों यमगण मुख मलीन है आढ़न। तुलसिदास जगदघ जवास ज्यों अनघमेघ लागे डाढ़न २१॥

राग भैरव।

सेइय सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलिकासी। शमनि शोक संताप पाप रुज सकलसुमंगलरासी॥ मर्यादा चहुँ ओर चरन वर सेवत सुरपुरवासी। तीरथ सब शुभ अंग रोम शिवलिङ्ग अमित अविनासी॥ अन्तरअयन अयन भल थल फलवच्छ वेद विश्वासी। गलकम्बल वरुणा विभाति जनु मूल लसत सरितासी॥ दण्डपाणि भैरव विषाण मल रुचि खलगण भयदासी। लोलदिनेश त्रिलोचन लोचन करणघण्ट घण्टासी॥ मणिकर्णिका वदन

शशि सुन्दर सुरसरि सुख सुखमासी। स्वारथ परमारथ परिपूरण पंचक्रोश महिमासी॥ विश्वनाथ पालक कृपाल चित लालति नित गिरिजासी। सिद्धि शची शारद पूजहिं मन जोगवति रहति रमासी॥ पंचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंचनदासी। ब्रह्म जीव सम राम नाम युग आखर विश्वविकासी॥ चारितु चरति करम कुकरम करि मरत जीवगन घासी। लहतपरमपदपयपावन जेहि चहत प्रपंचउदासी॥ कहत पुराण रची केशव निज कर करतूति कलासी। तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी २२॥

राग वसन्त।

सब शोचविमोचन चित्रकूट। कलि-हरन करन कल्याण बूट॥ शुचि अवनि सुहावनि आलबाल। कानन विचित्र बारी विशाल॥ मन्दाकिनि मालिनि सदा सींच। वरवारि विषम नर नारि नीच॥ शाखा सुशृंग भूरुह सुपात। निर्झर मधुकर मृदु मलय वात॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर विहारु। साधन प्रसून फल चारि चारु॥ भव घोर घाम हर सुखद छांह। थप्यो थिरप्रभाव जानकीनाह॥ साधक सुपथिक बड़े भाग पाइ। पावत अनेक अभिमत अघाइ॥ रस एक रहित गुण कर्म काल। सियराम लषण पालक

कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहसि प्रेम । सेइय गिरि करि निरुपाधि नेम २३ ॥

राग कान्हरा ।

अब चित चेति चित्रकूटहि चल । कोपित कलि लोपित मङ्गलमग विलसत बढ़त मोह माया मल ॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोक रघुवर विहारथल । शैल शृंग भवभंग हेतु लख दलन कपट पाखण्ड दम्भ दल ॥ जहँ जनमे जगजनक जगतपति विधि हरि हर परिहरि प्रपञ्च छल । सकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम विगत विषादभये पारथ नल ॥ न करु विलंब विचारु चारुमति वर्ष पाछिले सम अगिलोपल । मंत्र सो जाइ जपहि जो जपि भे अजर अमर हर अचै हलाहल ॥ राम नाम जप याग करत नित मज्जत पय पावन पीवत जल । करिहैं राम भावतो मनको सुखसाधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामता कलपतरु सो युग युग जागत जगतीतल । तुलसी तोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बल २४ ॥

राग धनाश्री ।

जयति अंजनीगर्भअम्भोधिसंभूतविधु विबुधकुलकैरवानंदकारी । केशरीचारुलोचनचकोरकसुखद लोकगण शोकसंतापहारी ॥ जयति जय बालकपिकेलिकौतुकउदित

चण्डकरमण्डल ग्रासकर्त्ता। राहु रवि शक्र पवि गर्व खर्वी करण शरणभयहरण जय भुवनभर्त्ता॥ जयति रणधीर रघुवीर हित देवमणि रुद्रअवतार संसारपाता। विप्र सुर सिद्ध मुनि आशिषाकरवपुष विमलगुण बुद्धिवारिधि विधाता॥ जयति सुग्रीव शिक्षादि रक्षण निपुण बालि बल-शालि वध मुख्य हेतू। जलधि लंघन सिंह सिंहिकामदमथन रजनिचरनगर उत्पातकेतू॥ जयति भूनंदिनीशोच मोचन विपिनदलन घननादवश विगतशङ्का॥ लूमलीलानलज्वालमालाकुलित होलिकाकरणलङ्केशलङ्का॥ जयति सौमित्रि रघुनन्दनानन्दकर ऋक्ष कपि कटक संघट विरे-धायी। बद्धवारिधिसेतु अमरमङ्गलहेतु भानुकुलकेतु रण विजयदायी॥ जयति जय वज्रतनु दशन नख मुख विकट चण्ड भुजदण्ड तरु शैल पानी। समरतैलिक यंत्र तिल तमीचर निकर पेरिडारे सुभट घालि घानी॥ जयति दश-कण्ठ घटकरण वारिदनाद कदन कारण कालनेमि हंता। अघटघटना सुघट सुघट विघटन विकट भूमिपाताल जल गगन गंता॥ जयति विश्व विख्यात बानैतविरदावली विदुष बरणत वेद विमलबानी। दास तुलसी त्रास शमन सीतारमन संग शोभित रामराजधानी २५ जयति मर्क-टाधीश मृगराजविक्रम महादेव मुदमङ्गलालय कपाली।

मोह मद कोह कामादि खल संकुलाघोरसंसारनिशि कि-
रणमाली ॥ जयति लसदञ्जनादितिज कपि केशरी कश्यप
प्रभव जगदार्तिहर्त्ता। लोकलोकपकोकनद शोकहरहंस
हनुमान कल्याणकर्त्ता ॥ जयति सुविशाल विकराल
विग्रह वज्रसारसर्वांग भुजदण्डभारी। कुलिशनखदशन
वर लसत बालधि बृहद बैरि शस्त्रास्त्रधर कुधरधारी ॥
जयतिजानकी शोचसन्तापमोचन रामलक्ष्मणानन्दवारिज
विकाशी। कीशकौतुककेलि लूमलंकादहन दलनकानन तरुण
तेजराशी ॥ जयति पाथोधि पाषाण जलयानकर यातुधान
प्रचुरहर्षहाता। दुष्ट रावण कुंभकर्ण पाकारि जित मर्म
भित्कर्मपरिपाकदाता ॥ जयति भुवनैकभूषण विभीषण
वरद विहित कृत रामसंग्रामशाका। पुष्पकारूढ़ सौमित्रि
सीता सहित भानुकुलभानु कीरतिपताका ॥ जयति
परयंत्रमन्त्राभिचार ग्रसन कर्म रण कूट कृत्यादि हन्ता ॥
शाकिनी डाकिनी पूतना प्रेत बेताल भूत प्रमथ यूथ यन्ता।
जयति वेदांतविद विविधविद्याविशद वेद वेदांगविद ब्रह्म-
वादी। ज्ञान वैराग्य विज्ञान भाजन विभो विमल गुण
गणत शुक नारदादी। जयति काल गुण कर्म मायामथन
निश्चल ज्ञान व्रत सत्यरत धर्मचारी। सिद्ध सुर वृंद यो-
गींद्र सेवित सदा दास तुलसी प्रणत भयतमारी २६ जयति

मंगलागार संसारभारापहर वानराकारविग्रह पुरारी। रामरोषानल ज्वालमाला मिस ध्वान्तचरशलभ संहारकारी॥ जयति मरुदंजनामोदमन्दिर नतग्रीव सुग्रीव दुःखैकबन्धो। यातुधानोद्धत क्रुद्धकालाग्निहर सिद्ध सुर सज्जनानन्दसिन्धो॥ जयति रुद्राग्रणी विश्वविद्याग्रणी विश्वविख्यात भट चक्रवर्ती। सामगाताग्रणी कामजेताग्रणी रामहित रामभक्तानुवर्ती॥ जयति संग्रामजयराम संदेहहर कोशलाकुशलकल्याणभाखी। रामविरहार्क संतप्त भरतादि नर नारि शीतलकरण कल्पशाखी॥ जयतिसिंहासनासीन सीतारमन निरखि निरभर हरष नृत्यकारी। राम संभ्राज शोभा सहित सर्वदा तुलसी मानस रामपुर विहारी २७ जयति वातसंजात विख्यातविक्रम बृहद्बाहु बलविपुलवालधि विशाला। जातरूपाचलाकारविग्रह लसतलोम विद्युल्लताज्वालमाला॥ जयति बालार्क वरवदन पिंगलनयन कपिश कर्कश जटाजूटधारी। विकटभृकुटी वज्रदशन नखवैरिमदमत्तकुंजरपुंजकुंजरारी॥ जयति भीमार्जुन व्याल सूदन गर्वहर धनंजयरथत्राण केतू। भीष्म द्रोण करणादि पालित कालदृक सुयोधनचमू निधनहेतू॥ जयति गतराज्यदातार हंतार संसारसंकट दनुजदर्पहारी। ईति अति भीति गृह प्रेत चौरानलव्याधि बाधा शमन घोर

मारी ॥ जयति निगमागम व्याकरण करणलिपि काव्य कौतुककला कोटि सिन्धो। सामगायक भक्तकामदायक वामदेव श्रीरामप्रिय प्रेमबन्धो॥ जयति धर्मांशुसंदग्धसंपाति विपक्षलोचन दिव्यदेहदाता। कालकलिपापसंतापसंकुल सदाप्रणत तुलसीदास तात माता २८ जयति निर्भरानन्द-सन्दोह कपिकेशरी केशरीसुवन भुवनैकभर्त्ता। दिव्यभूस्यं-जनामंजुलाकरमणे भक्तसन्तापचिन्तापहर्त्ता॥ जयतिधर्मार्थ कामापवर्गद विभो ब्रह्मलोकादिवैभवविरागी। वचन मा-नस करम सत्य धर्मव्रत जानकीनाथचरणानुरागी॥ जयति विहगेश बलबुद्धिवेगातिमदमथन मन्मथमथन ऊर्ध्वरेता। महानाटकनिपुण कोटि कविकुलतिलक गानगुणगर्व ग-न्धर्वजेता॥ जयति मन्दोदरीकेशकर्षण विद्यमान दशकंठ-भट मुकुटमानी। भूमिजादुःखसंजातरोषांतकृत यातना-जंतुकृतयातुधानी॥ जयति रामायणश्रवणसंजातरोमांच लोचनसजल शिथिलबानी। रामपदपद्ममकरन्दमधुकर पाहि दासतुलसी शरण शूलपानी २९॥

राग सारंग।

जाके गति है हनुमान की। ताकी पैज पूजि आई यह रेखा कुलिश पषान की॥ अघटितघटन सुघट विघटन ऐसी बिरदावली नहिं आन की। सुमिरत संकट शोच

विमोचन सुरतिमोदनिधान की ॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषण राम अरु जानकी । तुलसी कपि की कृपाविलोकनि खानि सकल कल्यान की ३० ॥

राग गौरी ।

ताकि है तमाकि ताकी ओर को । जाको है सब भांति भरोसो कपि केशरीकिशोर को ॥ जनरंजन अरिगण गंजन मुख भंजन खल बरजोर को । वेद पुराण प्रकट पुरुषारथ सकलसुभटशिरमोरको ॥ उथपेथपनथप्योउथपनपन विबुध वृन्दबन्दिछोर को । जलधि लंघि दहि लंक प्रबलदलदलन निशाचरघोर को ॥ जाको बालविनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोर को । जाकी चिबुकचोट चूरण किय रद्-मद कुलिश कठोर को ॥ लोकपाल अनुकूल विलोकिबो चहत विलोचनकोर को । सदा अभय जय मुद मंगलमय जो सेवक रणरोर को ॥ भक्तकामतरु नाम राम परिपूरण चन्दचकोर को । तुलसी फल चारो करतल यश गावत गई बहोर को ३१ ॥

राग विलावल ।

ऐसी तोहिं न बूझिये हनुमान हठीले । साहब कहूं न राम से तोसे न वसीले ॥ तेरे देखत सिंह के शिशु मेढक लीले । जानत हौं कलि तेरोऊ मन गुणगण कीले ॥ हांक

सुनत दशकंध के भये बन्धन ढीले। सो बल गयो किधौं भये अब गर्व गहीले॥ सेवक को परदा फटे तू समरथसीले। अधिक आपते आपनो सुनि मानस हीले॥ सांसति तुलसीदास की सुनि सुयश तुहीले। तिहूं काल तिनको भलो जे रामरँगीले ३२ समरथ सुवनसमीर के रघुवीर पियारे। मोपर कीबे तोहिं जो करिलेहि भिया रे॥ तेरी महिमा ते चलै चिंचिनीचियारे। अँधियारो मेरी बार क्यों त्रिभुवन उजियारे॥ केहि कारण जन जानिके सनमान किया रे। केहि अघ अवगुण आपनो करि डारि दिया रे॥ खाये खोंची मांगि मैं तेरो नाम लिया रे। तेरे बल बलि आजु लौं जग जागि जिया रे॥ जो तोसों होतो फिरो मेरो हेतु हियारे। तौ क्यों बदन देखावतो कहि वचन इयारे॥ तोसों ज्ञाननिधान को सर्वज्ञ बिया रे। हौं समुझत साईं द्रोह की गति छारछिया रे॥ तेरे स्वामी राम से स्वामिनी सिया रे। तहँ तुलसी को कौन को काको तकिया रे ३३ अतिआरत अतिस्वारथी अतिदीन दुखारी। इनको बिलग न मानिये बोलहिं न विचारी॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नरनारी। अतिबरषे अनबरषेहूं देहिं दैवहि गारी॥ ना कहि आये नाथसों सांसति भै भारी। कहिआयो कीबी क्षमा निज ओर निहारी॥ समय सांकरे

सुमिरिये समरथ हितकारी। सोउ सब विधि ऊपर करै अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवक की सदा साहिबहि सुधारी। तुलसीपर तेरी कृपा निरुपाधि निरारी ३४ कटु कहिये गाढ़े परे सुन समुझि सुसांई। करहिं अनभले को भलो आपनी भलाई ॥ समरथ शुभी जो पाइये वीर पीरपराई। ताहि तकै सब ज्यों नदी बारिधि न बुलाई ॥ अपने अपने को भलो चहै लोग लोगाई। भावै जो जेहि तेहि भजे शुभ अशुभ सगाई ॥ बांह बोल दै थापिये जो निज बरिआई। बिनु सेवा सो पालिये सेवक की नाई ॥ चूक चपलता मेरिये तू बड़ो बड़ाई। होत आदरे ढीठ है अति नीच निचाइ ॥ बन्दिछोर विरदावली निगमागम गाई। नीको तुलसीदास को तेरिही निकाई ३५ ॥

राग गौरी।

मङ्गलमूरति मारुतनन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन ॥ पवनतनय सन्तनहितकारी। हृदय विराजत अवधविहारी ॥ मातु पिता गुरु गणपति शारद। शिवा समेत शम्भु शुक नारद ॥ चरण वन्दि विनवों सब काहू। देहु रामपदनेह निबाहू ॥ वंदौं राम लषण वैदेही। जो तुलसीके परमसनेही ३६ ॥

दंडक।

लाल लाड़िले लषण हित हौ जन के। सुमिरे संकट-

हारा सकल सुमङ्गलकारी पालक कृपाल अपने पन के॥ धरणी धरणहार भञ्जन भुवनभार अवतार साहसी सहसफन के। सत्यसन्ध सत्यव्रत परमधर्मरत निर्मल कर्म वचन मन के॥ रूपके निधान धनु बाण पाणि तूण कटि महावीर विदित जितैया बड़े रन के। सेवकसुखदायक सबल सब लायक गायक जानकीनाथगुणगन के॥ भावते भरत के सुमित्रा सीता के दुलारे चातक चतुर रामश्याम घन के। वल्लभ उर्मिला के सुलभ सनेहवश धनी धन तुलसी से निरधन के ३७॥

राग धनाश्री।

जयति लक्ष्मणानन्त भगवन्त भूधर भुजगराज भुवनेश भूभारहारी। प्रबलपावकमहाज्वालमालावमन शमन सन्ताप लीलावतारी॥ जयति दाशरथि समरसमरथ सुमित्रासुवन शत्रुसूदनरामभरतबन्धो। चारु चम्पकबरन वसन भूषण धरन दिव्यतर भव्य लावण्यसिन्धो॥ जयति गाधेय गौतम जनक सुखजनक विश्वकण्टककुटिलकोटि-हन्ता। वचनचयचातुरी परशुधरगर्वहर सर्वदा रामभद्रानुगन्ता॥ जयति सीतेश सेवा सरस विषयरस निरस निरुपाधि धुरधर्मधारी। विपुलबलमूल शार्दूलविक्रम जलद-नादमर्दन महावीर भारी॥ जयति संग्रामसागरभयङ्कर-

तरण रामहितकरणवर बाहुसेतू। उर्मिलारमन कल्याण-
मङ्गलभवन दासतुलसी दोषदवन हेतू ३८ जयति भूमिजा-
रमणपदकञ्जमकरंदरसरसिकमधुकर भरत भूरिभागी। भु-
वनभूषण भानुवंश भूषण भूमिपालमणि रामचन्द्रानुरागी॥
जयति विबुधेश धनदादि दुर्लभ महाराजसम्राज सुखपद
विरागी। खड्गधाराव्रती प्रथम रेखा प्रकट शुद्धमतियुवति
पतिप्रेमपागी॥ जयति निरुपाधि भक्ति भावयन्त्रित हृदय
बन्धुहित चित्रकूटाद्रिचारी। पादुका नृपसचिव पुहुमि-
पालक परमधर्मधुरधीर वरवीर भारी॥ जयति संजीविनी
समय सङ्कट हनूमान धनुबान महिमा बखानी। बाहुबल
विपुल परमित पराक्रम अतुल गूढ़गति जानकीजान
जानी॥जयति रणअजिर गन्धर्वगणगर्वहर फिर किय राम
गुणगाथगाता। माण्डवीचित्तचातकनवाम्बुदवरण शरण-
तुलसीदास अभयदाता ३९ जयति जय शत्रुकरि केशरी
शत्रुहन शत्रुतम तुहिनहर किरणकेतू। देव महिदेव महि-
धेनु सेवक सुजन सिद्ध मुनि सकल कल्याणहेतू॥ जयति
सर्वांगसुन्दर सुमित्रासुवन भुवनविख्यात भरतानुगामी।
वर्मचर्मासि धनु बाण तूणीरधर शत्रुसङ्कटशमन तव प्र-
णामी॥ जयति लवणाम्बुनिधिकुम्भसम्भवमहादनुजदुर्जन
दवन दुरितहारी। लक्ष्मणानुज भरतरामसीताचरणरेणु-

भूषितभालतिलकधारी॥ जयति श्रुतिकीर्तिवल्लभ सुदुर्लभ सुलभ नमित नर्मद भक्त भक्तिदाता। दासतुलसी चरणशरण सीदत विभो पाहि दीनार्तसन्तापहाता ४०

जयति श्रीजानकी भानुकुलभानुकी प्राणप्रियवल्लभतरणि भूपे। राम आनन्द चैतन्यघन विग्रहाशक्ति अहलादनी सारस्रूपे॥ चितचरणचिन्तनि जेहि धरतही दूर हो काम भय कोह मद मोह माया। रुद्र विधि विष्णु सुरसिद्धवंदितपदे जयति सर्वेश्वरी रामजाया॥ कर्म जप योग विज्ञान वैराग्य लहि मोक्षहित योगि जे प्रभु मनावैं। जयति वैदेहि सबशक्तिशिरभूषणे ते न तव दृष्टि बिन कबहुँ पावैं॥ कोटि ब्रह्माण्ड जगदीश को ईश जेहि निगम मुनि बुद्धि ते अगम गावैं। विदित यह गाथ अहदानकुलमाथ सो नाथ तव दान ते हाथ आवैं॥ दिव्य शत वर्ष जप ध्यान जब शिव धस्यो राम गुरुरूप मिलि पथ बतायो। चितै हित लीन लखि कृपा कीनी तबै देवि अतिदुर्लभहिं दरश पायो॥ जयति श्रीस्वामिनी सीय शुभनामिनी दामिनी कोटि निज देह दरसै। इन्दिरा आदि दै मत्त गजगामिनी देवभामिनि सबै पांव परसै॥ दुखित लखि भक्त बिनुदरश निजरूप तप यजन जप यतन ते सुलभ नाहीं। कृपाकरि पूर्णनवकंजदललोचना

प्रगट भइ जनकनृप अजिर माहीं ॥ रमित तव विपिन प्रिय प्रेम प्रकटन करन लङ्कपाति व्याज कछु खेल ठान्यो। गोपिका कृष्ण तव तुल्य बहु यतन करि तोहिं मिलि ईश आनन्द मान्यो ॥ हीन तव सुमुख के संग रहि रंक सों विमुख जो देव नहिं नाह नेरो। अधम उद्धरणि यह जानि गहि शरण तव दासतुलसी भयो आय चेरो ४१ ॥

राग केदारा।

कबहुँक अम्ब अवसर पाइ। मेरिवो सुधि द्यायबी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अँगहीन क्षीन मलीन अघी अघाइ। नाम लै भरै उदर एक प्रभु दासीदास कहाइ ॥ बूझिहैं सो है कौन कहिबो नाम दशा जनाइ। सुनत रामकृपालु के मेरी बिगरिबो बनिजाइ ॥ जानकी जगजननि जनकी किये वचन सहाइ। दासतुलसी तरै भव तव नाथ गुणगण गाइ ४२ कबहुँ समय सुधि द्यायबो मेरी मातु जानकी। जन कहाइ नाम लेतहौं कियेपन चातक ज्यों प्यास प्रेम पानकी ॥ सरलप्रकृति आप जानिकै करुणानिधान की। निजगुण अरिकृत अनहितो दासदोष सुरति चित रहत न दिये दान की ॥ बानि बिसारन शील है मानद अमान की। तुलसीदास न बिसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहू गति न आन की ४३ जयति सच्चित् व्याप-

कानन्द यदूब्रह्म विग्रहव्यक्त लीलावतारी। विकल ब्रह्मादि सुर सिद्ध संकोच वश विमल गुणगेह नरदेहधारी॥ जयति कोशलाधीश कल्याण कोशलसुता कुशल कैवल्य फलचारु चारी। वेदबोधित कर्म धर्म धरणी धेनु विप्र सेवक साधु मोदकारी॥ जयति ऋषिमखपाल शमसज्जनशाल शापवशमुनिवधूपापहारी। भंजि भवचाप दलिदापभूपावली सहित भृगुनाथ नत माथधारी॥ जयति धार्मिकधुर धीर रघुवीर गुरु मातु पितु बन्धु वचनानुसारी। चित्रकूटाद्रि विन्ध्याद्रि दण्डकविपिन धन्यकृत पुण्यकानन विहारी॥ जयति पाकारिसुतकाककरतूति फल दानि खनि गर्त गोपित बिराधा। दिव्य देवीवेष लखि निशिचरी जनु बिडंबित करी विश्वबाधा॥ जयति खर त्रिशिर दूषण चतुर्दशसहस्रसुभट मारीच संहारकर्त्ता। गृद्ध शबरी भक्ति विवश करुणासिन्धु चरित निरुपाधि त्रिविधार्त्तिहर्त्ता॥ जयति मदअन्ध कुकबन्ध बधि बालि बल शालि बधकरण सुग्रीवराजा। सुभट मर्कट भालु कटक संघटसजत नमत पद रावणानुज निवाजा॥ जयति पाथोधिकृतसेतु कौतुक हेतु कालमनअगम लइ ललकि लंका। सकुल सानुज सदल दलित दशकण्ठ रण लोक लोकप किये रहित शंका॥ जयति सौमित्रिसीतासचिवसहित चले पुष्पकारूढ निज

राजधानी। दासतुलसी मुदित अवधवासी सकल राम भे भूप वैदेहि रानी ४४ जयति राजराजेन्द्र राजीवलोचन रामनाम कलिकामतरु श्यामशाली। अनय अम्भोधि कुम्भज निशाचरनिकरतिमिरघनघोरखरकिरणमाली॥ जयति मुनि देव नरदेव दशरथके देव मुनि वंद्य किय अवधवासी। लोकनायककोकशोकसंकटशमन भानुकुलकमल काननविकासी॥ जयति शृंगाररस तामरस दामद्युतिदेह गुणगेह विश्वोपकारी। सकलसौभाग्य सौन्दर्य सुषमा रूप मनोभवकोटिगर्वापहारी॥ जयति सुभग शारङ्ग सुनिषङ्ग शायक शक्ति चारु चर्म्मासि वरवर्म धारी। धर्म्मधुर धीर रघुवीर भुजबलअतुल हेलया दलित भूभार भारी॥ जयति कलधौत मणि मुकुट कुण्डल तिलक झलक भलि भाल विधुवदन शोभा। दिव्य भूषण वसन पीत उपवीत किय ध्यान कल्याण भाजन न कोभा॥ जयति भरत सौमित्रि शत्रुघ्न सेवित सुमुख सचिव सेवक सुखद सर्व दाता। अधम आरत दीन पतितपातक पीन सकृतनतमात्र कहैं पाहि पाता॥ जयति जय भुवनदशचारियशजगमगत पुण्यमय धन्य जय रामराजा। चरित सुर सरित कविमुख्यगिरिनिःसरित पिबत मज्जत मुदित सन्तसमाजा॥ जयति वर्णाश्रमाचारि वरनारि नर सत्य शम दम दय

दान शीला । विगतदुखदोष सन्तोषसुखसवदा सुनत गावत रामराज लीला ॥ जयति वैराग्यविज्ञानवारांनिधे नमत नर्मद पापतापहर्त्ता । दासतुलसी चरणशरण संशयहरण देहि अवलम्ब वैदेहिभर्त्ता ४५ ॥

राग गौरी।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरणभवभयदारुणं। नवकंजलोचन कंजमुख कर कंज पदकंजारुणं॥ कंदर्पअगणित अमितछवि नवनीलनीरजसुंदरं । पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ भजु दीनबन्धु दिनेश दानवदैत्यवंशनिकन्दनं। रघुनन्द आनँदकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं ॥ शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंगविभूषणं। आजानुभुज शरचापधर संग्रामजित खरदूषणं॥ इति वदत तुलसीदास शंकर शेषमुनिमनरंजनं। मम हृदयकंज निवास करु कामादि खलदल गंजनं ४६ ॥

राग रामकली।

सदा जपु रामजपु रामजपु रामजपु रामजपु मूढमन बारबारं । सकल सौभाग्य सुखखानि जिय जानि शठ मानि विश्वास वद वेदसारं ॥ कोशलेन्द्र नवनीलकंजाभतनु मदनारिपुकंजहृदिचंचरीकं। जानकीरमन सुखभ-

चन भुवनैक प्रभु समभजन परमकारुणीकं। दनुजवनधूम-ध्वज पीनआजानुभुजदण्डकोदण्डवरचण्डबानं। अरुणकर चरणमुखनयनराजीव गुणअयन बहुमयन शोभानिधानं॥ वासनावृन्दकैरवदिवाकर कामक्रोधमदकञ्जकाननतुषारं। लोभअतिमत्तनागेन्द्रपंचाननं भक्तहितहरणसंसारभारं॥ केशवं क्लेशहं केशवंदितपदद्वन्द्व मन्दाकिनीमूलभूतं। सर्वदानन्दसन्दोह मोहापहं घोरसंसारपाथोधिपोतं॥ शोक संदेह पाथोदपटलानिलं पापपर्वतकठिनकुलिशरूपं। सन्तजन कामधुकधेनु विश्रामपद नाम कलिकलुषभंजन अनूपं॥ धर्म्मकल्पद्रुमाराम हरिधामपथिसंवलं मूलमिदमेव एकं भक्ति वैराग्य विज्ञान शम दान दम नामआधीन साधन अनेकं॥ तेन तप्तं हुतं दत्तमेवाखिलं तेन सर्वं कृतं कर्मजालं। येन श्रीरामनामामृतं पानकृतमनिशमनवद्यमव-लोक्य कालं॥ श्वपच खल भिल्ल यवनादि हरिलोकगत नामबल विपुल मतिमलिनपरसी। त्यागि सब आस सं-त्रास भवपासअसिनिशित हरिनाम जपु दासतुलसी ४७

ऐसी आरती रघुवीर की करहि मन। हरण दुखद्वन्द्व गोविन्द आनन्दघन॥ अचरचर रूप हरि सर्वगत सर्वदा बसत इति वासना धूप दीजै। दीप निजबोध गतक्रोधमद मोहतम प्रौढअभिमानचितवृत्तिछीजै॥ भाव अतिशय

विशद् प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमनपरमसंतोषकारी । प्रेम ताम्बूल गतशूल संशयसकल विपुलभववासनाबीजहारी ॥ अशुभशुभ कर्मघृतपूर्णदशवर्त्तिका त्यागपावकसतोगुणप्रकासं । भक्तिवैराग्यविज्ञानदीपावली अर्पि नीराजनं जगनिवासं ॥ विमलहृदि भवनकृत शांतिपर्यंकशुभ शयनविश्राम श्रीरामराया । क्षमाकरुणाप्रमुख तत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेदमाया ॥ येहि आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देवऋषि अखिल मुनि तत्त्वदरसी । करे सोई तरे परिहरे रागादि मल वदति इति अमलमति दास तुलसी ४८ हरति सब आरती आरती रामकी । दहतिदुख दोष निर्मूलिनी कामकी ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका । उड़त अघ विहंग सुनि ताल करतालिका ॥ भक्त हृदिभवन अज्ञानतमहारिणी । विमलविज्ञानमय तेजविस्तारिणी ॥ मोहमदकोहकलिकञ्जहिमयामिनी । मुक्ति की दूतिका देहद्युतिदामिनी ॥ प्रणतजनकुमुदवन इन्दुकरजालिका । तुलसि अभिमानमहिषेश बहुकालिका ४९ दनुज वनदहनगुणगहन गोविन्द नन्दादि आनन्ददाताविनाशी । शम्भु शिव रुद्र शङ्कर भयङ्करभीम घोर तेजायतन क्रोधराशी ॥ अनन्त भगवन्त जगदन्त अन्तकत्रासशमन श्रीरमण भुवनाभिरामं । भूधराधीश जगदीश ईशान विज्ञान

घनज्ञान कल्याणधामं ॥ वामनाव्यक्त पावन परावरविभो प्रगटपरमात्मा प्रकृतिस्वामी । चन्द्रशेखर शूलपाणि हर अनघ अज अमित अविछिन्न वृषभेशगामी ॥ नीलजलदाभतनुश्याम बहुकामछवि राम राजीवलोचन कृपाला । कम्बुकर्पूर बपुधवल निर्मल मौलि जटा सुरतटिनिसित सुमनमाला ॥ वसन किंजल्कधर चक्र शारंगदर कंज कौमोदकी अतिविशाला । मारकरिमत्तमृगराज त्रयनयन हर नौमि अपहरणसंसारज्वाला ॥ कृष्ण करुणाभवन दमनकालीयबल विपुल कंसादि निर्वंशकारी । त्रिपुरमद भंगकर मत्तगजचर्म्मधर अन्तकोरगग्रसनपन्नगारी ॥ ब्रह्म व्यापक अकल सकल परपरमहित ज्ञानगोतीत गुणवृत्ति हर्त्ता । सिंधुसुतगर्वगिरि वज्र गौरीश भव दक्षमखअखिल विध्वंसकर्त्ता ॥ भक्तिप्रिय भक्तजनकामधुकधेनु हरि हरन दुर्घट विकट विपतिभारी । सुखदनर्मद वरद विरज अनवद्यखिल विपिनआनन्द बीथिन विहारी ॥ रुचिर हरिशंकरी नाम मन्त्रावली द्वन्द्वदुखहरनि आनन्दखानी । विष्णु शिव लोकसोपानसम सर्वदा वदति तुलसीदास विशद बानी ५०

भानुकुलकमलरवि कोटिकंदर्पछवि कालकलिव्यालमिव वैनतेयं । प्रबल भुजदण्डपर चण्ड कोदण्डधर तूण वर विशिख बलमप्रमेयं ॥ अरुणराजीवदलनयन सुषमाअयन

श्यामतनुकांति वरवारिदाभं । तप्तकांचनवस्त्र शस्त्रविद्या
निपुण सिद्धसुरसेव्य पाथोजनाभं ॥ अखिललावण्यगृह
विश्वविग्रह परमप्रौढ़ गुणगूढ़ महिमाउदारं। दुर्द्धर्ष दुस्तर दुर्ग
स्वर्ग अपवर्गपति भग्नसंसारपादपकुठारं ॥ शापवशमुनि
वधूमुक्तकृत विप्रहितयज्ञरक्षणदक्ष पक्षकर्ता । जनकनृप
सदसि शिवचापभंजन उग्रभार्गवागर्वगरिमापहर्त्ता॥ गुरु
गिरागौरव अमरसुदुस्त्यजराज्यत्यक्त सहित सौमित्रि
भ्राता । संग जनकात्मजामनुजमनुसृत्य अज दुष्टवधनिरत
त्रैलोक्यत्राता॥ दण्डकारण्यकृतपुण्यपावनचरण हरणमा-
रीचमायाकुरंगं । बालिबलमत्तगजराजइवकेशरी सुहृदसु-
ग्रीवदुखराशि भंगं॥ ऋक्ष मर्कट विकट सुभट उद्भट समर
शैलसंकास रिपुत्रासकारी । बद्धपाथोधि सुरनिकरमोचन
सकुलदलनदशशीशभुजबीसभारी ॥ दुष्टविबुधारि संघात
अपहरणमहिभार अवतार कारणअनूपं। अमल अनवद्य
अद्वैत निर्गुण सगुण ब्रह्मसुमिरामि नरभूपरूपं ॥ शेष श्रुति
शारदा शम्भुनारद सनक गनत गुण अन्त नहिं तत् चरित्रं।
सोइ राम कामारिप्रिय अवधपति सर्वदा दासतुलसीत्रास
निधिबहित्रं ५१ जानकीनाथ रघुनाथ रागादितमतरणि
तारुण्यतनुतेजधामं । सच्चिदानन्द आनन्दकन्दाकरं विश्व
विश्राम रामाभिरामं ॥ नीलनव वारिधरसुभगशुभकान्ति

कर पीतकौशेयवरवसनधारी। रत्न हाटक जटित मुकुट मण्डित मौलि भानुशतसदृश उद्योतकारी॥ श्रवणकुण्डल भालतिलक भ्रूरुचिर अति अरुण अम्भोजलोचनविशालं। वक्र अवलोकि त्रैलोक्यशोकापहं माररिपुहृदयमानसमरालं॥ नासिकाचारु सुकपोल द्विज वज्रद्युति अधरबिम्बोपमा मधुरहासं। कण्ठदर चिबुकवर वचनगम्भीरतर सत्यसंकल्प सुरत्रासनासं॥ सुमनसुविचित्रनवतुलसिकादल युतं मृदुलवनमाल उरभ्राजमानं। भ्रमत आमोदवश मत्त मधुकरनिकर मधुरतर मुखर कुर्वन्ति गानं॥ सुभग श्रीवत्स केयूर कंकणहार किंकिणीरटनि कटितटरसालं। वाम दिशि जनकजासीनसिंहासनं कनकमृदुवल्लिमिव तरुतमालं॥ आजानुभुजदण्डकोदण्डमण्डितवामबाहु दक्षिणपाणि बाणमेकं। अखिल मुनिनिकर सुर सिद्ध गन्धर्व वर नमत नर नाग अवनिप अनेकं॥ अनघ अविछिन्न सर्वज्ञ सर्वेश खलु सर्वतोभद्र दाताऽसमाकं। प्रणतजनखेदविच्छेदविद्यानिपुण नौमि श्रीराम सौमित्रिसाकं॥ युगल पदपद्म सुखसद्म पद्मालयं चिह्नकुलिशादिशोभातिभारी। हनुमन्त हृदि विमलकृत परममन्दिर सदा दासतुलसी शरण शोकहारी ५२ कोशलाधीश जगदीश जगदेकहित अमितगुण विपुलविस्तारलीला। गायन्ति तव चरित

सुपवित्र श्रुति शेष शुक शम्भु सनकादि मुनि मननशीला ॥ वारिचरवपुषधर भक्तनिस्तारपर धरणिकृतनाव महिमातिगुर्वी। सकलयज्ञांशमय उग्रविग्रह क्रोडमर्दिदनुजेश उद्धरण उर्वी॥कमठ अतिविकटतनु कठिनपृष्ठोपरी भ्रमत मन्दर कण्डुसुख मुरारी। प्रगटकृत अमृत गोइन्दिरा इन्दु वृन्दारकावृन्दआनन्दकारी॥ मनुज मुनि सिद्ध सुर नाग त्रासक दुष्ट दनुज द्विजधर्ममर्यादहर्त्ता। अतुलमृगराजवपुधरित विदरितअरि भक्तप्रहलादआह्लादकर्त्ता॥ छलनबलि कपट वटुरूप वामनब्रह्मभुवनपर्यन्त पदतीलकरणं। चरणनखनीर त्रैलोकपावनपरम विधिजननी दुसहशोकहरणं॥ क्षत्रियाधीशकरिनिकरवरकेशरी परशुधर विप्रससि जलदरूपं। बीसभुजदण्डदशशीशखण्डन चण्डवेगशायक नौमि रामभूपं॥ भूमिभरभारहर प्रगटपरमातमा ब्रह्मनररूपधर भक्तहेतू। वृष्णिकुलकुमुदराकेश राधारमण कंसवंशाटवीधूमकेतू॥ प्रबलपाखण्डमहिमण्डलाकुल देखि निन्द्यकृत अखिलमखकर्मजालं। शुद्धबोधैकघन ज्ञानगुणधाम अज बुद्धअवतार वन्दे कृपालं॥ कालकलिजनितमल मलिनमन सर्वनर मोहनिशिनिविडयवनान्धकारं। विष्णुयशपुत्र कल्कीदिवाकरउदितदासतुलसी हरणविपतिभारं५२सकल साभाग्यप्रद सर्वतोभद्रनिधि सर्व सर्वेश सर्वाभिरामं

शर्वहृदिकंजमकरन्दमधुकर रुचिररूप भूपालमणि नौमि रामं ॥ सर्वसुखधाम गुणग्राम विश्रामपद नामसर्वासपद मतिपुनीतं । निर्मलं शान्त सुविशुद्ध बोधायतन क्रोधमद-हरण करुणानिकेतं ॥ अजित निरुपाधि गोतीतमव्यक्त वि-भुमेकमनवद्यमजमद्वितीयं । प्राकृतं प्रगट परमातमा परम-हित प्रेरकानन्त वन्दे तुरीयं ॥ भूधरं सुन्दरं श्रीवरं मदन-मदमथन सौन्दर्यसीमातिरम्यं । दुष्प्राप्य दुष्प्रेक्ष्य दुस्तर्क दुष्पार संसारहर सुलभ मृदुभावगम्यं ॥ सत्यकृत सत्य-रत सत्यव्रत सर्वदा पुष्ट सन्तुष्ट संकष्टहारी । धर्ममणि ब्रह्म-कर्मबोधैक विप्रपूज्य ब्रह्मण्यजनप्रिय मुरारी ॥ नित्य निर्मम नित्यमुक्त निर्मान हरि ज्ञानघन सच्चिदानन्दमूलं । सर्वर-क्षक सर्वभक्षकाध्यक्ष कूटस्थ गूढार्चि भक्तानुकूलं ॥ सिद्ध-साधकसाध्य वाच्यवाचकरूपमन्त्रजापकजाप्य सृष्टिस्रष्टा । परमकारण कञ्जनाभ जलदाभतनु सगुण निर्गुण सकल-दृश्यद्रष्टा ॥ व्योमव्यापक विरज ब्रह्म वरदेश वैकुण्ठ वामन विमल ब्रह्मचारी । सिद्धवृन्दारकावृन्दवन्दित सदा खण्डि पाखण्ड निर्मूलकारी ॥ पूर्णानन्दसन्दोह अपहरण सम्मोह अज्ञानगुणसन्निपातं । वचनमनकर्मगत शरण तुलसीदास त्रासपाथोधि इव कुम्भजातं ५४ विश्वविख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्वमर्याद व्यालारिगामी । ब्रह्म वरदेश-

वागीश व्यापक विमल विपुलबलवान निर्वाणस्वामी ॥ प्रकृतिमहत्तत्त्व शब्दादि गुण देवता व्योम मरुदग्नि अमलाम्बु उर्वी। बुद्धि मन इन्द्रिय प्राण चित्तातमा काल परमाणु चिच्छक्ति गुर्वी ॥ सर्वमेवात्र त्वद्रूप भूपालमणि व्यक्तमव्यक्त गतभेदविष्णो। भुवनभवदंग कामारिवन्दित पदद्वन्द्व मन्दाकिनीजनक जिष्णो ॥ आदि मध्यान्त भगवन्त त्वं सर्वगतमीश पश्यन्ति ये ब्रह्मवादी। यथा पटतन्तु घटमृत्तिका सर्पस्रग दारुकरि कनक कटकांगदादी ॥ गूढ़गम्भीर गर्वघ्न गूढ़ार्थवित गुप्त गोतीत गुरु ज्ञान ज्ञाता। ज्ञेय ज्ञानप्रिय प्रचुरगरिमागार घोरसंसारकर पारदाता ॥ सत्यसंकल्प अतिकल्पकल्पान्तकृत कल्पनातीत अहितल्पवासी। वनजलोचन वनजनाभ वनदाभ वपु वनचरध्वज कोटिलावण्यरासी ॥ सुकर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्यसनहर दुर्गदुर्द्धर्ष दुर्गार्तिहर्ता। वेदगर्भार्भकादभ्रगुणगर्व अर्वांग परगर्वनिर्वापकर्त्ता ॥ भक्तअनुकूल भवशूलनिर्मूलकर तूलअघनामपावकसमानं। तरलतृष्णातमीतरणि धरणीधर शरणभयहरण करुणानिधानं ॥ बहुलवृन्दारुवृन्दारकावृन्दपदद्वन्द्व मन्दारमालोरधारी। पाहिमामीश संतापसंकुलसदा दासतुलसी प्रणत रावणारी ५५ संतसंतापहर विश्वविश्रामकर राम कामारि अभिरामकारी। शुद्धबोधाय

तन सच्चिदानन्दघन सज्जनानन्दवर्द्धन खरारी ॥ शीलसमताभवन विषमतामतिशमन रामरमारमन रावणारी । खड्ग कर चर्म्म वर वर्म धर रुचिर कटि तूण शर शक्ति शारंग धारी ॥ सत्यसन्धान निर्वाणप्रद सर्वहित सर्वगुण ज्ञानविज्ञानशाली । सघनतमघोरसंसारभरशर्वरी नामदिवसेशखरकिरणमाली ॥ तपनतीक्ष्ण तरुणतीव्रतापघ्न तपरूप तनुभूप तमपर तपस्वी । मानमदमदनमत्सरमनोरथमथनमोहअम्भोधिमन्दर मनस्वी ॥ वेदविख्यात वरदेश वामन बिरज विमल वागीश वैकुण्ठस्वामी । कामक्रोधादि मर्दन विवर्द्धनक्षमा शांतिविग्रह विहगराजगामी ॥ परम पावन पापपुंजमुंजाटवी अनलमिव निमिष निर्मूलकर्त्ता । भुवनभूषण दूषणारि भुवनेश भूनाथ श्रुतिमाथ जय भुवनभर्त्ता ॥ अमल अविचल अकल सकल संतप्तकलिविकलताभञ्जनानन्दरासी । उरगनायकशयन तरुणपङ्कजनयन क्षीरसागरअयन सर्ववासी ॥ सिद्धकविकोविदानन्ददायक पद द्वन्द्व मन्दात्ममनुजैर्दुरापं । यत्र संभूत अतिपूत जल सुरसरी दर्शनादेव अपहरति पापं ॥ नित्यनिर्मुक्त संयुक्तगुण निर्गुणानन्त भगवन्त नियामक नियंता । विश्वपोषणभरण विश्वकारणकरण शरण तुलसीदास त्रासहंता ५६ दनुजसूदन दयासिंधु दम्भापहन दहन दुर्दोष दुष्पापहर्त्ता ।

दुष्टतादमन दम भवन दुःखौघहर दुर्गदुर्वासना नाशकर्त्ता॥ भूरिभूषण भानुमंत भगवन्त भवभंजनाभयद भुवनेश-भारी। भावनातीत भववंद्य भवभक्तहित भूमिउद्धरण भूधरणधारी॥ वरद वनदाभ वागीश विश्वात्मा विरज वैकुंठमंदिरविहारी। व्यापकंव्योम वन्द्यांघ्रिपावन विभो ब्रह्मविद् ब्रह्म चिंतापहारी॥ सहजसुन्दर सुमुख सुमनशुभ सर्वदा शुद्ध सर्वज्ञ स्वच्छंदचारी। सर्वकृत सर्वजित सर्वभूत सर्वहित सत्यसङ्कल्प कल्पांतकारी॥ नित्य निर्मोह निर्गुण निरंजन निजानंद निर्वाण निर्वाणदाता। निर्भरानन्द निष्कंप निस्सीम निर्मुक्त निरुपाधि निर्मम विधाता॥ महामङ्गलमूल मोदमहिमायतन मुग्धमधुमथन मानद अमानी। मदनमर्दन मदातीत मायारहित मञ्जुमानाथ पाथोजपानी॥ कमललोचन कलाकोशकोदण्डधर कोशलाधीश कल्याणरासी। यातुधानप्रचुरमत्तकरिकेशरी भक्तमनपुण्यआरण्यवासी॥ अनघ अद्वैत अनवद्य अव्यक्त अज अमित अविकार आनन्दसिन्धो। अचल अनिकेत अविरल अनामय अनारम्भ अम्भोदनादघ्नबन्धो॥ दास तुलसी खेदखिन्न आपन्न इह शोकसम्पन्न अतिशयसभीतं। प्रणतपालक राम परम करुणाधाम पाहि मामुर्विपति दुर्विनीतं ५७ देहि सतसंग निज अंग श्रीरंग भवभंगकारण

शरण शोकहारी। ये तु भवदंघ्रि पल्लवसमाश्रित सदा भक्तिरत विगतसंशय मुरारी॥ असुर सुर नाग नर यक्ष गन्धर्व खग रजनिचर सिद्ध ये चापि अन्ने। सन्तसंसर्ग त्रैवर्ग्गपरपरमपद प्राप निष्प्राप्यगति त्वयि प्रसन्ने॥ वृत्र बलि बाण प्रहलाद मय व्याघ्र गज गृध्र द्विजबन्धु निजधर्म त्यागी। साधुपदसलिल निर्धूत कल्मषसकल श्वपच यवनादि कैवल्यभागी॥ शांत निरपेक्ष निर्मम निरामय अगुण शब्दब्रह्मैक परब्रह्मज्ञानी। दक्ष समदृकस्वदृक विगत अतिस्वपरमति परमरति विरत तव चक्रपानी॥ विश्वउपकारहित व्यग्रचित सर्वदा त्यक्तमदमन्यु कृतपुण्यरासी। यत्र तिष्ठन्ति तत्रैव अज शर्व हरि सहित गच्छन्ति क्षीराब्धिवासी॥ वेदपयसिन्धुसुविचारमन्दरमहा अखिल मुनिवृन्द निर्मथनकर्त्ता। सार सतसङ्गमुद्धृत्य इति निश्चितं वदति श्रीकृष्ण वदर्भिभर्त्ता॥ शोक सन्देह भय हर्ष तम तर्षगण साधु सद्युक्ति विच्छेदकारी। यथा रघुनाथ शायक निशाचरचमू निचय निर्दलनपटु वेगभारी॥ यत्र कुत्रापि मम जन्म निजकर्मवश भ्रमत जग योनि सङ्कटअनेकं। तत्र त्वद्भक्ति सज्जनसमागम सदा भवतु मे राम विश्राममेकं॥ प्रबल भवजनित त्रैव्याधि भेषज भक्तिभक्त भैषज्यमद्वैतदरसी। सन्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं किमपि

मति मलिन कह दासतुलसी ५८ देहि अवलम्ब करकमल कमलारमन दमनदुख शमनसंतापभारी। अज्ञानराकेशग्रासनविधुंतुद दलनगर्वकामकरिमत्त हरि दूषणारी॥ वपुष ब्रह्माण्ड सुप्रवृत्तिलङ्कादुर्ग रचितमनदनुजमयरूपधारी। विविधकोशौघ अतिरुचिर मन्दिरनिकर सत्त्वगुणप्रमुखत्रैकटककारी॥ कुनपअभिमान सागरभयङ्करघोर विपुल अवगाह दुस्तर अपारं। नक्र रागादि संकुल मनोरथ सकल संगसंकल्प वीचीविकारं॥ मोहदशमौलि तद्भ्रातहंकार पाकारिजितकाम विश्रामहारी। लोभअतिकाय मत्सर महोदरदुष्ट क्रोधपापिष्ठविबुधान्तकारी॥ द्वेषदुर्मुख दम्भ खर अकम्पनकपट दर्पमनुजाद मदशूलपानी। अमितबल परमदुर्ज्जय निशाचरनिकर सहितषड्वर्ग गोयातुधानी॥ जीव भवदंघ्रिसेवक विभीषण बसतमध्यदुष्टाटवी ग्रसित चिंता। नियम यम सकल सुरलोगलोकेश लंकेशवश नाथ अत्यंतभीता॥ ज्ञानअवधेशगृह गेहिनीभक्तिशुभ तत्र अवतार भूभारहर्त्ता। भक्तसंकष्टमवलोक्य पितुवाक्यकृत गहनकियगमन वैदेहिभर्त्ता॥ कैवल्यसाधन अखिल भालु मर्कटविपुल ज्ञानसुग्रीव कृतजलधिसेतू। प्रबलवैराग्य दारुणप्रभंजनतनय विषयवनदहनमिव धूमकेतू॥ दुष्ट दनुजेश निर्वंशकृत दासहित विश्वदुखहरण बोधैकरासी।

अनुज निज जानकी सहित हरि सर्वदा दासतुलसीहृदयक-
मलवासी ॥५६॥ दीनउद्धरण रघुवर्य्यकरुणाभवन शमनसन्ताप
पापौघहारी । विमलविज्ञानविग्रह अनुग्रहरूप भूपवर वि-
बुधनर्मद खरारी ॥ संसारकान्तार अतिघोर गम्भीरघन
गहनतरुकर्मसंकुल मुरारी । वासनाबल्लिखरकण्टकाकुल
विपुल निविडविटपाटवी कठिन भारी ॥ विविधचित्तवृत्ति
खगनिकर सेनोलूक काक बक गृध्रआमिषअहारी । अखिल
खल निपुण छल छिद्र निरखत सदा जीवजनपथिकमन
खेदकारी ॥ क्रोधकरिमत्त मृगराजकन्दर्प मददर्पवृकभालु
अतिउग्रकर्म्मा । महिषमत्सरक्रूर लोभशूकररूप फेरुछल
दम्भमार्जारधर्म्मा ॥ कपटमर्कट विकटव्याघ्रपाखण्ड मुख
दुखद मृगव्रात उत्पातकर्त्ता । हृदय अवलोकि यह शोक
शरणागतं पाहि मां पाहि भो विश्वभर्त्ता ॥ प्रबल अहङ्कार
दुर्घटमहीधर महामोहगिरिगुहा निविडांधकारं । चित्तव-
ताल मनुजादमन प्रेतगणरोग भोगौघवृश्चिकविकारं ॥
विषयसुखलालसा दंशमशकादि खल झिल्लिरूपादि सब
सर्प स्वामी । तत्र आक्षिप्त तव विषममायानाथ अन्ध मैं
मन्द व्यालादगामी ॥ घोर अवगाह भवआपगा पापजलपूर
दुष्प्रेक्ष दुस्तर अपारा । मकरषड्वर्ग गोनक्रचक्राकुला कूल
शुभ अशुभ दुखतीव्रधारा ॥ सकलसंघटपोच शोचवश

सर्वदा दासतुलसी विषमगहनग्रस्तं। त्राहि रघुवंशभूषण कृपाकर कठिनकाल विकराल कलित्रासत्रस्तं ६० नौमि नारायणं नरं करुणायनं ध्यानपारायणं ज्ञानमूलं। अखिल संसारउपकारकारण सदयहृदय तपनिरत प्रणतानुकूलं॥ श्यामनवतामरसदामद्युतिवपुष छविकोटिमदनार्कअगणित प्रकासं। तरुणरमणीयराजीवलोचनललित वदनराकेश करनिकरहासं॥ सकलसौन्दर्यनिधि विपुलगुणधाम विधि वेदबुधशम्भुसेवितअमानं। अरुणपदकंजमकरन्दमन्दाकिनी मधुपमुनिवृन्दकुर्वन्ति पानं। शक्रप्रेरित घोरमारमदभंगकृत क्रोधगत बोधरत ब्रह्मचारी। मारकण्डेय मुनिवर्य हित कौतुकी बिनहिं कल्पान्त प्रभु प्रलयकारी॥ पुण्य वन शैल सरि बद्रिकाश्रम सदासीनपद्मासनं एकरूपं। सिद्ध योगीन्द्र वृन्दारकानन्दप्रद भद्रदायक दरश अतिअनूपं॥ मान मन भंग चित भंग मद क्रोध लोभादि पर्वत दुर्ग भुवनभर्त्ता॥ द्वेष मत्सर राग प्रबल प्रत्यूह प्रति भूरिनिर्दयक्रूरकर्मकर्त्ता। विकटतर वक्र क्षुरधारप्रमदातीव्र दर्पकंदर्प गरखड्गधारा। धीरगम्भीरमनपीरकारक तत्र के वराका वयं विगतसारा॥ परमदुर्घटपंथ खलअसंगतसाथ नाथ नहिं हाथ वरविरति यष्टी। दर्शनारत दास त्रसित मायापास त्राहि हरि त्राहि हर दासकष्टी॥ दासतुलसी दीन धर्मसम्बलहीन अमित

अतिखेदमतिमोहनाशी। देहि अवलम्ब न विलम्ब अम्भोज कर चक्रधर तेजबलशर्मराशी ६१ सकलसुखकन्द आनन्द वन पुण्यकृत बिंदुमाधव द्वंद्वविपतिहारी। यस्यांघ्रिपाथोज अजशम्भु सनकादिशुकशेषमुनिवृंदअलिनिलयकारी॥ अमलमरकतश्याम कामशतकोटिछवि पीतपटतडितइव जलदनालं। अरुणशतपत्रलोचन विलोकनि चारु प्रणतजन सुखद करुणाद्रशीलं॥ कालगजराजमृगराज दनुजेशवन दहन पावक मोहनिशि दिनेसं। चारिभुज चक्र कौमोदकी जलज दर सरसिजोपरि यथा राजहंसं॥ मुकुट कुण्डल तिलक अलकअलिव्रात इव भृकुटि द्विज अधर दर चारु नासा। रुचिरसुकपोल दरग्राव सुखसीव हरि इन्दुकरकुन्दमिव मधुरहासा॥ उरसि वनमाल सुविशाल नवमञ्जरी भ्राज श्रीवत्सलाञ्छन उदारं। परमब्रह्मण्य अति धन्य गत मन्यु अज अमितबल विपुलमहिमा अपारं॥ हार केयूर कर कनककंकण रतनजटित मणिमेखला कटि प्रदेशं। युगलपदनूपुरामुखर कलहंसवत सुभगसर्वांग सौन्दर्यवेशं॥ सकलसौभाग्य संयुक्त त्रैलोक्यश्री दक्षदिशि रुचिर वारीशकन्या। वसत विबुधापगा निकट तटसदनपर नयन निरखन्ति नर तेऽतिधन्या॥ अखिलमंगलभवन निबिडसंशयशमन दमनवृजिनाटवी कष्टहर्त्ता। विश्वधृत विश्वहित

अजित गोतीत शिव विश्वपालनहरण विश्वकर्त्ता ॥ ज्ञान विज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य निधि सिद्धि अणिमादिदे भूरिदानं। ग्रसित भवव्याल अतित्रास तुलसीदास त्राहि श्रीराम उरगारियानं ६२ ॥

राग आसावरी ।

इहै परमफल परमबड़ाई ।
नखशिखरुचिर बिन्दुमाधव छवि निरखहिं नयनअघाई ॥
विशद किशोर पान सुन्दर वपु श्याम सुरुचि अधिकाई ।
नीलकंज वारिद तमाल मणि इन्ह तनु ते द्युति पाई ॥
मृदुलचरण शुभचिह्न पदज नख अति अद्भुत उपमाई ।
अरुण नील पाथोज प्रसव जनु मणियुत दल समुदाई ॥
जातरूप मणि जटित मनोहर नूपुर जन सुखदाई ।
जनु हर उर हरि विविध रूपधरि रहे वरभवन बनाई ॥
कटितट रटति चारु किंकिणिरव अनुपम वरणि न जाई ।
हेमजलज कलकलिन मध्य जनु मधुकरमुखर सोहाई ॥
उरविशाल भृगुचरण चारु अति सूचत कोमलताई ।
कंकण-चारु विविध भूषण विधि रचि निजकर मनलाई ॥
गजमणिमाल बीच भ्राजत कहिजात न पदिक निकाई ।
जनु उडुगणमण्डल वारिदपर नवग्रह रची अथाई ॥
भुजगभोग भुजदण्ड कज दर चक्र गदा बनिआई ।

शोभासीव ग्रीव चिबुकाधर वदन अमितछवि छाई ॥
कुलिश कुन्द कुड्मल दामिनिद्युति दशनन देखि लजाई ।
नासा नयन कपोल ललित श्रुति कुण्डल भ्रू मोहिं भाई ॥
कुञ्चित कच शिर मुकुट भाल पर तिलक कहौं समुझाई ।
अलप तड़ित युगरेख इन्दुमहँ रहि तजि चंचलताई ॥
निर्मल पीत दुकूल अनूपम उपमा हिय न समाई ।
बहु मणि युत गिरिनील शिखरपर कनकवसन रुचिराई ॥
दक्षभाग अनुराग सहित इन्दिरा अधिक ललिताई ।
हेमलता जनु तरुनमाल ढिग नीलनिचोल उढ़ाई ॥
शत शारदा शेष श्रुति मिलि करि शोभा कहि न सिराई ।
तुलसिदास मतिमन्द द्वन्द्वरत कहै कौनविधि गाई ६३ ॥

राग जैतश्री ।

मन इतनोई या तनु को परमफल । सब अँग सुभग बिन्दुमाधव छवि तजि स्वभाव अवलोकु एकपल ॥ तरुण अरुण अम्भोज चरण मृदु नखद्युति हृदयतिमिरहारी । कुलिश केतु यव जलज रेखवर अंकुश मनगज वशकारी ॥ कनकजटित मणि नूपुर मेखल कटितट रटति मधुरबानी । त्रिवलीउदर गँभीर नाभिसर जहँ उपजे विरञ्चि ज्ञानी ॥ उर वनमाल पदिक अतिशोभित विप्रचरण चित कहँ करषै । श्यामतामरसदामवरणवपु पीतवसन शोभा वरषै ॥

कर कंकण केयूर मनोहर देति मोद मुद्रिक न्यारी । गदा कंज दर चारु चक्रधर नागशुण्डसम भुजचारी ॥ कम्बुग्रीव छविसीव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नतनासा । नवराजीव नयन शशिआनन सेवकसुखद विशदहासा ॥ रुचिर कपोल श्रवणकुण्डल शिरमुकुट सुतिलकभाल भ्राजै । ललितभृकुटि सुन्दरचितवनि कच निरखि मधुपअवली लाजै ॥ रूप शील गुण खानि दक्षदिशि सिंधुसुता रत पदसेवा । जाकी कृपाकटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुज दनुज देवा ॥ तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यहि स्वरूप अटकै । नाहिंत दीन मलीन हीनसुख कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भटकै ६४ ॥

राग वसन्त ।

वन्दौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटै भवभेद ज्ञान ॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रदनिशेश । सेवित पदपंकज अज महेश ॥ निजभक्तहृदयपाथोज भृङ्ग । लावण्यवपुष अगणित अनङ्ग ॥ अतिप्रबल मोहतम मारतण्ड । अज्ञानगहन पावकप्रचण्ड ॥ अभिमानसिन्धु कुम्भजउदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादि सर्पगण पन्नगारि । कन्दर्पनाग मृगपति मुरारि ॥ भवजलधि पोत चरणारविन्द । जानकीरमण आनन्दकन्द ॥ हनुमंत प्रेमवापी मराल । निष्काम कामधुक

गो दयाल ॥ त्रैलोक्यतिलक गुणगहन राम। कह तुल-
सिदास विश्रामधाम ६५ ॥

राग भैरव।

राम राम रमु राम राम जपु राम राम रटु जीहा।
रामनाम नवनेह मेह को मन हठि होहि पपीहा॥
सब साधन फल कूप सरित सर सागर सलिल निरासा।
राम नाम रति स्वातिसुधाशुभ सीकर प्रेमपियासा॥
गरजि तरजि पाषाण वरषि पवि प्रीतिपरखि जियजानै।
अधिक अधिक अनुराग उमँगउर पर परमित पहिचानै॥
रामनामगात रामनाममति रामनाम अनुरागी।
ह्वैगये हैं जे होहिंगे त्रिभुवन तेइ गनियत बड़भागी॥
एकअंग मगअगम गवनकरि बिलँबु न छिन छिन छाहैं।
तुलसी हित अपनो अपनी दिशि निरुपधि नेम निबाहै ६६॥

राम जपु रामजपु राम जपु बावरे।
घोरभवनीरनिधि नाम निज नाव रे॥
एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धिसाधि रे।
ग्रसे कलि रोग योग संयम समाधि रे॥
भलोजो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे।
राम नामही सों अन्त सबही को काम रे॥
जग नभवाटिका रही है फलि फूलि रे।

धूमा कैसो धौरहर देखि तू न भूलि रे ॥
रामनाम छांड़ि जो भरोसो करै आर रे।
तुलसी परोसो त्यागि मांगै कूर कौर रे ६७॥
रामनाम जपु जिय सदा सानुराग रे।
कलि न विराग योग याग तप त्याग रे॥
राम सुमिरन सब विधिही को राज रे।
राम को बिसारिबो निषेध शिरताज रे॥
रामनाम महामणि फणिजगजाल रे।
मणिलिये फणिजिये व्याकुल विहाल रे॥
रामनाम कामतरु देत फल चारि रे।
कहत पुराण वेद पण्डित पुरारि रे॥
रामनाम प्रेम परमारथ को सार रे।
रामनाम तुलसी को जीवन अधार रे ६८॥
राम राम राम जीह जौलौं तू न जपि है।
तौलौं तू कहूंही जाय तिहूंताप तपि है॥
सुरसरितीर बिनु नीर दुख पाइ है।
सुरतरुतर तोहिं दुख दारिद सताइ है॥
जागत वागत सुख सपने न सोइ है।
जनम जनम युग युग जग रोइ है॥
छूटिबे यतन विशेषबांध्यो जायगो।

ह्वैहै विष भोजन जो सुधासानि खायगो॥
तुलसी बिलोक तिहूं काल तोसे दीन को।
रामनामहीं की गति जैसे जल मीन को ६९॥
सुमिर सनेह सों तू नाम रामराय को।
संबर निसंबर को सखा असहाय को॥
भाग है अभागहू को गुण गुणहीन को।
गाहक गरीब को दयालु दानि दीन को॥
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साखि है।
पांगुरको हाथपांय आंधरे को आंखि है॥
माय बाप भूखे को अधार निराधार को।
सेतु भवसागर को हेतु सुखसार को॥
पतितपावन राम नाम सों न दूसरो।
सुमिरिसुभूमि भयो तुलसीसो ऊषरो ७०॥
भलो भलीभांतिहै जो मेरे कहे लागि है।
मन रामनामसों सुभाव अनुरागि है॥
रामनाम को प्रभाव जान जूड़ी आगि है।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है॥
रामनाम सों बिराग योग जप जागि है।
वामबिधि भालहून कर्मदाग दागि है॥
रामनाममोदक सनेहसुधा पागि है।

पाइ परितोष तू न द्वार द्वार बागिहै॥
कामतरु रामनाम जोइ जोइ मांगिहै।
तुलसिदासस्वारथ परमारथ न खांगिहै७१॥
ऐसेऊ साहब की सेवा सों होत चोर रे।
अपनी न बूझ न कहै को राड़रोर रे॥
मुनिमन अगम सुगम माय बाप सो।
कृपासिंधु सहज सखा सनेही आप सो॥
लोक वेद विदित बड़ो न रघुनाथ सो।
सब दिन सब देश सबही के साथ सो॥
स्वामी सर्वज्ञ सों चलै न चोरी चार की।
प्रीति पहिंचानि यह रीति दरबार की॥
काय न कलेश लेश लेत मान मन की।
सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जन की॥
रीझै वश होत खीझै देत निज धाम रे।
फलत सकल फल कामतरु नाम रे॥
बेंचै खोटो दाम न मिलै न राखै काम रे।
सोऊ तुलसीनिवाज्योऐसोराजारामरे७२॥
मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई।
हौंतो सांई द्रोही पै सेवक हित सांई॥
रामसों बड़ो है कौन मोसों कौन छोटो।

रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥
लोक कहै रामको गुलाम हौं कहावो।
एतो बड़ो अपराध भौ न मन बावों ॥
पाथ माथे चढ़ै तृण तुलसी जो नीचो।
बोरत न वारि ताहि जानि आपसींचो ७३॥
जागु जागु जीव जड़ जोहै जगयामिनी।
देह गेह नेह जान जैसे घनदामिनी ॥
सोवत सपने सहै संसृत संताप रे।
बूड़्यो मृगवारि खायो जेवरी को सांप रे ॥
कहै वेद बुध तू तो बूझ मन माहिं रे।
दोष दुख सपने के जागेही पै जाहिं रे ॥
तुलसी जागेते जाइ ताप तिहूं ताय रे।
रामनाम शुचि रुचि सहज सुभाय रे ७४ ॥

राग विभास।

जानकीश की कृपा जगावती सुजान जाव जागि त्यागि मूढ़तानुराग श्रीहरे। करि विचार तजि विकार भजि उदार रामचन्द्र भद्रसिंधु दीनबंधु वेद विदितरे ॥ मोहमाय कुहूनिशा विशाल काल विपुल व्याल सोयो खायो सो अनूप रूप स्वप्न जो परे। अब प्रभात प्रकट ज्ञान भानु के प्रकाश वास नाश रोग मोह द्वेष निविडतम टरे॥ भागे मद

मान चोर भोर जानि यातुधान काम क्रोध लोभ क्षोभ निकर अपडरे। देखत रघुवरप्रताप बीते सन्तापपाप ताप त्रिविध प्रेम आप दूरही करे ॥ श्रवण सुनि गिरागँभीर जागे अति धीरवीर वर विराग तोष सकल सन्त आदरे। तुलसिदास प्रभु कृपाल निरखि जीवजन विहाल भंज्यो भवजाल परममंगलाचरे ७५ ॥

राग ललित।

खोटो खरो रावरो हौं रावरे सों झूठो क्यों कहौंगो जानौ सबहीके मन की। करम वचन हिये कहौं न कपट किये ऐसी हठ जैसी गाँठि पानी परे सन की ॥ दूसरो भरोसो नाहिं वासना उपासना की वासव विरञ्चि सुर नर मुनिगन की। स्वारथ के साथी मेरे हाथी श्वान लेवा देई काहू तो न पीर रघुवीर दीन जन की ॥ सांप सभा साबर लबार भये देव दिव्य दुसह सांसति कीजै आगेही या तन की। सांचे परौं पावों पान पञ्चन में प्रणप्रमाण तुलसी चातक आश रामश्यामघन की ७६ ॥

राम के गुलाम नाम रामबोला राख्यो राम काम यहै नाम द्वै हौं कबहूं कहत हौं। रोटी लूंगा नीके राखै आगेहू की वेद भाखै भलो है है तेरो ताते आनँद लहत हौं ॥ बांध्यो हौं करम जड़ गर्व गूढ़ निगड़े सुनत दुसह हौं तो

सांसति सहत हौं। आरत अनाथ नाथ कोशल कृपाल पाल लीन्हों छीन दीन देख्यो दुरित दहत हौं॥ बूझ्यो ज्योंहीं कह्यो मैंहूं चेरो ह्वै हौं रावरोजू मेरो कोऊ कहूं नाहिं चरण गहत हौं। मींजो गुरुपीठ अपनाई गहि बांह बोलि सेवक सुखद सदा बिरद बहत हौं॥ लोग कहैं पोच सो न शोच न सँकोच मेरे ब्याह न बरेखी जाति पांति न चहत हौं। तुलसी अकाज काज रामही से रीझै खीझै प्रीति की प्रतीति मन मुदित रहतहौं ७७॥

जानकी जीवन जगजीवन जगतहित जगदीश रघुनाथ राजीवलोचन राम। शरदविधुवदन सुखशील श्रीसदन सहज सुन्दरतनु शोभा अगणित काम॥ जगसुपिता सुमातु सुगुरु सुहित सुमीत सबको दाहिनो दीनबन्धु काहू को न वाम। आरतहरण शरणद अतुलितदानि प्रणतपाल कृपालु पतितपावन नाम॥ सकल विश्ववन्दित सकलसुरसेवित आगम निगम कहैं रावरेई गुणग्राम। इहै जानि कै तुलसी तिहारोजनभयो न्यारो कै न गनिबो जहां गने गरीबगुलाम ७८॥

राग टोड़ी।

दीन को दयालु दानि दूसरो न कोऊ।
जाहि दीनता कहौं हौं दीन देखौं सोऊ॥

सुर मुनि नर नाग असुर साहब तौ घनेरे ।
पै तौलौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे ॥
त्रिभुवन तिहुँकाल विदित वदत वेद चारी ।
आदि अंत मध्य राम साहबी तिहारी ॥
तोहिं मांगि मांगनो न मांगनो कहायो ।
सुनि स्वभाव शील सुयश याचन जन आयो॥
पाहन पशु विटप विहँग अपने कर लीन्हें ।
महाराज दशरथ के रंक राव कीन्हें ॥
तू गरीब को निवाज हौं ग़रीब तेरो ।
बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो ७९ ॥
तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुंजहारी ॥
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसों ।
मों समान आरत नहिं आरतहर तोसों ॥
ब्रह्म तू हौं जीव हौं तू ठाकुर हौं चेरो ।
तात मात गुरु सखा तू सब विधि हित मेरो॥
तोहिं मोहिं नातो अनेक मानिये जो भावै ।
ज्योंत्यों तुलसी कृपालु चरणशरण पावै ८० ॥
और काहि मांगिये को मांगिबो निवारै ।
अभिमतदातार कौन दुख दरिद्र दारै ॥

धर्म धाम राम काम कोटिरूप रूरो।
साहब सब विधि सुजान दान खड्ग शूरो॥
सुसमय दिनद्वै निशान सबके द्वार बाजै।
कुसमय दशरथ के दानि तैं गरीबनिवाजै॥
सेवा बिन गुणविहीन दीनता सुनाये।
जे जे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये॥
तुलसिदास याचत रुचि जानि दान दीजै।
रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजै ८१॥

राग भैरव।

दीनबन्धु सुख सिन्धु कृपाकर कारुणीक रघुराई।
सुनहु नाथ मन जरत त्रिविधज्वर करत फिरत बौराई॥
कबहु योगरत भोगनिरत शठ हठ वियोगवश होई।
कबहुँ मोहवश द्रोह करत बहु कबहुँ दया अति सोई॥
कबहुँ दान मति हीन रंकरत कबहुँ भूप अभिमानी।
कबहुँ मूढ़ पण्डित विडम्बरत कबहुँ धर्मरत ज्ञानी॥
कबहुँ देख जग धनमय रिपुमय कबहुँ नारिमय भासै।
संसृत सन्निपात दारुणदुख बिनु हरिकृपा न नासै॥
संयम जप तप नेम धर्म व्रत बहु भेषज समुदाई।
तुलसिदास भव रोग रामपद प्रेमहीन नहिं जाई ८२॥
मोहजनित मल लाग विविधविधि कोटिहु यतन न जाई।

जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥
नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागै।
हृदयमलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागै ॥
परनिंदा सुनि श्रवण मलिनभे वचन दोष पर गाये।
सब प्रकार मलभार लागं निज नाथ चरण बिसराये॥
तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्ध हेतु श्रुति गावै।
रामचरण अनुरागनीर बिनु मल अतिनाश न पावै ८३ ॥

राग जैतश्री ।

कछु है न आय गयो जन्म जाय। अति दुर्लभ तनु पाय कपट तजि भजे न राम मन वचन काय ॥ लरिकाई बीती अचेत चित चञ्चलता चौगुनी चाय। यौवनज्वर युवती कुपथ्यकरि भयो त्रिदोष भरि मदनवाय ॥ मध्य वयस धनहेतु गँवाई कृषी बनिज नाना उपाय। राम विमुख सुख लह्यो न सपनेहुँ निशि वासर तपो तिहूं ताय ॥ सेये नहिं सीतापतिसेवक साधु सुमति भलि भक्ति भाय। सुने न पुलकि तन कहे न मुदित मन किये जे चरित रघुवंशराय ॥ अब शोचत मणि बिनु भुजङ्ग ज्यों विकलअंग दले जरा धाय। शिर धुनि धुनि पछितात मींजि कर कोउ न मीत हित दुसहदाय॥ जिन्हलगि निजपरलोक बिगाख्यो ते लजात होत ठाढ़ ठाँय। तुलसी

अजहुँ सुमिरु रघुनाथहि तस्यो गयन्द जाके एक नायद८४॥

तौ तू पछितैहै मन मींजि हाथ । भयो है सुगम तोको अमरअगम तनु समुझिधौं कत खोवत अकाथ ॥ सुखसाधन हरिविमुख वृथा जैसे श्रम फल घृतहित मथे पाथ । यह विचारि तजि कुपथ कुसङ्गति चलि सुपन्थ मिलि भले साथ॥ देखु रामसेवक सुनि कीरति रटहि नाम करि गान गाथ । हृदय आनु धनुबाणपाणि प्रभु लसे मुनिपट कटि कसे भाथ ॥ तुलसिदास परिहरि प्रपञ्च सब नाउ रामपदकमल माथ । जनि डरपहि तोसे अनेक खल अपनाये जानकीनाथ ८५ ॥

राग धनाश्री ।

मन माधव को नेकु निहारहि ।
सुनु शठ सदा रङ्क के धन ज्यों क्षण क्षण प्रभुहि सँभारहि॥
शोभाशील ज्ञानगुणमन्दिर सुन्दर परमउदारहि ।
रञ्जनसन्त अखिलअघगञ्जन भञ्जन विषयविकारहि ॥
जो बिन योग ज्ञान व्रत संयम गयो चहहि भवपारहि ।
तौ जनि तुलसिदास निशिवासर हरिपदकमलबिसारहि८६

इहै कह्यो सुत वेद चहूं ।
श्रीरघुवीरचरण चिन्तन तजि नाहिंन ठौर कहूं ॥
जाके चरण विरञ्चि सेइ सिधि पाई शङ्कर हूं ।

शुक सनकादि मुक्त बिचरत तेउ भजन करत अजहूं ॥
यद्यपि परम चपल श्री सन्तत थिर न रहति कतहूं ।
हरिपदपङ्कज पाइ अचल भइ कर्म वचन मनहूं ॥
करुणासिन्धु भक्तचिन्तामणि शोभा सेवत हूं ।
और सकल सुर असुर ईश सब खाये उरग छहूं ॥
सुरुचि कह्यो सोइ सत्य तात अति परुष वचन जबहूं ।
तुलसिदास रघुनाथविमुख नहिं मिटै विपति कबहूं ८७ ॥
सुनु मन मूढ़ सिखावन मेरो ।
हरिपदविमुख काहू न लह्यो सुख शठ यह समुझ सबेरो ॥
बिछुरे शशि रवि मन नयनन ते पावत दुख बहुतेरो ।
भ्रमत श्रमित निशि दिवस गगन महँ तहँ रिपुराहु बड़ेरो ॥
यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो ।
तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो ॥
छुटै न विपति भजे बिनु रघुपति श्रुति संदेह निबेरो ।
तुलसिदास सब आस छांड़िकरि होहु रामकर चेरो ८८ ॥
कबहूं मन विश्राम न मान्यो ।
निशि दिन भ्रमत बिसारि सहजसुखजहँतहँ इन्द्रिनतान्यो ॥
यदपि विषय सँग सहै दुसहदुख विषयजाल अरुझान्यो ।
तदपि न तजत मूढ़ ममतावश जानतहू नहिं जान्यो ॥
जन्म अनेक किये नानाविधि कर्मकीच चित सान्यो ।

होइ न विमल विवेक नीर बिनु वेद पुराण बखान्यो॥
निज हित नाथ पिता गुरु हरिसों हरषि हृदय नहिं आन्यो।
तुलसिदास कब तृषा जाय सर खनतहि जन्म सिरान्यो॥८९॥

मेरो मन हरिजू हठ न तजै।

निशि दिन नाथ देउँ सिख बहु विधि करत स्वभाव निजै॥
ज्यों युवती अनुभवति प्रसव अति दारुण दुख उपजै।
है अनुकूल बिसारि शूल शठ पुनि खल पतिहि भजै॥
लोलुप भ्रमत गृहपशु ज्यों जहँ तहँ शिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै॥
हा हारयो करि यतन विविध विधि अतिशय प्रबल अजै।
तुलसिदास वश होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ९०॥

ऐसी मूढ़ता या मन की।

परिहरि रामभक्ति सुरसरिता आश करत ओसकन की॥
धूमसमूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घनकी।
नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की॥
ज्यों गच कांच बिलोकि सेन जड़ छांह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार वश छति बिसारि आनन की॥
कहँलौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहौ गति जन की।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निजपन की९१॥

नाचतहौ निशि दिवस मखो।
तबहीं ते न भयो हरि थिर जबते जिव नाम धखो॥
बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भखो।
चर अरु अचर गगन जल थल में कौन स्वांग न कखो॥
देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याचत कोउ उबखो।
मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तौ न हखो॥
थके नयन पद पाणि सुमति बल संग सकल बिछुखो।
अब रघुनाथ शरण आयो जन भवभय विकल डखो॥
जेहि गुण ते वश होहु रीझि कर सो मोहिं सब बिसखो।
तुलसिदास निजभवनद्वार प्रभु दीजै रहन पखो ९२॥
माधवजू मोसम मन्द न कोऊ।
यद्यपि मीन पतंग हीनमति मोहिं नहिं पूजहिं ओऊ॥
रुचिर रूप आहार वश्य उन्ह पावक लोह न जान्यो।
देखत विपति विषय न तजतहौं ताते अधिक अयान्यो॥
महामोह सरिता अपार महँ सन्तत फिरत बह्यो।
श्री हरिचरणकमल नौका तजि फिरि फिरि फेन गह्यो॥
अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भरिमुख पकरयो।
निज तालूगत रुधिर पानकरि मन संतोष धखो॥
परमकठिन भवव्याल ग्रासत हौं त्रसित भयो अति भारी।
चाहत अभय भेक शरणागत खगपतिनाथ बिसारी॥

जलचरवृन्द जालअन्तरगत होत सिमिटि यकपासा।
एकहि एक खात लालच वश नहिं देखत निज नासा॥
मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै।
तुलसीदास पतितपावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ६३॥
कृपा सो धौं कहां बिसारी राम।
जेहि करुणा सुनि श्रवण दीन दुख धावत हौ तजि धाम॥
नागराज निजबल विचारि हिय हारि चरण चित दीन्ह।
आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलम्ब न कीन्ह॥
दितिसुतत्रासत्रासित निशि दिन प्रहलाद प्रतिज्ञा राखी।
अतुलित बल मृगराजमनुजतनु दनुज हत्यो श्रुति साखी॥
भूपसदसि सब नृप विलोकि प्रभु राखु कह्यो नर नारी।
वसनपूरि अरिदर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी॥
एक एकते रिपु त्रासत जन तुम राखे रघुवीर।
अब मोहिं देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भवपीर॥
लोभग्राह दनुजेशक्रोध कुरुराज बन्धु खल मार।
तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार ६४॥
काहेते हरि मोहिं बिसारो।
जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ सभारो॥
पतित पुनीत दीनहित अशरणशरण कहत श्रुति चारो।
हौं नहिं अधम सभीत दीन किधौं वेदन मृषा पुकारो॥

खग गणिका गज व्याध पांति जह तहँ हौंहूं बैठारो।
अब कहि लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो॥
जो कलिकाल प्रबल अति होतो तुव निदेश ते न्यारो।
तौ हरि रोष भरोस दोष गुण तेहि भजते तजि गारो॥
मशक विरंचि विरंचि मशक सम करहु प्रभाव तुम्हारो।
यह सामर्थ्य अछत म्वाह त्यागहु नाथ तहां कछु चारो॥
नाहिंन नरक परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अतिहारो।
यह बड़ित्रास दासतुलसी प्रभु नामहु पाप न जारो ६५॥
तउ न मेरे अघ अवगुण गनि हैं।
जो यमराज काज सब परिहारे यहौ ख्याल उर अनिहैं॥
चलि हैं छूटि पुञ्जपापिन्ह के असमंजस जिय जनिहैं।
देखि खलल अधिकार प्रभू सों मेरी भूरि भलाई भनिहैं॥
हँसि करि हैं परतीति भक्त की भक्तशिरोमणि मनिहैं।
ज्यों त्यों तुलसिदास कोशलपति अपनायहिपर बनिहैं ६६॥
जो पै जिय धरिहौ अवगुण जन के।
तौ क्यों कटत सुकृत नख ते मोपै विपुलवृन्दअघ वन के॥
कहिहै कान कलुष मेरे कृत कर्म वचन अरु मन के।
हारहिं अमित शेष शारद श्रुति गिनत एक इक छन के॥
जो चित चढ़ै नाममहिमा निज गुणगण पावनपन के।
तौ तुलसिहि तारिहौ विप्र ज्यों दशन तोरि यमगन के ६७॥

जो पै हरि जन के अवगुण गहते ।
तौ सुरपति कुरुराज बालि सों कत हठि वर बिसहते ॥
जो जप यज्ञ योग व्रत वर्जित केवल प्रेम न चहते ।
तौ कत सुर मुनिवर विहाय व्रज गोपगेह बसि रहते ॥
जो जहँ तहँ प्रण राखि भक्त को भजन प्रभाव न कहते ।
तौ कलि कठिन कर्म मारग जड़ हम केहि भांति निबहते ॥
जो सुतहित लिय नाम अजामिल के अघ अमित न दहते ।
तौ यमभटसांसतिहर हमसे वृषभ खोजि खोजि नहते ॥
जो जग विदित पतितपावन अतिबांकुर विरद न बहते ।
तौ बहुकल्प कुटिल तुलसी से सपनेहु सुगति न लहते ९८ ॥
ऐसी हरि करत दास पर प्रीति ।
निज प्रभुता बिसारि जनके वश होत सदा यह रीति ॥
जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबलकर्म की डोरि ।
सोइ अविछिन्न ब्रह्म यशुमति हठि बांध्यो सकत न छोरि ॥
जाकी मायावश विरंचि शिव नाचत पार न पायो ।
करतलताल बजाइ ग्वालयुवतिन्ह सोइ नाच नचायो ॥
विश्वम्भर श्रीपति त्रिभुवनपति वेदविदित यह लीख ।
बलि सों कछु न चली प्रभुता बरु है द्विज मांगी भीख ॥
जाको नाम लिये छूटत भवजन्ममरण दुखभार ।
अम्बरीष हित लागि कृपानिधि सोइ जनमे दश बार ॥

योग विराग ध्यान जप तप करि जेहि खोजत मुनि ज्ञानी ।
वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥
लोकपाल यम काल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी ।
तुलसिदास प्रभु उग्रसेन के द्वार बेंत करधारी ९९ ॥
विरद गरीबनिवाज रामको ।
गावत वेद पुराण शम्भु शुक प्रकट प्रभाव नाम को॥
ध्रुवप्रहलादविभाषणकपिपतिजड़पतंगपाण्डवसुदामको ।
लोक सुयश परलोक सुगति इन्ह में को है रामकामको॥
गणिका कोल किरात आदिकवि इनते अधिक वामको ।
वाजिमेध कब कियो अजामिल गज गाय कब सामको ॥
छली मलीन हीन सबही अँग तुलसी सों छीन छामको ।
नाम नरेश प्रताप प्रबलजग युग युग चलत चामको १००॥
सुनि सीतापति शील सुभाउ ।
मोद न मन तन पुलकि नयनजल सो नर खेहर खाउ ॥
शिशुपन ते पितु मातु बंधु गुरु सेवक सचिव सखाउ ।
कहत रामविधुवदन रिसौंहैं सपनेहु लख्यो न काउ॥
खेलत संग अनुज बालक नित जुगवत अनट अपाउ ।
जीति हारि चुचुकारि दुलारत देत दिवावत दाउ ॥
शिला शाप संताप विगत भइ परसत पावन पाउ ।
दई सुगति सो न हेरि हर्ष हिय चरण छुये पछिताउ ॥

भवधनु भंजि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइगे ताउ।
क्षमि अपराध क्षमाय पांय परि इतो न अनत समाउ॥
कह्यो राज वन दियो नारिवश गरि गलानिगे राउ।
ता कुमातु को मन जुगवत ज्यों निज तनु मर्म कुघाउ॥
कपि सेवावश भये कनौड़े कह्यो पवनसुत आउ।
दीबे को न कछू ऋणियां हौं धनिक तु पत्र लिखाउ॥
अपनाये सुग्रीव विभीषण तिन न तज्यो छलछाउ।
भरत सभा सनमानि सराहत होत न हृदय अघाउ॥
निज करुणा करतूति भक्त पर चपत चलत चरचाउ।
सकृत प्रणाम प्रणत यश वरणत सुनत कहत फिरि गाउ॥
समुझि समुझि गुणग्राम रामके उर अनुराग बढ़ाउ।
तुलसिदास अनयास रामपद पैहै प्रेम प्रसाउ १०१॥
जाउँ कहां तजि चरण तुम्हारे।
काको नाम पतितपावन जग केहि अति दीन पियारे॥
कौने देव बराइ बिरदाहित हठि हठि अधम उधारे।
खग मृग व्याध पषाण विटप जड़ यवन कवन सुर तारे॥
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब मायाविवश बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे १०२॥
हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों।
साधनधाम विबुधदुर्लभ तनु मोहिं कृपाकरि दीन्हों॥

कोटिहु मुख कहि जाहिं न प्रभु के एक एक उपकार।
तदपि नाथ कछु और मांगिहौं दीजै परमउदार॥
विषयवारि मनमीन भिन्न नहिं होत कबहुँ पल एक।
ताते सहिय विपति अति दारुण जन्मत योनि अनेक॥
कृपा डोरि बनसी पद अंकुश परम प्रेम मृदुचारो।
यहि विधि बेधि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तुम्हारो॥
है श्रुति विदित उपाय सकल सुर केहि केहि दीन निहोरे।
तुलसिदास यहि जीव मोहरजु जोइ बांध्यो सोइ छोरे१०३॥
यह बिनती रघुबीर गोसांई।
और आश विश्वास भरोसो हरो जीव जड़ताई॥
चहौं न सुगति सुमतिसम्पति कछुऋधिसिधि विपुलबड़ाई।
हेतुरहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाई॥
कुटिल कर्म लैजाय मोहिं जहँ जहँ अपनी बरिआई।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छांड़िये कमठ अण्डकी नाई॥
याहि जगमें जहँ लगि या तनु की प्रीति प्रतीति सगाई।
ते सब तुलसिदास प्रभुहीसों होहिं सिमिटि इकठाई१०४॥
जानकी जीवन की बलि जैहौं।
चित कहै रामसीयपदपरिहरि अब न कहूं चलि जैहौं॥
उपजी उर प्रतीति सपनेहुँ सुख प्रभुपद विमुख न पैहौं।
मन समेत या तनु के वासिन्ह इहै सिखावन दैहौं॥

श्रवणनि और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं ।
रोंकिहौं नयन विलोकत औरहि शीश ईशही नैहौं ॥
नातो नेह नाथ सों करि सब नातो नेह बहैहौं ।
यह छरभार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं १०५ ॥
अबलौं नसानी अब न नसैहौं ।
रामकृपा भवनिशा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ॥
पायो नाम चारु चिंतामणि उर करते न खसैहौं ।
श्यामरूप शुचि रुचिर कसौटी चित कञ्चनहिं कसैहौं ॥
परवश जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज वश है न हँसैहौं ।
मनमधुकर पन करि तुलसी रघुपतिपदकमल बसैहौं १०६॥

राग रामकली ।

महाराज रामादर्यो धन्य सोई । गरुअ गुणराशि सर्वज्ञ सुकृती शूर शीलनिधि साधु तेहि सम न कोई ॥ उपल केवट कीश भालु निशिचर शबरि गीध शमदमदया दान हीने । नामलियेराम किये परमपावन सकल नरतरत तिनके गुणगान कीने ॥ व्याध अपराध की साध राखी कौन पिङ्गला कौन मति भक्ति भेई । कौन धौं सोमयाजी अजामिल अधम कौन गजराज धौं वाजपेई ॥ पांडुसुत गोपिका बिदुर कुबरी सबहि किये शुद्धता लेश कैसो । प्रेमलखि कृष्ण किये आपने तिनहुँ को सुयश संसार हरि हर को जैसो॥

कोल खस भिल्ल यवनादि खल रामकहि नीच ह्वै ऊंच पद को न पायो। दीनदुखदमन श्रीरमन करुणाभवन पतितपावन बिरद वेद गायो॥ मंदमति कुटिल खलतिलक तुलसीसरिस भौ न तिहुँलोक तिहुँकाल कोऊ। नामकी कानि पहिचानि जन आपनो ग्रसत कलिब्याल राख्यो शरण सोऊ १०७॥

राग बिलावल।

है नीको मेरो देवता कोशलपति राम।
सुभग सरोरुहलोचन सुठि सुन्दर श्याम॥
सिय समेत शोभित सदा छवि अमित अनङ्ग।
भुज विशाल शर धनु धरे कटि चारु निषङ्ग॥
बलि पूजा चाहत नहीं चाहैं इक प्रीति।
सुमिरतही मानै भलो पावन सब रीति॥
देहि सकल सुख दुख दहै आरतजन बन्धु।
गुण गहि अघ अवगुण हरै अस करुणासिन्धु॥
देश काल पूरण सदा वद वेद पुरान।
सबको प्रभु सब में बस सबकी गति जान॥
को करि कोटिक कामना पूजै बहु देव।
तुलसिदास तेहि सेइये शङ्कर जेहि सेव १०८॥

वीर महा अवराधिये साधे सिधि होय।
सकल काम पूरण करै जानै सब कोय॥
वेगि विलम्ब न कीजिये लीजै उपदेश।
महामंत्र जपिये सोई जो जपत महेश॥
प्रेम वारि तर्पण भलो घृत सहज सनेहु।
संशय समिध अगिनि क्षमा ममता बलि देहु॥
अघ उचाटि मन वश करै मारै मद मार।
आकर्षै सुख संपदा संतोष विचार
जे यहि भांति भजन कियो मिले रघुपति ताहि।
तुलसिदास प्रभु पद चढ़यो जो लेहु निबाहि १०९॥
कस न करहु करुणा हरे दुख शमन मुरारि।
त्रिविध ताप संदेह शोक संशय भय हारि॥
यह कलिकाल जनित मल मतिमंद मलिन मन।
तेहि पर प्रभु नहिं कर सम्हार केहि भांति जियै जन॥
सब प्रकार समरथ प्रभो मैं सब विधि दीन।
यह जिय जानि द्रवहु नहीं मैं कम विहीन॥
भ्रमत अनेक योनि रघुपति पति आन न मोरे।
दुख सुख सहौं रहौं सदा शरणागत तोरे॥
तो सम देव न कोउ कृपाल समुझौं मन माहीं।
तुलसिदास हरि तोषिये सो साधन नाहीं ११०॥

कहु केहि कहिये कृपानिधे भव जनित विपति अति।
इन्द्रिय सकल विकल सदा निज निज स्वभाव रति॥
जे सुख संपति स्वर्ग नरक संतत सग लागी।
हरि परिहरि सोइ यत्न करत मन मोर अभागी॥
मैं अति दीन दयालु देव सुनि मन अनुरागे।
जो न द्रवहु रघुवीर धीर काहे न दुख लागे॥
यद्यपि मैं अपराधभवन दुखशमन मुरारे।
तुलसिदास कहँ आश इहै बहु पतित उधारे १११॥
केशव कहि न जाइ का कहिये।
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये॥
शून्य भीति पर चित्र रंग नहिं बिन तनु लिखा चितेरे।
धोये मिटै न मरै भीति दुख पाइय यहि तनु हेरे॥
रविकरनीर बसै अति दारुण मकररूप तेहि माहीं।
बदनहीन सो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं॥
कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रबल करि माने।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहिंचाने ११२॥
केशव कारण कौन गुसांई।
जेहि अपराध असाधु जानि मोहिं तजेहु अज्ञ की नांई॥
परमपुनीत संत कोमलचित तिन्हहिं तुमहिं बनिआई।
तौ कत विप्र व्याध गणिकहि तारयो कछु रही सगाई॥

काल कर्म गति अगति जीव की सब हरि हाथ तुम्हारे ।
सोई कछु करहु हरहु ममता मम फिरहुँ न तुमहिं बिसारे ॥
जो तुम तजहु भजौं न आन प्रभु यह प्रमान पन मोरे ।
मन वच कर्म नरक सुरपुर जहँ तहँ रघुबीर निहोरे ॥
यद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौं ढिठाई ।
तुलसिदास सीदत निशि दिन देखत तुम्हारि निठुराई ११३॥

माधव अब न द्रवहु केहि लेखे ।
प्रणतपाल प्रण तोर मोर प्रण जिअउँ कमलपद देखे ॥
जब लगि मैं न दीन दयालु तैं मैं न दास तैं स्वामी ।
तब लगि जो दुख सहेउँ कहेउँ नहिं यद्यपि अन्तर्यामी ॥
तैं उदार मैं कृपण पतित मैं तैं पुनीत श्रुति गावै ।
बहुत नात रघुनाथ तोहिं मोहिं अब न तजे बनिआवै ॥
जनक जननि गुरु बन्धु सुहृद पति सब प्रकार हितकारी ।
द्वैतरूप तमकूप परौं नहिं अस कछु यतन बिचारी ॥
सुन अदभ्रकरुणा बारिजलोचन मोचन भयभारी ।
तुलसिदास प्रभु तव प्रकाश बिन संशय टरत न टारी ११४॥

माधव मो समान जग माहीं ।
सबविधि हीन मलीन दीन अति लीन विषय कोउ नाहीं॥
तुम सम हेतुरहित कृपालु आरतहित ईश न त्यागी ।
मैं दुख शोक बिकल कृपालु केहि कारण दया न लागी ॥

नाहिंन कछु अवगुण तुम्हार अपराध मोर मैं माना।
ज्ञानभवन तनु दियहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभु जाना॥
वेणु करील श्रीखंड बसंतहि दूषण मृषा लगावै।
साररहित हत भाग्य सुरभि पल्लव सो कहु कहँ पावै॥
सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि दृढ़ विचार जिय मोरे।
तुलसिदास प्रभु मोह शृङ्खला छुटिहि तुम्हारे छोरे ११५॥
माधव मोहफाँस क्यों टूटै।
बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै॥
घृतपूरण कराह अन्तरगत शशि प्रतिबिम्ब दिखावै।
ईंधन अनल लगाइ कल्पशत औंटत नाश न पावै॥
तरुकोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरै न जैसे।
साधन करिय विचारहीन मन शुद्ध होइ नहिं तैसे॥
अन्तर मलिन विषय मन अति तनु पावन करिय पखारे।
मरइ न उरग अनेक यत्न बलमीक विविध विधि मारे॥
तुलसिदास हरि गुरु करुणा बिन विमल विवेक न होई।
बिन विवेक संसार घोरनिधि पार न पावै कोई ११६॥
माधव अस तुम्हारि यह माया।
करि उपाय पचि मरिय तरिय नहिं जबलगि करहु न दाया॥
सुनिय गुनिय समुझिय समुझाइय दशा हृदय नहिं आवै।
जेहि अनुभव बिन मोह जनित भव दारुण विपति सतावै॥

ब्रह्मपियूष मधुर शीतल जो पै मन सो रस पावै ।
तौ कत मृगजल रूप विषय कारण निशि वासर धावै ॥
जेहि के भवन विमल चिन्तामणि सो कत कांच बटोरै ।
सपने परवश परयो जागि देखत केहि जाय निहोरै ॥
ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं ।
तुलसिदास हरिकृपा मिटै भ्रम यह भरोस मन माहीं ११७॥

हे हरि कवन दोष तोहिं दीजै ।
जेहि उपाय सपनेहु दुर्लभ गति सोइ निशि वासर कीजै ॥
जानत अर्थ अनर्थ रूप तम कूप परब यहि लागे ।
तदपि न तजत श्वान अज खर ज्यों फिरत विषय अनुरागे ॥
भूतद्रोहकृत मोहवश्य हित आपन मैं न विचारो ।
मद मत्सर अभिमान ज्ञान रिपु इनमहँ रहनि अपारो ॥
वेद पुराण सुनत समुझत रघुनाथ सकल जग व्यापी ।
वेधत नहिं श्रीखंड वेणु इव सारहीन मन पापी ॥
मैं अपराधसिन्धु करुणाकर जानत अन्तर्यामी ।
तुलसिदासभवव्यालग्रसिततवशरणउरगारिपुगामी११८॥

हे हरि कवन यतन सुख मानहु ।
ज्यों गजदशन तथा मम करणी सब प्रकार तुम जानहु ॥
जो कछु कहिय करिय भवसागर तरिय बच्छपद जैसे ।
रहनि आन विधि करिय आन हरिपद सुख पाइय कैसे ॥

देखत चारु मयूर वचन शुभ बोल सुधा इव सानी।
सविष उरग आहार निठुर अस यह करणी वह बानी॥
अखिलजीववत्सल निर्मत्सर चरणकमलअनुरागी।
ते तव प्रिय रघुवीर धीरमति अतिशय निज पर त्यागी॥
यद्यपि मम अवगुण अपार संसारयोग रघुराया।
तुलसिदास निजगुण विचारि करुणानिधानकरुदाया११९॥
हे हरि कवन यतन भ्रम भागै।
देखत सुनत विचारत यह मन निज स्वभाव नहिं त्यागै॥
भक्तिज्ञान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई।
कोउ भल कहहु देउ कछु कोउ अस वासना हृदय ते न जाई॥
जेहि निशि सकल जीव सूतहिं तव कृपापात्र जन जागै।
निज करनी विपरीत देखि मोहिं समुझि महाभय लागै॥
यद्यपि भग्नमनोरथ विधिवश सुखइच्छित दुख पावै।
चित्रकार करहीन यथा स्वारथ बिन चित्र बनावै॥
हृषीकेश सुनि नाम जाउँ बलि अति भरोस जिय मोरे।
तुलसिदास इन्द्रियसंभव दुख हरे बनिहि प्रभु तोरे १२०॥
हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी।
यद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहिं कृपा तुम्हारी॥
अर्थ अविद्यमान जानिय संसृति नहिं जाइ गोसाईं।
बिन बांधे निज हठ शठ परवश पर्यो कीर की नाईं॥

सपने व्याधि विविधबाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई ।
वैद्य अनेक उपाय करहिं जागे बिन पीर न जाई ॥
श्रुति गुरु साधु स्मृति संमत यह दृश्य सदा दुखकारी ।
तेहि बिन तजे भजे बिन रघुपति विपति सकै को टारी ॥
बहु उपाय संसारतरन कहँ विमल गिरा श्रुति गावै ।
तुलसिदास मैं मोर गये बिन जिय सुख कबहुँ न पावै १२१॥
हे हरि यह भ्रम की अधिकाई ।
देखत सुनत कहत समुझत संशय संदेह न जाई ॥
जो जग मृषा ताप त्रय अनुभव होइ कहहु केहि लेखे ।
कहि न जाइ मृगवारि सत्य भ्रमते दुख होइ विशेखे ॥
सुभग सेज सोवत सपने वारिधि बूड़त भय लागै ।
कोटिहु नाव न पार पाव सो जबलगि आपु न जागै ॥
अनविचार रमणीय सदा संसार भयङ्कर भारी ।
शम संतोष दया विवेक ते व्यवहारी सुखकारी ॥
तुलसिदास सबविधि प्रपंच जग यदपि झूठ श्रुति गावै ।
रघुपतिभक्ति संतसंगति बिन को भवत्रास नशावै १२२ ॥
मैं हरि साधन करै न जानी ।
जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष कहा वरबानी ॥
सपने नृप कहँ घटै विप्रवध विकल फिरै अघलागे ।
वाजिमेध शतकोटि करै नहिं शुद्ध होइ बिन जागे ॥

खगमहँ सर्प विपुलभयदायक प्रकट होइ अविचारे ।
बहु आयुध धरि बल अनेक करि हारहि मरइ न मारे ॥
निज भ्रम ते रविकरसंभवसागर अति भय उपजावै ।
अवगाहत बोहित नौका चढ़ि कबहूं पार न पावै ॥
तुलसिदास जग आपु सहित जबलगि निर्मूल न जाई ।
तबलगि कोटि कलपउपाय करिमरियतरियनहिं भाई १२३॥
अस कछु समुझि परत रघुराया ।
बिन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया ॥
वाक्यज्ञान अत्यन्तनिपुण भव पार न पावै कोई ।
निशि गृह मध्य दीप की बातन्ह तम निवृत्त नहिं होई ॥
जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशनहीन दुख पावै ।
चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै ॥
षटरस बहुप्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै ।
बिन बोले सन्तोषजनित सुख खाइ सोइ पै जानै ॥
जब लागि नहिं निज हृदि प्रकाश अरु विषय आश मनमाहीं ।
तुलसिदासतबलगिजगयोनिभ्रमतसपनेहुँसुखनाहीं १२४॥
जो निज मन परिहरै विकारा ।
तौ कत द्वैतजनित संसृति दुख संशय शोक अपारा ॥
शत्रु मित्र मध्यस्थ तीनि ये मन कीन्हे बरिआई ।
त्यागब गहब उपेक्षनीय अहि हाटक तृण की नाई ॥

अशन बसन पशु वस्तु विविध विधि सब मणिमहँ रह जैसे।
स्वर्ग नरक चर अचर लोक बहु बसत मध्य मन तैसे॥
विटप मध्य पुत्रिका सूत्र महँ कञ्चुकि बिनहिं बनाये।
मन महँ तथा लीन नानातनु प्रगटत अवसर पाये॥
रघुपति भक्ति वारिछालित चित बिन प्रयासही सूझै।
तुलसिदास कह चिद्विलासजग बूझत बूझत बूझै १२५॥
मैंकेहिकहौं विपति अतिभारी। श्रीरघुवीरधीरहितकारी॥
मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँबसे आइ बहु चोरा॥
अतिकठिन करहिं बरजोरा। मानहिंनहिंविनयनिहोरा॥
तम मोह लोभ अहँकारा। मद क्रोध बोधरिपुमारा॥
अति करहि उपद्रव नाथा। मर्दहिंमोहिं जानिअनाथा॥
मैं एक अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा॥
भागेहु नहिं नाथ उबारा। रघुनायक करहु सँभारा॥
कह तुलसिदास सुनु रामा। लूटहिं तस्कर तव धामा॥
चिंता यह मोहिं अपारा। अपयश नहिं होइ तुम्हारा१२६॥
मन मेरे मानहि सिख मेरी। जो निज भक्ति चहै हरिकेरी॥
उर आनहि प्रभुकृत हित जेते। सेवहि तजे अपनपौ चेते॥
दुखसुख अरु अपमानबड़ाई। सबसमलेखहि विपतिबिहाई॥
सुनु शठ कालग्रसितयहदेही। जनितेहिलागिविदूषहिकेही॥
तुलसिदासबिनअसमतिआये। मिलहिं न रामकपटलयलाये॥

मैं जानी हरिपद रति नाहीं। सपनेहुनहिंविरागमनमाहीं ॥
जे रघुवीर चरण अनुरागे। तिन्हसबभोगरोगसमत्यागे ॥
कामभुजंगडसत जबजाही। विषयनींबकटुलगत न ताही॥
असमंजसअसहृदयविचारी। बढ़त शोच नित नूतन भारी॥
जबकबरामकृपादुखजाई।तुलसिदासनहिं आनउपाई १२८॥
सुमिरुसनेहसहितसीतापति।रामचरणतजिनहिंनआनगति
जपनपतीरथयोगसमाधी।कलिमतिविकलनकछुनिरुपाधी॥
करतहुँ सुकृत न पाप सिराहीं। रक्तबीज सम बाढ़त जाहीं॥
हरणिएकअघअसुरजालिका।तुलसिदासप्रभुकृपाकालिका।
रुचि रसना तू राम राम क्यों न रटत।
सुमिरत शुभ सुकृत बढ़त अघ अमंगल घटत॥
बिन श्रम कलिकलुषजाल कटु कराल कटत।
दिनकर के उदय जैसे तिमिर तोम फटत॥
योग याग जप विराग तप सुतीर्थ अटत।
बांधिबे को भवगयन्द रेणु की रजु बटत॥
परिहरि सुरमणि सुनाम गुंजा लखि लटत।
लालच लघु तेरो लखि तुलसि तोहिं हटत १३०॥
राम राम राम राम राम राम जपत।
मंगल मुद उदित होत कलिमल छल छपत॥
कहु के लहे फल रसाल बबुर बीज बपत।

हारहि जनि जन्म जाइ गाल गूल गपत॥
काल कर्म गुण स्वभाव सब के शीश तपत।
रामनाम महिमा की चरचा चले चपत॥
साधन बिन सिद्धि सकल विकल लोग लपत।
कलियुग वर बनिज विपुल नाम नगर खपत॥
नाम सों प्रतीति प्रीति हृदय सुथिर थपत।
पावन किय रावनरिपु तुलसिहु से अपत १३१॥
पावन प्रेम रामचरण जन्म लाहु परम।
रामनाम लेत होत सुलभ सकल धरम॥
योग मख विवेक विरति वेद विदित करम।
करिबे कहँ कटु कठोर सुनत मधुर नरम॥
तुलसी सुनि जानि बूझि भूलहि जनि भरम।
तेहि प्रभु को तू होहि जेहि सबही की शरम १३२॥
राम से प्रीतम की प्रीति रहित जीव जाय जियत।
जेहि सुख सुख मानिलेत सुख सो समुझ कियत॥
जहँ जहँ जेहि योनि जनम महि पताल वियत।
तहँ तहँ तू विषय सुखहि चहत लहत नियत॥
कत विमोह लट्यो फट्यो गगन मगन सियत।
तुलसी प्रभु सुयश गाइ क्यों न सुधा पियत १३३॥
तोसेहौं फिरि फिरि हित प्रिय पुनीत सत्य वचन कहत।

सुनि मन गुनि समुझि क्यों न सुगम सुमग गहत ॥
छोटो बड़ो खोटो खरो जग जो जहँ रहत।
अपने अपने को भलो कहु सो को जो न चहत ॥
विधिलगि लघु कीट अवधि सुख सुखी दुख दहत।
पशुलौं पशुपाल ईश बांधत छोरत नहत ॥
विषय मुद निहार भार शिर को कांधे ज्यों बहत।
योंहीं जिय जानि मानि शठ तू सांसति सहत ॥
पायो केहि घृत विचार हरिणवारि महत।
तुलसी तकु ताहि शरण जाते सब लहत १३४ ॥
ताते हौं बार बार देवद्वार परि पुकार करत।
आरति नति दीनता कहे प्रभु सङ्कट हरत ॥
लोकपाल शोक विकल रावण डर डरत।
का सुनि सकुचे कृपालु नर शरीर धरत ॥
कौशिक मुनितीय जनक शोच अनल जरत।
साधन केहि शीतल भये सो न समुझि परत ॥
केवट खग शबरि सहज चरणकमलन रत।
संमुख तोहिं होत नाथ कुतरु सुफल फरत ॥
बन्धुवैर कपि विभीषण गुरु गलानि गरत।
सेवा केहि रीझि राम किये सरिस भरत ॥
सेवक भयो पवनपूत साहिब अनुहरत।

ताको लिये रामनाम सब को सुढर ढरत ॥
जाने बिन राम रीति पचि पचि जग मरत।
परिहरि छल शरण गये तुलसिहु से तरत १३५॥

राग सूहो विलावल।

रामसनेही सों तैं न सनेह कियो।
अगम जो अमरनहूं सो तनु तोहिं दियो॥
दियो सुकुलजन्म शरीर सुन्दर हेतु जो फल चारि को।
जो पाइ पंडित परमपद पावत पुरारि मुरारि को॥
यह भरतखण्ड समीप सुरसरि थल भलो सङ्गति भली।
तेरी कुमति कायर कल्पवल्ली चहति है विषफल फली॥
अजहूं समुझि चितदै सुनो परमारथ।
है हित सो जगहूं जाहि ते स्वारथ॥
स्वारथहि प्रिय स्वारथ सो का तैं कौन वेद बखानई।
देखु खल अहिखेल परिहरि सो प्रभुहि पहिचानई॥
पितु मातु गुरु स्वामी अपनपौ तिय तनय सेवक सखा।
प्रिय लगत जाके प्रेम सों बिन हेतु हित नहिं तैं लखा॥
दूरि न सो हितू हेरु हियेही है।
छलहि छांड़ि सुमिरे छोह कियेही है॥
किये छोह छाया कमलकर की भक्तपर भज तेहि भजै।
जगदीश जीवन जीव को जो साज सब सबको सजै॥

हरिहि हरिता विधिहि विधिता शिवहि शिवता जो दई।
सोइ जानकीपति मधुरमूरति मोदमय मङ्गल मई॥
ठाकुर अतिहि बड़ो शील सरल सुठि।
ध्यान अगम शिवहूं भेंट्यो केवट उठि॥
भरि अङ्क भेंट्यो सजल नयन सनेह शिथिल शरीर सों।
सुर सिद्ध मुनि कवि कहत कोउ न प्रेमप्रिय रघुबीर सों॥
खग शबरि निशिचर भालु कपि किये आपुते बन्दित बड़े।
तापर तिन्हकि सेवा सुमिरि जिय जात जनु सकुचनि गड़े॥
स्वामी को स्वभाव कह्यो सो जब उर आनिहैं।
शोच सकल मिटिहैं राम भलो मन मानिहैं॥
भलो मानिहैं रघुनाथ जोरि जो हाथ माथो नाइहै।
ततकाल तुलसीदास जीवन जन्म को फल पाइहै॥
जपि नाम करहि प्रणाम कहि गुणग्राम रामहिं धरि हिये।
बिचरहिं अवनि अवनीश चरणसरोजमनमधुकर किये१३६॥
जिय जबते हरिते बिलगान्यो। तबते देह गेह निज जान्यो॥
मायावश स्वरूप बिसरायो। तेहि भ्रमते दारुणदुख पायो॥
पायो जो दारुण दुसह दुख सुख लेश सपनेहु नहिं मिल्यो।
भवशूल शोक अनेक जेहि तेहि पन्थ तू हठि हठि चल्यो॥
बहु योनि जन्म जरा विपति मतिमन्द हरि जान्यो नहीं।
श्रीराम बिनु विश्राम मूढ़ विचार लखि पायो कहीं॥

आनँदसिन्धुमध्य तव वासा। बिनु जाने कस मरसि पियासा ॥
मृगभ्रमवारि सत्य जियजानी। तहँ तू मगन भयो सुखमानी॥
तहँ मगन मज्जसि पान करि त्रयकाल जल नाहीं जहां ।
निज सहज अनुभव रूप तू खल भूलि अब आयो तहां ॥
निर्मल निरञ्जन निर्विकार उदार सुख तैं परिहस्यो ।
निष्काज राज विहाय नृप इव स्वप्नकारागृह पस्यो ॥
तैं निज कर्मडोरि दृढ़ कीन्ही। अपने करनि गांठगहि दीन्ही ॥
ताते परवश पस्यो अभागे । ता फल गर्भवास दुख आगे ॥
आगे अनेक समूह संसृति उदरगत जान्यो सोऊ ।
शिर हेठ ऊपर चरण संकट बात नहिं पूछै कोऊ ॥
शोणित पुरीष जो मूत्र मल क्रिमि कर्दमावृत सोवही ।
कोमल शरीर गँभीर वेदन शीश धुनि धुनि रोवही ॥
तू निजकर्मजाल जहँ घेरो । श्रीहरिसंग तज्यो नहिं तेरो ॥
बहुविधिप्रतिपालनप्रभुकीन्हो। परमकृपालुज्ञानतोहिंदीन्हो
तोहिं दियो ज्ञान विवेक जन्म अनेक की तब सुधिभई ।
तेहि ईश की हौं शरण जाकी विषममाया गुणमई ॥
जेहि किये जीवनिकाय वश रसहीन दिन दिन अतिनई ।
सो करौ वेगि सँभार श्रीपति विपति महँ जिन मति दई ॥
पुनिबहुविधिगलानिजियमानी। अबजगजाय भजौंचक्रपानी
ऐसहि करि विचारचुप साधी । प्रसवपवन प्रेस्यो अपराधी ॥

प्रेर्यो जो परम प्रचण्ड मारुत कष्ट नाना तैं सह्यो ।
सो ज्ञान ध्यान विराग अनुभव यातना पावक दह्यो ॥
अतिखेद व्याकुल अल्पबल क्षण एक बोलि न आवई ।
तब तीव्र कष्ट न जान कोउ सब लोग हर्षित गावई ॥
बालदशा जेते दुख पाये । अतिअसीम नहिं जाहिं गनाये ॥
क्षुधा व्याधि बाधा भइ भारी।वेदन नहिं जानै महतारी ॥
जननी न जानै पीर सो केहि हेतु शिशु रोदन करै ।
सोइ करै विविध उपाय जाते अधिक तुव छाती जरै ॥
कौमार शैशव अरु किशोर अपार अघ को कहिसकै ।
व्यतिरेक तोहिं निर्दय महाखल आन कहु को सहिसकै ॥
यौवन युवति संग रँगरात्यो । तब तू महामोह मदमात्यो॥
ताते तजी धर्म मर्यादा । बिसरे तब सब प्रथम विषादा ॥
बिसरे विषाद निकाय संकट समुझि नहिं फाटत हियो ।
फिरि गर्भगत आवर्त संसृतिचक्र जेहि होइ सोइ कियो ॥
क्रिमि भस्म बिट परिणाम तनु तेहि लागि जग वैरी भयो।
परदार परधन द्रोहपर संसार बाढ़ै नित नयो ॥
देखतही आई बिरधाई । जो तैं सपनेहु नाहिं बुलाई ॥
ताके गुण कछु कहे न जाहीं । सो अब प्रकट देखु जगमाहीं ॥
सो प्रकट तनु जर्जर जरावश व्याधि शूल सतावई ।
शिरकम्प इन्द्रिय शक्तिप्रतिहत वचन काहु न भावई ॥

गृहपालहू ते अति निरादर खान पान न पावइ।
ऐसेहु दशा वैराग्य नहिं तृष्णा तरङ्ग बढ़ावई॥
काहि को सकै महाभव तेरे। जन्म एक के कछुक गनेरे॥
खानिचारिसन्तत अवगाहीं।अजहुँनकरु विचारमनमाहीं॥
अजहूं विचारु विकार तजि भजु राम जन सुखदायकं।
भवसिन्धुदुस्तरजलरथं भजु चक्रधर सुरनायकं॥
बिनु हेतु करुणाकर उदार अपारमायातारणं।
कैवल्यपति जगपति रमापति प्राणपति गतिकारणं॥
रघुपतिभक्तिसुलभसुखकारी। सोत्रयतापशोकभयहारी॥
बिनु सतसंग भक्ति नहिं होई।ते तब मिलैं द्रवैं जब सोई॥
जब द्रवैं दीनदयालु राघव साधु संगति पाइये।
जेहि दरश परश समागमादिक पापराशि नशाइये॥
जिनके मिले दुख सुख समान अमानतादिक गुण भये।
मद मोह लोभ विषाद क्रोध सुबोध ते सहजहि गये॥
सेवत साधु द्वैत भय भागै। श्रीरघुवीरचरण लय लागै॥
देहजनितविकारसबत्यागै। तबफिरिनिजस्वरूपअनुरागै॥
अनुराग सो निजरूप जो जग ते विलक्षण देखिये
संतोष शम शीतल सदा हम देहवन्त न लेखिये॥
निर्मल निरामय एकरस तेहि हर्ष शोक न व्यापई।
त्रैलोक्यपावन सो सदा जाकी दशा ऐसी भई॥

जो तेहि पन्थ चलै मनलाई। तौ हरि काहे न होहिं सहाई॥
जो मारग श्रुति साधु देखावैं। तेहि पथ चलत सबै सुख पावैं॥
पावैं सदा सुख हरिकृपा संसार आशा तजि रहै।
सपनेहु नहीं दुख द्वैत दरशन बात कोटिक को कहै॥
द्विज देव गुरु हरि सन्त बिनु संसार पार न पावई।
यह जानि तुलसीदास त्रासहरं रमापति गावई १३७॥

राग बिलावल।

जो पै कृपा रघुपति कृपालु की वैर और के कहा सरै।
होय न बांको बार भक्त को जो कोउ कोटि उपाय करै॥
तकै नीच जो मीच साधु की सो पामर तेहि मीच मरै।
वेदविदित प्रहलाद कथा सुनि को न भक्तिपथ पाउँ धरै॥
गज उधारि हरि थप्यो विभीषण ध्रुव अविचल कबहूं न टरै।
अम्बरीष की शाप सुरति करि अजहुँ महामुनि ग्लानि गरै॥
सो धौं कहा जु न कियो सुयोधन अबुध आपने मान जरै।
प्रभु प्रसाद सौभाग्य विजय यश पाण्डव ने बरिआइ बरै॥
जो जो कूप खनैगो पर कहँ सो शठ फिरि तेहि कूप परै।
सपनेहु सुख न सन्तद्रोही कहँ सुरतरु सोउ विषफरनि फरै॥
हैं काके द्वै शीश ईश के जो हठि जन की सीम चरै।
तुलसिदास रघुवीर बाहुबल सदा अभय काहू न डरै १३८॥
कबहूं सो करसरोज रघुनायक धरिहौ नाथ शीश मेरे।

जेहिकर अभय किये जन आरत बारक विवश नाम टेरे ॥
जेहि करकमल कठोर शम्भुधनु भञ्जि जनक संशय मेट्यो ।
जेहि करकमल उठाइ बन्धु ज्यों परमप्रीति केवट भेंट्यो ॥
जेहि करकमल कृपालु गीध कहँ पिण्डदेइ निज लोक दियो ।
जेहिकर बालि बिदारिदासहित कपिकुलपतिसुग्रीव कियो॥
आयो शरणसभीत विभीषण जेहिकरकमलतिलक कीन्हों ।
जेहिकर गहि शरचाप असुरहति अभयदानदेवन दीन्हों ॥
शीतल सुखद छांह जेहि कर की मेटति ताप पाप माया ।
निशिवासरतेहिकरसरोजकी चाहततुलसिदासछाया १३८॥
दीनदयालु दुरित दारिद दुख दुनी दुसह तिहुँ ताप तई है ।
देव दुवार पुकारत आरत सबकी सब सुखहानि भई है ॥
प्रभुके वचन वेद बुध सम्मत मम मूरति महिदेवमई है ।
तिनकीमतिरिसराग मोह मद लोभ लालची लीलिलई है ॥
राजसमाजकुसाज कोटि कटुकलपत कलुष कुचाल नई है ।
नीति प्रतीत प्रीतिपरमिति पति हेतुवाद हठिहेरि हई है ॥
आश्रम वर्ण धर्म बिरहित जग लोक वेद मर्याद गई है ।
प्रजा पतित पाखण्ड पापरत अपने अपने रंगरई है ॥
शान्ति सत्य शुभरीति गई घटि बढ़ी कुरीति कपट कलई है ।
सीदतसाधुसाधुताशोचतिखलबिलसातिहुलसातिखलई है॥
परमारथस्वारथ साधन भये अफल सकलनहिंसिद्धिसई है ।

कामधेनु धरणी कलिगोमरविवश विकलजामति न बई है ॥
कलिकरणीबरणिये कहां लौं करत फिरत बिनु टहल टई है ।
तापर दांत पीसि कर मींजत को जाने चित काह ठई है ॥
त्यों त्योंनीचचढ़तशिरऊपर ज्यों ज्यों शीलवशढीलदई है ।
सरुष बरजि तरजिये तरजनी कुम्हिलैहै कुम्हड़ेकी जई है ॥
दीजै दादि देखि नातो बलि मही मोद मङ्गल रितई है ।
भरे भाग अनुराग लोगकहैं राम अवधिचितवनिचितई है ॥
बिनती सुनि सानंद हेरि हँसि करुणावारि भूमिभिजई है ।
रामराज भयो काज शकुन शुभ राजा राम जगत बिजई है ॥
समरथ बड़ो सुजान सुसाहिब सुकृतसैन हारत जितई है ।
सुजनस्वभाव सराहत सादर अनायाससांसति बितई है ॥
उथपेथपन उजारि बसावन गई बहोरि विरद सदई है ।
तुलसीप्रभुआरतआरतिहरअभयबांहकेहिकेहिनदईहै १४०

ते नर नरकरूपजीवत जग भवभंजनपदविमुखअभागी । निशिवासर रुचि पाप अशुचिमन खलमति मलिन निगम पथत्यागी ॥ नहिं सतसङ्ग भजन नहिं हरिको श्रवण न राम कथा अनुरागी । सुत वित दार भवन ममता निशि सोवत अति न कबहुँ मति जागी ॥ तुलसिदास हरिनाम सुधा तजि शठ हठिपियत विषयविषमांगी । शूकर श्वान शृगाल सरिस जन जन्मत जगत जननिदुख लागी १४१ ॥

रामचन्द्र रघुनायक तुमसों हौं बिनती केहि भांति करौं।
अघ अनेक अवलोकि आपने अनघ नाम अनुमानि डरौं॥
परदुखदुखी सुखी परसुख ते सन्तशील नहिं हृदय धरौं।
देखि आनकी विपतिपरमसुख सुनिसंपतिबिनु आगि जरौं॥
भक्तिविराग ज्ञान साधन कहि बहुविधि डहँकतलोकफिरौं।
शिवसरबस सुखधाम नाम तव बेंचि नरकप्रद उदर भरौं॥
जानतहूं निज पापजलधि जिय जलसीकर सम सुनत लरौं।
रजसम परअवगुणसुमेरु करि गुणगिरिसम रजते निदरौं॥
नाना वेष बनाइ दिवस निशि परबित जेहि तेहि युक्ति हरौं।
एकौ पल न कबहुँ अलोलचित हित दै पदसरोज सुमिरौं॥
जो आचरण बिचारहु मेरो कलपकोटि लगि औटि मरौं।
तुलसिदासप्रभुकृपाबिलोकनिगोपदज्यौंभवसिन्धुतरौं १४२
सकुचतहौं अति राम कृपानिधि क्योंकरि विनय सुनावौं।
सकल धर्म विपरीत करत केहि भांति नाथ मन भावौं॥
जानतहौं हरिरूप चराचर मैं हठि नयन न लावौं।
अंजन केश शिखा युवती तहँ लोचन शलभ पठावौं॥
श्रवणनि को फल कथा तुम्हारी यह समुझौं समुझावौं।
तिन श्रवणनि परदोष निरन्तर सुनिसुनि भरिभरि तावौं॥
जेहि रसना गुण गाइ तिहारे बिनु प्रयास सुख पावौं।
तेहि मुख परअपवाद भेक ज्यों रटि रटि जन्म नशावौं॥

करहु हृदय अतिविमल बसहिं हरि कहिकहिसबहिंसिखावों।
हौं निज उर अभिमान मोह मद खलमण्डली बसावों ॥
जो तनु धरि हरिपद साधहिं जन सो बिनुकाज गँवावों।
हाटकघट भरि धस्यो सुधा गृह तजि नभ कूप खनावों ॥
मन क्रम वचन लाइ कीन्हे अघ ते करि यतन दुरावों।
पर प्रेरित ईर्षा वश कबहुँक किय कछु शुभ सो जनावों ॥
विप्रद्रोह जनु बांट पस्यो हठि सब सों वैर बढ़ावों।
ताहू पर निज मति विलास सब सन्तन मांझ गनावों ॥
निगम शेष शारद निहोरि जो अपने दोष कहावों।
तौ न सिराहिं कल्प शत लगि प्रभु कहा एक मुख गावों ॥
जो करनी आपनी विचारौं तौ कि शरण हौं आवों।
मृदुल स्वभाव शील रघुपति को सो बल मनहिं दिखावों ॥
तुलसिदास प्रभु सो गुण नहिं जेहि सपनेहु तुमहिं रिझावों।
नाथकृपाभवासिन्धुधेनुपद सम जो समुझिनियरावों १४३॥
सुनहु राम रघुवीर गुसाईं मन अनीतिरत मेरो।
चरण सरोज बिसारि तिहारे निशि दिन फिरत अनेरो ॥
मानत नाहिं निगम अनुशासन त्रास न काहू केरो।
भूल्यो शूल कर्म कोल्हुन तिल ज्यों बहु बारनि पेरो ॥
जहँ सतसंग कथा माधव की सपनेहु करत न फेरो।
लोभ मोह मद काम क्रोधरत तिन्ह सों प्रेम घनेरो ॥

परगुण सुनत दाह परदूषण सुनत हर्ष बहुतेरो ।
आप पाप को नगर बसावत सहि न सकत परखेरो ॥
साधन फल श्रुतिसार नाम तव भवसरिताकहँ बेरो ।
सो परकर काकिनी लागि शठ बेंचि होत हठि चेरो ॥
कबहुँक हौं संगति स्वभावते जाउँ सुमारग नेरो ।
तब करि क्रोध संग कुमनोरथ देत कठिन भटभेरो ॥
इक हौं दीन मलीन हीनमति विपतिजाल अति घेरो ।
तापर सहि न जाय करुणानिधि मनको दुसह दरेरो ॥
हारि पर्‍यों करि यत्न बहुत विधि ताते कहत सबेरो ।
तुलसिदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो १४४ ॥
सो धौं को जो नाम लाज ते नहिं राख्यो रघुबीर ।
कारुणीक बिनु कारणही हरि हरहु विषम भवभीर ॥
वेद विदित जग विदित अजामिल विप्रबन्धु अघधाम ।
घोर यमालय जात निवार्‍यो सुतहित सुमिरत नाम ॥
पशु पामर अभिमान सिंधु गज ग्रस्यो आइ जब ग्राह ।
सुमिरत सुकृत सपदि आये प्रभु हरेउ दुसह उरदाह ॥
व्याध निषाद गृध्र गणिकादिक अगणित अवगुण मूल ।
नाम ओट ते राम सबनको दूरि करेउ भवशूल ॥
केहि आचरण घाटि हौं तिनते रघुकुलभूषण भूप ।
सीदत तुलसिदास निशिवासर पर्‍यो भीमतमकूप १४५ ॥

कृपासिन्धु जन दीन दुवारे दादि न पावत काहे ।
जब जहँ तुमहिं पुकारत आरत तब तिन्हके दुख दाहे ॥
गज प्रह्लाद पाण्डुसुत कपि सबके रिपु संकट मेट्यो ।
प्रणत बन्धु भय विकल विभीषण उठि सो भरत ज्यों भेंट्यो॥
मैं तुम्हरो लै नाम ग्राम यक उर आपने बसावों ।
भजन विवेक विराग लोग भले मैं क्रम क्रम करि ल्यावों ॥
सुनि रिस भरे कुटिल कामादिक करहिं जोर बरिआई ।
तिन्हहिं उजारि नारि अरिधन पुर राखहिं राम गुसाईं ॥
सम सेवा छल दान दंड हौं रचि उपाय पचि हार्यो ।
बिनु कारण के कलह बड़ो दुख प्रभु सों प्रकटि पुकार्यो ॥
सुर स्वारथी अनीश अलायक निठुर दया चित नाहीं ।
जाउँ कहां को विपति निवारक भवतारक जग माहीं ॥
तुलसी यदपि पोच तौ तुम्हरो और न काहू केरो ।
दीजै भक्ति बांह बारक ज्यों सुवश बसे अब खेरो १४६ ॥

हौं सब विधि राम रावरो चाहत भयो चेरो ।
ठौरठौर साहबी होत है ख्याल कालकलि केरो ॥
काल कर्म इन्द्रिय विषय गाहक गण घेरो ।
हौं न कबूलत बांधिकै मोल करत करेरो ॥
बन्दिछोर तेरो नाम है विरुदैत बड़ेरो ।
मैं कह्यों तब छल प्रीति कै मांगे उर डेरो ॥

नाम ओट अब लगि बच्यों मलयुग जग जेरो।
अब गरीब जन पोषिये पाइबो न हेरो॥
जेहि कौतुक बक श्वान को प्रभु न्याव निबेरो।
तेहि हेतुक कहिये कृपालु तुलसी है मेरो १४७॥
कृपासिन्धु ताते रहौं निशि दिन मन मारे।
महाराज लाज आपुहि निज जांघ उघारे॥
मिल्यो रहैं माख्यो चहैं कामादि सँघाती।
मो बिनु रहैं न मेरि ये जारैं छल छाती॥
बसत हिये हित जानि मैं सबकी रुचि पाली।
कियो कथिक को दण्ड हौं जड़ कर्म कुचाली॥
देखी सुनी न आजु लौं अपनायति ऐसी।
करहिं सबै शिर मेरही फिरि परैं अनैसी॥
बड़े अलेखी लखि परे परिहरे न जाहीं।
असमंजस में मगन हौं लीजै गहि बाहीं॥
बारक बलि अवलोकिये कौतुक जन जीको।
अनायास मिटि जाइगो संकट तुलसी को १४८॥
कहौं कौन मुँह लाइकै रघुवीर गोसांई।
सकुचत समुझत आपनी सब साँइ दुहाई॥
सेवत वश सुमिरत सखा शरणागत सौंहौं।
गुणगण सीतानाथ के चित करत न हौं हौं॥

कृपासिंन्धु बन्धु दीन के आरतहितकारी।
प्रणतपाल विरदावली सुनि जानि बिसारी॥
सेइ न धेइ न सुमिरि के पदप्रीति सुधारी।
पाइ सुसाहिब राम सों भरि पेट बिगारी॥
नाथ गरीबनिवाज हैं मैं गही न गरीबी।
तुलसी प्रभु निज ओरते बनिपरै सो कीबी १४९॥
कहां जाउँ कासों कहौं और ठौर न मेरे।
जन्म गँवायों तेरे ही द्वार किंकर तेरे॥
मैं तो बिगरा नाथ सों आरति के लीन्हे।
तोहिं कृपानिधि क्यों बने मेरी सी कीन्हे॥
दिन दुर्दिन दिन दुर्दशा दिन दुख दिन दूषण।
जब लौं तू न विलोकि है रघुवंशविभूषण॥
दई पीठि बिनु डीठ मैं तुम विश्वविलोचन।
तोसों तुही न दूसरो नतशोचविमोचन॥
पराधीन देव दीन हौं स्वाधीन गुसाईं।
बोलनिहारे सों करे बलि विनय की झाईं॥
आपु देखि मोहिं देखिये जन मानिय सांचो।
बड़ी ओट राम नाम की जेहि लयो सो बांचो॥
रहनि रीति राम रावरी नित हिय हुलसी है।
ज्यों भावै त्यों करु कृपा तेरो तुलसी है १५०॥

रामभद्र मोहिं आपनो शोच है अरु नाहीं ।
जीव सकल संताप के भाजन जग माहीं ॥
नातो बड़े समर्थ सों यक ओर किधौं हूं ।
तोको मोसे अति घने मोको इक तोहूं ॥
बड़ि गलानि हानि है हिये सर्वज्ञ गुसाईं ।
क्रूर कुसेवक कहत हौं सेवक की नाईं ॥
भलो पोच राम को कहैं मोहिं सब नर नारी ।
बिगरे सेवक श्वान ज्यों साहिब शिर गारी ॥
असमंजस मनको मिटै सो उपाउ न सूझै ।
दीनबन्धु कीजै सोई बनिपरै जो बूझै ॥
विरदावली विलोकिये तिन्ह में कोइ हौं हौं ।
तुलसी प्रभु को परिहस्यो शरणागत सौंहौं १५१॥
जोपै चेराई राम की करते न लजातो ।
तौ तू दाम कुदाम ज्यों कर कर न बिकातो ॥
जपत जीह रघुनाथ को नाम नहिं अलसातो ।
बाजीगर के सूम ज्यों खल खेह न खातो ॥
जो तू मन मेरे कहे राम नाम कमातो ।
सीतापति सम्मुख सुखी सब ठांव समातो ॥
राम सुहाते तोहिं जो तू सबहि सुहातो
काल कर्म कुल कारनी कोऊ न कुहातो ॥

राम नाम अनुरागही जिय जो रति आतो।
स्वारथ परमारथ पथी तोहिं सब पतिआतो॥
सेइ साधु सुनि समुझिकै पर पीर पिरातो।
जन्म कोटि को कांदलो हद हृदय थिरातो॥
भवमग अगम अनन्त है बिनु श्रमहि सिरातो।
महिमा उलटे नाम को मुनि कियो किरातो॥
अमर अगम तनु पाइ सो जड जाइ न जातो।
होतो मंगलमूल तू अनुकूल विधातो॥
जो मन प्रीति प्रतीति सों रामनामहि रातो।
तुलसी रामप्रसाद सो तिहुँ ताप न तातो १५२॥
रामभलाई आपनी भल कियो न काको।
युग युग जानकिनाथ को जग जागत साको॥
ब्रह्मादिक बिनती करी कहि दुख वसुधा को।
रविकुल कैरवचन्द भो आनन्द सुधा को॥
कौशिक गरत तुषार ज्यों तकि तेज तिया को।
प्रभु अनहित हित को दियो फल कोप कृपा को॥
हर्यो पाप आप जायकै संताप शिला को।
शोचमगन काढ्यो सही साहब मिथिला को॥
रोषराशि भृगुपति धनी अहमिति ममता को।
चितवत भाजन करलियो उपशम समताको॥

मुदित मानि आयसु चले वन मातु पिता को ।
धर्मधुरन्धर धीर सो गुण शील जिता को ॥
गुह गरीब गत ज्ञातिहू जेहि जिउ न भखा को ।
पायो पावन प्रेम ते सनमान सखा को ॥
सद्गति शबरी गृध्र की सादर करता को ।
शोचसींव सुग्रीव के संकट हरता को ॥
राखि विभीषण को सकै तेहि काल कहां को ।
आज विराजत राजहो दशकंठ जहां को ॥
बालि सवासी अवध के बूझिये न खाको ।
ते पांवर पहुँचे तहां जहँ मुनिमन थाको ॥
गति न लहै रामनाम सों विधि सो सिरिजा को ।
सुमिरत कहत प्रचारिकै वल्लभ गिरिजा को ॥
अकनि अजामिल की कथा सानन्द न भा को ।
नाम लेत कलिकालहूं हरिपुरहि न गा को ॥
रामनाम महिमा करै काम भूरुह आको ।
साक्षी वेद पुराण हैं तुलसी तन ताको १५३ ॥

मेरे रावरियै गति है रघुपति बलिजाउँ ।
निलज नीच निर्धन निर्गुण कहँ जग दूसरो न ठाकुर ठाउँ ॥
हैं घर घर भव भरे सुसाहिब सूझत सबनि आपनो दाउँ ।
वानर बन्धु विभीषण हितबिनु कोशलपाल कहूं न समाउँ ॥

प्रणतारति भंजन जनरंजन शरणागत पविपंजर नाउँ।
कीजैदासदासतुलसीअबकृपासिंधुबिनुमोलबिकाउँ १५४॥
देव दूसरो कौन दीन को दयाल।
शीलनिधान सुजान शिरोमणि शरणागत प्रिय प्रणतपाल॥
को समर्थ सर्वज्ञ सकल प्रभु शिव सनेह मानस मराल।
कोसाहिबकिये मीतप्रीतिबशखगनिशिचरकपिभीलभाल॥
नाथ हाथ माया प्रपंच सब जीव दोष गुण कर्म काल।
तुलसिदासभलोपोचराबरोनेकुनिराखिकीजिये निहाल१५५

राग सारंग।

बिश्वास एक राम नाम को।
मानत नहीं प्रतीत अनत ऐसोई स्वभाव मन वाम को॥
पढ़िबो पर्यो न छठी छमत ऋगयजुर अथर्वण साम को।
व्रत तीरथ तप सुनि सहमत पचिमरै करै तनु क्षाम को॥
कर्मजाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दाम को।
ज्ञान बिराग योग जप तप भय लोभ मोह कोह कामको॥
सबदिन सबलायक भवगायक रघुनायक गुणग्राम को।
बैठे नाम कामतरु तर डर कौन घोरघन घाम को॥
को जानै को जैहै यमपुर को सुरपुर परधाम को।
तुलसिहि बहुत भलो लागत जग जीवन राम गुलाम को१५६॥

कलि नाम कामतरु राम को।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख दोष घोर घन घाम को॥
नाम लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वाम को।
कहत मुनीश महेश महातम उलटे सूधे नाम को॥
भलो लोक परलोक तासु जाके बल ललित ललाम को।
तुलसी जग जानियत नाम ते शोच न कूच मुकाम को १५७॥
सइये सुसाहब रामसो।
सुखद सुशीलसुजान शूर शुचि सुंदर कोटिक काम सो॥
शारद शेष साधु महिमा कहैं गुणगणगायक साम सो।
सुमिरि सप्रेम नाम जासों रति चाहत चंद्रललाम सो॥
गमन विदेश न लेश क्लेश को सकुचत सकृत प्रणाम सो।
साक्षी ताको विदित विभीषण बैठो है अविचलधाम सो॥
टहल सहज जन महल महल जागत चारो युग याम सो।
देखत दोष न खीझत रीझत सुनि सेवक गुणग्राम सो॥
जाको भजे तिलोकतिलक भये त्रिजग योनि तनु ताम सो।
तुलसी ऐसे प्रभुहि भजै जो न ताहि विधाता वाम सो१५८॥

राग नट।

कैसे देउँ नाथहि खोरि।
कामलोलुप भ्रमत मन हरि भक्ति परिहरि तोरि॥

बहुत प्रीति पुजाइबे पर पूजिबे पर थोरि ।
देत सिख सिखयो न मानत मूढ़ता असि मोरि ॥
किये सहित सनेह जे अघ हृदय राखे चोरि ।
संगवश किये शुभ सुनाये सकल लोक निहोरि ॥
करौं जो कछु धरौं सचि पचि सुकृतशिला बटोरि ।
पैठि उर बरबस दयानिधि दम्भ लेत अजोरि ॥
लोभ मनहिं नचाव कपि ज्यों गरे आशाडोरि ।
बात कहौं बनाय बुध ज्यों वर विराग निचोरि ॥
एतेहुँ पर तुम्हरो कहावत लाज अँचई घोरि ।
निलजता पर रीझि रघुवर देहु तुलसिहि छोरि १५९ ॥

है प्रभु मेरोई सब दोषु ।
शीलसिन्धु कृपालु नाथ अनाथ आरतपोषु ॥
वेष वचन विराग मन अघ अवगुणनि को कोषु ।
रामप्रीति प्रतीति पोली कपट करतब ठोषु ॥
राग रंग कुसंग ही सों साधु संगति रोषु ।
चहत केहरि यशहि सेइ शृगाल ज्यों खरगोषु ॥
शम्भु सिखवन रसनहू नित रामनामहिं घोषु ।
दम्भहूं कलि नाम कुम्भज शोचसागर सोषु ॥
मोद मंगलमूल अति अनुकूल निज निरजोषु ।
रामनाम प्रभाव सुनि तुलसिहु परम संतोषु १६० ॥

मैं हरि पतितपावन सुने ।
मैं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥
व्याध गणिका गज अजामिल साखि निगमनि भने ।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥
जानि नाम अजानि लीन्हे नरक यमपुर मने ।
दासतुलसी शरण आयो राखिये अपने १६१ ॥

राग मलार ।

तोसों प्रभु जोपै कहूं कोउ होतो ।
तौ सहि निपट निरादर निशिदिन रटि लटि ऐसो घटि कोतो ॥
कृपासुधा जलदान मांगिबो कहौं सो सांच निसोतो ।
स्वाति सनेह सलिल सुख चाहत चितचातक सो पोतो ॥
काल कर्म वश मन कुमनोरथ कबहुँ कबहुँ कछु भोतो ।
ज्यों मुदमय बसि मीन वारि तजि उछरि भभरि लेत गोतो ॥
जितो दुराउ दास तुलसी उर क्यों कहि आवत ओतो ।
तेरे राज राय दशरथ के लयो बयो बिनु जोतो १६२ ॥

राग सोरठ ।

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ॥
जो गति योग विराग यतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध शबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥

जो सम्पति दशशीश अर्पि करि रावण शिव पहँ लीन्हीं।
सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्हीं॥
तुलसिदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो १६३॥

एकै दानिशिरोमणि सांचो।
जिहि याच्यो सोइ याचकतावश फिरि बहु नाच न नाचो॥
सब स्वारथी असुर सुर नर मुनि कोउ न देत बिनु पाये।
कोशलपाल कृपालु कल्पतरु द्रवत सकृत शिरनाये॥
हरिहुँ और अवतार आपने राखी वेद बड़ाई।
लै तण्डुल निधि दई सुदामहिं यद्यपि बालमिताई॥
कपि शबरी सुग्रीव विभीषण को नहिं कियो अयाची।
अब तुलसिहि दुख देत दयानिधि दारुण आशपिशाची१६४॥

जानत प्रीतिरीति रघुराई।
नाते सब हाते करिराखत राम सनेह सगाई॥
नेह निबाहि देह तजि दशरथ कीरति अचल चलाई।
ऐसेहु पितु ते अधिक गीध पर ममता गुण गरुआई॥
तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई।
रण पस्यो बन्धु विभीषणही को शोच हृदय अधिकाई॥
घर गुरुगृह प्रियसदन सासुरे भइ जब जहँ पहुनाई।
तब तहँ कहे शबरी के फलन की रुचि माधुरी न पाई॥

सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुचि शिरनाई।
केवट मीत कहे सुख मानत वानरबंधु बड़ाई॥
प्रेमकनौड़ो राम सों प्रभु त्रिभुवन तिहुँ काल न भाई।
ऋणी तोर हौं कह्यो कपि सों ऐसी मानिहि को सेवकाई॥
तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई।
तौ तोहिं जन्मि जाय जननी जड़ तनु तरुणता गँवाई १६५॥
रघुवर रावरि यहै बड़ाई।
निदरि गनी आदर गरीब पर करत कृपा अधिकाई॥
थके देव साधन अनेक करि सपनेहु नहिं देत दिखाई।
केवट कुटिल भालु कपि कौनप कियो सकुल सँग भाई॥
मिलि मुनिवृन्द फिरत दण्डकवन सो चरचौ न चलाई।
बारहि बार गीध शबरी की वर्णत प्रीति सुहाई॥
स्वान कहे ते किये पुर बाहर यती गयन्द चढ़ाई।
सियनिन्दक मतिमन्द प्रजा रज निज नय नगर बसाई॥
यह दरबार दीन को आदर रीति सदा चलि आई।
दीनदयाल दीन तुलसी की काहु न सुरति कराई १६६॥
ऐसे राम दीनहितकारी।
अतिकोमल करुणानिधान बिनु कारण पर उपकारी॥
साधनहीन दीन निजअघवश शिला भई मुनिनारी।
गृह ते गवनि परसि पद पावन घोरशाप ते तारी॥

हिंसारत निषाद तामस वपु पशुसमान वनचारी ।
भेंट्यो हृदय लगाय प्रेमवश नहिं कुल जाति विचारी ॥
यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कहि न जाय अतिभारी ।
सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भय टारी ॥
विहँगयोनि आमिष अहारपर गीध कौन व्रतधारी ।
जनकसमान क्रिया ताकी निज कर सब भांति सँवारी ॥
अधमजाति शबरी योषित शठ लोक वेद ते न्यारी ।
जानि प्रीति दै दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥
कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी ।
सहि न सके दारुण दुख जन के हत्यो बालि सहि गारी ॥
रिपु को बंधु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी ।
शरण गये आगे है लीन्हो भेंट्यो भुजा पसारी ॥
अशुभ होइ जिनके सुमिरे ते वानर ऋच्छ विकारी ।
वेदविदित पावन किये ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥
कह लगि कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी ।
कलिमलग्रसित दासतुलसी पर काहे कृपा बिसारी १६७ ॥

रघुपति भक्ति करत कठिनाई ।
कहत सुगम करनी अपार जाने सोइ जेहि बनिआई ॥
जो जेहि कला कुशल ता कहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी ।
शफरी सन्मुख जलप्रवाह सुरसरी बहै गज भारी ॥

ज्यों शर्करा मिलै सिकता महँ बल ते न कोउ बिलगावै।
अतिरसज्ञ सूक्षम पिपीलिका बिनु प्रयासही पावै॥
सकल दृश्य निज उदर मेलि सोवै निद्रा तजि योगी।
सोइ हरिपद अनुभवै परमसुख अतिशय द्वैत वियोगी॥
शोक मोह भय हर्ष दिवस निशि देश काल तहँ नाहीं।
तुलसिदास यहि दशाहीन संशय निर्मूल न जाहीं १६८॥
जोपै रामचरण रति होती।
तौ कत त्रिविध शूल निशिवासर सहते विपति निसोती॥
जो संतोषसुधा निशि वासर सपनेहु कबहुँक पावै।
तौ कत विषय विलोकि झूठ जल मन कुरंग ज्यों धावै॥
जा श्रीपति महिमा विचारि उर भजते भाव बढ़ाये।
तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाये॥
जे लोलुप भये दास आस के ते सबही के चेरे।
प्रभु विश्वास आस जीती जिन ते सेवक हरि केरे॥
नहिं एकौ आचरण भजन को विनय करत हौं ताते।
कीजै कृपा दासतुलसी पर नाथ नाम के नाते १६९॥
जो मोहिं राम लागते मीठे।
तौ नवरस षटरस रस अनरस ह्वै जाते सब सीठे॥
वंचक विषय विविध तनु धरि अनुभवे सुने अरु दीठे।
यह जानत हौं हृदय आपने सपने न अघाय उबीठे॥

तुलसिदास प्रभु सों एकहि बल वचन कहत अति ढीठे।
नामकि लाज राम करुणाकरि केहि न दिये करि चीठे१७०॥
यों मन कबहूं तुमहिं न लाग्यो।
ज्यों छल छांड़ि स्वभाव निरन्तर रहत विषयअनुराग्यो॥
ज्यों चितई परनारि सुने पातक प्रपंच घर घर के।
त्यों न साधु सुरसरि तरंग निरमल गुणगण रघुवर के॥
ज्यों नासा सुगन्धरस वश रसना षटरस रति मानी।
रामप्रसाद माल जूठन लगि त्यों न ललकि ललचानी॥
चन्दन चन्दबदनि भूषण पट ज्यों चह पांवर परस्यो।
त्यों रघुपतिपदपद्म परस को तनु पातकी न तरस्यो॥
ज्यों सब भांति कुदेव कुठाकुर सेये वपु वचन हियेहूं।
त्यों न राम सुकृतज्ञ जे सकुचत सकृत प्रणाम कियेहूं॥
चंचल चरण लाभ लगि लोलुप द्वार द्वार जग बागे।
राम सीय आश्रमनि चलत त्यों भये न श्रमित अभागे॥
सकल अंग पदविमुख नाथ मुख नाम की ओट लयी है।
है तुलसिहि परतीति एक प्रभु सूरति कृपामयी है १७१॥
कीजै मोको जग यातनामयी।
राम तुम से शुचि सुहृद साहिबहि मैं शठ पीठि दयी॥
गर्भवास दशमास पालि पितु मातु रूप हित कीन्ह
जड़हि विवेक सुशील खलहि अपराधिहि आदर दीन्हो

कपट करौं अन्तर्यामिहुँ सों अघ व्यापकहि दुरावों।
ऐसेहु कुमति कुसेवक पर रघुपति न कियो मन बावों॥
उदर भरौं किंकर कहाइ बेंच्यों विषयनि हाथ हियो है।
मोसे वंचक को कृपालु छल छांड़िकै छोह कियो है॥
पल पल के उपकार रावरे जानि बूझि सुनि नीके।
भिद्यो न कुलिशहु ते कठोर चित कबहुँ प्रेम सियपीके॥
स्वामी की सेवकहितता सब कछु निज साइँ दोहाई।
मैं मति तुला तौलि देखी भइ मेरिहि दिशि गरुआई॥
एतेहु पर हित करत नाथ मेरो करिआयो अरु करिहैं।
तुलसी अपनी ओर जानियत प्रभुहि कनौड़ोइ भरिहैं १७२॥

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्रीरघुनाथ कृपालु कृपा ते सन्तस्वभाव गहौंगो॥
यथालाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित निरत निरंतर मन क्रम वचन नेम निबहौंगो॥
परुषवचन अतिदुसह श्रवण सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
विगतमान सम शीतल मन पर गुण नहिं दोष कहौंगो॥
परिहरि देहजनित चिंता दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसिदासप्रभुयहिपथरहिअविचलहरिभक्तिलहौंगो१७३॥

नाहिंन आवत आन भरोसो।
यहिकलिकाल सकल साधन तरु है श्रम फलनि फरोसो॥

तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रुचै करोसो।
पायहिपै जानिबो कर्मफल भरि भरि बेद परोसो॥
आगम बिधि जप योग करत नर सरत न काज खरोसो।
सुख सपनेहुँ न योग सिधि साधन रोग बियोग धरोसो॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि ज्ञान बिराग हरोसो।
बिगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो॥
बहुमत सुनि बहुपंथ पुराणनि जहां तहां झगरोसो।
गुरु कह्यो रामभजन नीको मोहिं रामराज डगरोसो॥
तुलसी बिनु परतीति प्रीति फिरि फिरि पचिमरै मरोसो।
रामनामबोहित भवसागर चाहै तरन तरोसो १७४॥

जाके प्रिय न राम बैदेही।
सो छांड़िये कोटि बैरी सम यद्यपि परमसनेही॥
तज्यो पिता प्रहलाद बिभीषण बंधु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो कंत व्रजबनितनि भये जग मंगलकारी॥
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहांलों।
अंजन कहा आंखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहांलों॥
तुलसी सो सबभांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो।
जासों होय सनेह रामपद येतो मतो हमारो १७५॥

जो पै रहनि राम सों नाहीं।
तौ नर खर कूकर शूकर सों जाय जियत जग माहीं॥

काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सबहीके।
मनुजदेह सुर साधु सराहत सो सनेह सियपीके॥
शूर सुजान सुपूत सुलक्षण गणियत गुण गरुआई।
बिनु हरिभजन इँदारुण के फल तजत नहीं करुआई॥
कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने।
तुलसी प्रभु अनुराग रहित जस सालन साग अलोने १७६॥

राख्यो राम सुस्वामी सों नीच नेह न नातो।
एते अनादर होतहूं तैं न हातो॥
जोरे नये नाते नेह फोकट के फीके।
देह के दाहक गाहक जीके॥
अपने अपने को सब चाहत नीको।
मूल दुहूं को दयालु दूलह सीको॥
जीव के जीवन प्राण के प्यारे।
सुखहू को सुख राम सो बिसारे॥
कियो करैगो तोसे खल को भलो।
ऐसे सुसाहिब सों तू कुचाल क्यों चलो॥
तुलसी तेरी भलाई अजहूं बूझै।
राड़उ राउत होत फिरिकै जूझै १७७॥
जो तुम त्यागो राम हौं तो नहिं त्यागों।
परिहरि पायँ काहि अनुरागों॥

सुखद सुप्रभु तुमसों जग माहीं।
श्रवण नयन मन गोचर नाहीं॥
हौं जड़ जीव ईश रघुराया।
तुम मायापति हौं वशमाया॥
हौं तौ कुयाचक स्वामी सुदाता।
हौं कुपूत तुमहीं पितु माता॥
जोपै कहुँ कोउ बूझत बातो।
तौ तुलसी बिनु मोल बि तो॥ १७८॥
भयहु उदास राम मेरे आश रावरी।
आरत स्वारथी सब कहैं बात बावरी॥
जीवन को दानी घन कहा ताहि चाहिये।
प्रेमनेम को निबाहे चातक सराहिये॥
मीन ते न लाभ लेश पानी पुण्य पीन को।
जल बिनु थल कहां मीच बिनु मीन को॥
बड़ेही की ओट बलि बचि आये छोटे हैं।
चलत खरे के संग जहां तहां खोटे हैं॥
यहि दरबार भलो दाहिनेहू बाम को।
मोको शुभदायक भरोसो रामनाम को॥
कहत नशानी है है हिये नाथ नीकी है।
जानत कृपानिधान तुलसीके जीकी है १७९॥

राग बिलावल ।

कहां जाउँ कासों कहौं को सुनै दीन की ।
त्रिभुवन तुहीं गति सब संग हीन की ॥
जग जगदीश घर घरनि घनेरे हैं ।
निराधार को अधार गुण गण तेरे हैं ॥
गजराज काज खगराज तजि धायो को ।
मोसे दोषकोष पोसे तोसे माय जायो को ॥
मोसे क्रूर कायर कुपूत कौड़ी आध के ।
किये बहु मोल तैं करैया गीध आध के ॥
तुलसी कि तेरेही बनाये बलि बनैगी ।
प्रभुकी विलम्ब अम्ब दोष दुख जनैगी १८० ॥

बारक बिलोकि बलि कीजै मोहिं आपनो ।
राय दशरथ के तू उथपन थापनो ॥
साहिब शरणपाल सबल न दूसरो ।
तेरो नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो ॥
वचन करम तेरे मेरे मन गड़े हैं ।
देखे सुने जाने मे जहान जेते बड़े हैं ॥
कौने कियो समाधान सनमान शिला को ।
भृगुनाथ सो ऋषी जितैया कौन लीला को ॥

मातु पितु बन्धु हित लोक वेद पाल को।
बोल को अचल नत करत निहाल को॥
संगही सनेह वश अधम असाधु को।
गीध शबरी को कहौ करिहै शराध को॥
निराधार को अधार दीन को दयालु को।
मीत कपि केवट रजनिचर भालु को॥
रङ्क निरगुणी नीच जितने निवाजे हैं।
महाराज सुजन समाज ते बिराजे हैं॥
सांची विरदावली न बढ़ि कहि गई है।
शीलसिन्धु ढील तुलसी की बार भई है १८१॥
केहू भांति कृपासिन्धु मेरी ओर हेरिये।
मोको और ठौर न सुटेक एक तेरिये॥
सहस शिला ते अति जड़मति भई है।
कासों कहौं कौने गति पाहनहि दई है॥
पद्‌रागयाग चहौं कौशिक ज्यों कियो है।
कलिमल खल देखि भारी भीत भियो है॥
करम कपीश बालि बली त्रास त्रस्यो हौं।
चाहत अनाथ नाथ तेरी बांह बस्यो हौं॥
महामोह रावण विभीषण ज्यों हयो है।
त्राहि तुलसीश त्राहि तिहूं ताप तयो है॥ १८२॥

नाथ गुणगाथ सुनि होत चित चाउ सो।
राम रीझिबे की जानौं भगति न भाउ सो॥
करम स्वभाव काल ठाकुर न ठांउ सो।
सुधन न सुतन सुमन न सुआउ सो॥
याचों जल जाहि कहै अमिय पियाउ सो।
कासौं कहौं काहू सों न बढ़त हिआउ सो॥
बाप बलि जाउँ आप करिये उपाउ सो।
तेरही निहारे परै हारेहू सुदाउ सो॥
तेरेही सुझाये सूझै असुझ सुझाउ सो।
तेरेही बुझाये बूझे अबुझ बुझाउ सो॥
नाम अवलम्ब अम्बु दीन मीन राउ सो।
प्रभुसों बनाइ कहौं जीह जरिजाउ सो॥
सब भांति बिगरी है एक सुबनाउ सो।
तुलसी सुसाहिबहि दियो है जनाउ सो॥ १८३॥

राग आसावरी।

राम प्रीति की रीति आप नीके जनियत हैं। बड़े की बड़ाई छोटे की छोटाई दूरि करैं ऐसी बिरदावलि बलि वेद मनियत हैं॥ गीध को कियो शराध भीलनी को खायो फल सोऊ साधु सभा भलीभांति भनियत हैं। रावरे आदरे लोक वेदहुँ आदरियत योग ज्ञानहूं ते गरू

गनियत हैं ॥ प्रभु की कृपा कृपालु कठिन कलिहूं काल महिमा समुझि उर आनियत हैं । तुलसी पराये वश भये रस अनरस दीनबन्धु द्वारे तेरे हठ ठनियत हैं १८४ ॥

रामनाम के जपे जाय जियकी जरनि । कलिकाल अपर उपाय ते अपाय भये जैसे तमनाशिबे को चित्र के तरनि ॥ करम कलाप परिताप पाप साने सब ज्यों सुफूल फूल तरु फोकट फरनि । दम्भ लोभ लालच उपासना विनाश नीके सुगति साधन भई उदर भरनि ॥ योग न समाधि निरुपाधि न विराग ज्ञान बचन विशेष वेष कबहूं न करनि । कपट कुपथ कोटि कहनि रहनि खोटि सकल सराहैं निज निज आचरनि ॥ मरत महेश उपदेश हैं कहा करत सुरसरि तीर काशी धरमधरनि । रामनामको प्रताप हर कहैं जपैं आप युग युग जानै जग वेदहूं बरनि ॥ मति रामनामही सों रति रामनामही सों गति रामनामही की विपति हरनि । रामनाम सों प्रतीति प्रीति राखै कबहुंक तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि १८५ ॥

लाज न लागत दास कहावत ।

सो आचरण बिसारि शोच तजि जो हरि तुमकहँ भावत ॥

सकल संग तजि भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत ।

मो सम मन्द महाखल पामर कौन यतन तेहि पावत ॥

हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहिं जनावत।
जेहि सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत॥
जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रय ताप बुझावत।
तहूं गये मद मोह लोभ अति सरगहु मिटत नसावत॥
भवसरिता कहँ नाव संत यह कहि औरनि समुझावत।
हौं तिन सों हरि परमबैर करि तुमसों भलो मनावत॥
नाहिंन और ठौर मो कहँ ताते हठि नातो लावत।
राखु शरण उदारचूड़ामणि तुलसिदास गुण गावत १८६॥
कौन यतन बिनती करिये।
निज आचरण विचारि हारि हिय मानि जानि डरिये॥
जेहि साधन हरि द्रवहु जानि जन सो हठि परिहरिये।
जाते विपतिजाल निशि दिन दुख तेहि पथ अनुसरिये॥
जानतहूं मन कम वचन परहित कीन्हें तरिये।
सो विपरीत देखि परसुख बिनु कारणही जरिये॥
श्रुति पुराण सबको मत यह सतसंग सुदृढ़ धरिये।
निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिन्हहिं न आदरिये॥
सन्तत सोइ प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये।
कहो अब नाथ कौन बल ते संसार शोक हरिये॥
जब कब निज करुणास्वभाव त द्रवहु तो निस्तरिये।
तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पचिपचि मरिये १८७॥

ताहि ते आयों शरण सबेरे।
ज्ञान विराग भक्ति साधन कछु सपनेहु नाथ न मेरे॥
लोभ मोह मद क्रोध बोधरिपु फिरत रैनि दिन घेरे।
तिनहिं मिले मन भयो कुपथरत फिरै तिहारेहि फेरे॥
दोषनिलय यह विषय शोकप्रद कहत संत श्रुति टेरे।
जानतहूं अनुराग तहां अति सो हरि तुम्हरेहि प्रेरे॥
विष पियूष सम करहु अग्नि हिम तारिसकहु बिनु बेरे।
तुम सम ईश कृपालु परमहित पुनि न पाइहौं हेरे॥
यह जिय जानि रहौं सब तजि रघुबीर भरोसे तेरे।
तुलसिदासयहिविपति बागुरो तुमसों बनिहि निबेरे १८८॥
मैं तू अब जान्यो संसार।
बांधि न सकहि मोहिं हरि के बल प्रकट कपटआगार॥
देखतही कमनीय कछु नाहिंन पुनि पुनि किये विचार।
ज्यों कदलीतरु मध्य निहारत कबहुँ न निकरत सार॥
तेरे लिये जनम अनेक मैं फिरत न पायों पार।
महामोह मृगजल सरिता महँ बोखो हौं बारहिं बार॥
सुनु खल छल बल कोटि किये वश होहिं न भक्तउदार।
सहित सहाय तहां बसि अब जेहि हृदय न नन्दकुमार॥
तासों करहु चातुरी जो नहिं जाने मर्म तुम्हार।
सो परि मरै डरै रजु अहिते बूझै नहिं व्यवहार॥

निजहित सुनु शठ हठ न करहि जो चहहि कुशल परिवार।
तुलसिदासप्रभुकेदासन्ह तजि भजहि जहां मदमार १८९॥

राग गौरी।

राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे।
नहिं तो भव बेगारि महँ परिहौ छूटत अति कठिनाई रे॥
बांस पुरान साज सब अठकठ सरल तिकोन खटोला रे।
हमहिं दिहलकरि कुटिल करमचँद मंद मोल बिनु डोला रे॥
विषम कहार मार मदमाते चलहिं न पांव बटोरा रे।
मंद बिलंद अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे॥
कांट कुराय लपेटन लोटन ठांवहिं ठांव बझाऊ रे।
जसजस चलिय दूरि तसतस निज बास न भेंट लगाऊ रे॥
मारग अगम सङ्ग नहिं संबल नांव गांव कर भूला रे।
तुलसिदास भव त्रास हरहु अब होहु राम अनुकूला रे१९०॥

सहज सनेही राम सों तैं कियो न सहज सनेह।
ताते भवभाजन भयो सुनु अजहुँ सिखावन येह॥
ज्यों मुख मुकुर विलोकिये अरु चित न रहै अनुहारि।
त्यों सेवतहु न आपने ये मातु पिता सुत नारि॥
दै दै सुमन तिल बासिकै अरु परिहरि रस लेत।
स्वारथहित भूतल भरे मन मेचक तनु सेत॥
करि बीत्यो अब करत हौं करिबे हित मीत अपार।

कबहुँ न कोउ रघुवीर सों नेह निबाहनहार ॥
जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहिंचानि।
ताते कछु समुझै नहीं कहा लाभ कह हानि ॥
सांचो जान्यो झूंठ कै झूंठे कहँ सांचो जानि।
को न गयो को न जात है को न जैहै करि हित हानि ॥
वेद कह्यो बुध कहत हैं अरु हौंहुँ कहतहौं टेरि।
तुलसी प्रभु सांचो हितू तू हियेकी आंखिनहेरि १६१ ॥
एक सनेही सांचिलो केवल कोशलपालु।
प्रेमकनौड़ो राम सों नहिं दूसरो दयालु ॥
तनु साथी सब स्वारथी सुर व्यवहार सुजान।
आरत अधम अनाथ हित को रघुवीर समान ॥
नाद निठुर समचर शिखी सलिल सनेह न शूर।
शशि सरोग दिनकर बड़े पयद प्रेमपथ क्रूर ॥
जाको मन जासों बँध्यो ताको सुखदायक सोइ।
सरल शील साहब सदा सीतापति सरिस न कोइ ॥
सुनि सेवा सहि को करै परिहरै को दूषण देखि।
केहि दिवान दिन दीन को आदर अनुराग विशेखि ॥
खग शबरी पितु मातु ज्यों माने कपि को किये मीत।
केवट भेंट्यो भरत ज्यों ऐसो को कहु पतित पुनीत ॥
देइ अभागहि भाग को को राखे शरण सभीत।

वेद विदित विरदावली कवि कोविद गावत गीत ॥
कैसेउ पामर पातकी जेहि लई नाम की ओट ।
गांठी बांध्यो राम सो परख्यो न फेरि खर खोट ॥
मन मलीन कलि किलविषी होत सुनत जासु कृत काज ।
सो तुलसी कियो आपनो रघुवीर गरीबनिवाज १९२ ॥
जो पै जानकीनाथ सों नातो नेह न नीच ।
स्वारथ परमारथ कहां कलि कुटिल बिगोयो बीच ॥
धर्म वर्ण आश्रमनि के पैयत पोथिहि पुराण ।
करतब बिनु वेष देखिये ज्यों शरीर बिनु प्राण ॥
वेद विदित साधन सबै सुनियत दायक फल चारि ।
राम प्रेम बिनु जानिबो जैसे सर सरिता बिनु वारि ॥
नाना पथ निर्वाण के नाना विधान बहु भांति ।
तुलसी तू मेरे कहे जपु राम नाम दिन राति १९३ ॥
अजहुँ आपने राम के करतब समुझत हित होय ।
कहँ तू कहँ कोशलधनी तोकों कहा कहत सब कोय ॥
रीझि निवाज्यो कबहिं तू कब खीझि दई तोहिं गारि ।
दर्पण वदन निहारिकै सुविचार मान हिय हारि ॥
बिगरी जन्म अनेक की सुधरत पल लगै न आधु ।
पाहि कृपानिधि प्रेम सों कहे को न राम कियो साधु ॥
बालमीकि केवट कथा कपि भील भालु सनमान

सुनि सन्मुख जो न राम सों तिहि को उपदेशहि ज्ञान ॥
का सेवा सुग्रीव की का प्रीति रीति निरबाहु ।
जासु बन्धु बध्यो व्याध ज्यों सो सुनत सोहात न काहु ॥
भजन बिभीषण को कहा फल कहा दियो रघुराज ।
राम गरीबनिवाज के बड़ी बांह बोल की लाज ॥
जपहि नाम रघुनाथ को चर्चा दूसरी न चालु
सुमुख सुखद साहिब सुधी समरथ कृपालु नत पालु ॥
सजल नयन गद्गद गिरा गहबर मन पुलक शरीर ।
गावत गुणगण राम के केहि की न मिटी भव भीर ॥
प्रभु कृतज्ञ सर्वज्ञ हैं परिहरु पाछिली गलानि ।
तुलसी तोसों राम सों कछु नइ न जानपहिंचानि १९४ ॥
जोअनुरागन रामसनेहीसों । तौलह्योलाहुकहानरदेहीसों ॥
जो तनु धरि परिहरि सब सुख भए सुमति रामअनुरागी ।
सो तनु पाइ अघाइ किये अघ अवगुण अधम अभागी ॥
ज्ञान विराग योग जप तप मख जग मुद मग नहिं थोरे ।
राम प्रेम बिनु नेम जाय जैसे मृगजल जलधि हिलोरे ॥
लोक विलोकि पुराण वेद सुनि समुझि बूझि गुरु ज्ञाना ।
प्रीति प्रतीति रामपदपङ्कज सकल सुमङ्गल खानी ॥
अजहुँ जानि जियहारि मानि हिय होय पलक महँ नीको ।
सुमिरुसनेहसहित हित रामहिं मानुमतो तुलसीको १९५ ॥

बलि जाउँ हौं राम गुसांई। कीजिये कृपा आपनीनाईं॥
परमारथ सुरपुर साधन सब स्वारथ सुखद भलाई।
कलि सकोप लोपी सुचाल निज कठिन कुचाल चलाई॥
जहँ जहँ चित चितवत हित तहँ नित नव विषाद अधिकाई।
रुचि भावती भभरि भागहिं समुहाहिं अमित अनभाई॥
आधि मगन मन व्याधि विकल तनु वचन मलीन झुठाई।
येतेहुँ पर तुमसों तुलसीकी प्रभु सकल सनेह सगाई १६६॥

काहे को फिरत मन करत बहु यतन मिटै न दुख विमुख रघुकुलवीर। कीजै जो कोटि उपाय त्रिविध ताप न जाय कह्यो जो भुज उठाय मुनिवर कीर॥ सहज टेव बिसारि तुहीं धौं देखु विचारि मिल न मथत वारि घृत बिनु क्षीर। समुझि तजहि भ्रम भजहि पद युगम सेवत सुगम गुण गहन गँभीर॥ आगम निगम ग्रन्थ ऋषि मुनि सुर सन्त सबही को एक मत सुनु मति धीर। तुलसिदास प्रभु बिनु प्यास मरै पशु यद्यपि है निकट सुरसरि तीर १६७॥

नाहिंन चरणरति ताहि ते सहौं बिपति कहत श्रुति सकल मुनि मतिधीर। बसै जो शशि उछङ्ग सुधास्वादित कुरंग ताहि क्यों भ्रम निरखि रविकर नीर॥ सुनिय नाना पुराण मिटत नहा अज्ञान पढ़िय न समुझिय जिमि खग कीर। बूझत बिनहिं पास सेमरसुमन आस करत चरत

तेइ फल बिनु हीर ॥ कछु न साधन सिधि जानौं न निगमविधि नहिं जप तप बश मन न समीर। तुलसिदास भरोस परमकरुणाकोस प्रभु हरिहैं विषम भव भीर १६८॥

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाय हरिपद भजु करम वचन अरु हीते ॥
सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते ॥
सुत वनितादि जानि स्वारथरत करु न नेह सबही ते।
अन्तहु तोहिं तजैंगे पामर तू न तजहि अबही ते ॥
अब नाथहि अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुराशा जीते।
बुझै न कामअग्नि तुलसी कहुँ विषयभोग बहु घी ते १६९॥

काहे को फिरत मूढ़ मन धायो।
तजि हरिचरण सरोज सुधारस रविकर जल लय लायो ॥
त्रियग देव नर असुर अपर जग योनि सकल भ्रमि आयो।
गृह वनिता सुत बन्धु भये बहु मातु पिता जिन्ह जायो ॥
जाते निरय निकाय निरन्तर सोउ न तोहिं सिखायो।
तव हित होय कटहिं भवबन्धन सो मगु तोहिं न बतायो ॥
अजहुँ विषय कहँ यतन करत यद्यपि बहु विधि डहकायो।
पावक काम भोगघृतते शठ कैसे परत बुझायो ॥
विषयहीन दुख मिले विपतिअति सुखसपनेहुँ नहिं पाय।

उभय प्रकार प्रेतपावक ज्यों धन दुखप्रद श्रुति गायो॥
क्षण क्षण क्षीण होत जीवन दुर्लभ तनु वृथा गँवायो।
तुलसिदासहरिभजहिआशतजिकालउरगजग खायो२००॥
तांबे सों पीठि मनहुँ तनु पायो।
नीच मीच जानत न शीश पर ईश निपट बिसरायो॥
अवनि रवनि धन धाम सुहृद सुत के न इनहिं अपनायो।
काक भये गये सँग काके सब सनेह छल छायो॥
जिन्ह भूपनि जग जीति बाँधि यम अपनी बाँह बसायो।
तेऊ काल कलेऊ कीन्हे तू गिनती कब आयो॥
देखु विचारि सार का साँचो कहा निगम निज गायो।
भजहिनअजहुँसमुझितुलसीतेहिजेहिमहेशमनलायो२०१॥
लाभ कहा मानुष तनु पाये।
काय वचन मन सपनेहु कबहुँक घटत न काज पराये॥
जो सुख सुरपुर नरक गेह वन आवत बिनहिं बुलाये।
तेहि सुखकहँ बहु यतन करत मन समुझत नहिं समुझाये॥
परदारा परद्रोह मोहवश किये मूढ़ मन भाये।
गर्भवास दुखराशि यातना तीव्र विपति बिसराये॥
भय निद्रा मैथुन अहार सब के समान जग जाये।
सुरदुर्लभ तनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गँवाये॥
गई न निज पर बुद्धि शुद्ध ह्वै रहे न राम लय लाये।

तुलसिदास यहि अवसर बीतें का पुनिकै पछितायें२०२॥
काज कहा नरतनु धरि सारेउ।
पर उपकार सार श्रुति को सो धोखेउ में न विचारेउ॥
द्वैतमूल भय शूल शोक फल भवतरु टरै न टारेउ।
रामभजन तीक्षण कुठार लै सो नहिं काटि निवारेउ॥
संशय सिन्धु नाम बोहित भजि निज आतमा न तारेउ।
जन्म अनेक विवेकहीन बहुयोनि भ्रमत नहिं हारेउ॥
देखि आन की सहज सम्पदा द्वेषअनल मन जारेउ।
शम दम दया दीनपालन शीतलहिय हरि न सँभारेउ॥
प्रभु गुरु पिता सखा रघुपति में मन क्रम वचन बिसारेउ।
तुलसिदासयहि आशशरणराखिहि जेहिगीधउधारेउ२०३॥
श्रीहरि गुरु पदकमल भजहु मन तजि अभिमान।
जेहि सेवत पाइय हरि सुखनिधान भगवान॥
परिवा प्रथम प्रेम बिनु राम मिलन अति दूरि।
यद्यपि निकट हृदय निज रहे सकल भरि पूरि॥
दुइज द्वैत मति छांड़ि चरहि महिमण्डल धीर।
विगत मोह माया मद हृदय सदा रघुवीर॥
तीज त्रिगुण पर परम पुरुष श्रीरमण मुकुन्द।
गुण स्वभाव त्यागे बिनु दुर्लभ परमानन्द॥
चौथि चारि परिहरहु बुद्धि मन चित अहकार।

विमल विचार परमपद निज सुख सहज उदार ॥
पांचइ पांच परस रस शब्द गन्ध अरु रूप।
इन्ह कर कहा न कीजिये बहुरि परब भवकूप ॥
छठि षटवर्ग करिय जय जनकसुतापति लागि।
रघुपतिकृपा बारि बिनु नहिं बुताइ लोभागि ॥
सातैं सप्तधातु निर्मित तनु करिय विचार।
तेहि तनु केर एक फल कीजिय पर उपकार ॥
आठइँ आठ प्रकृति पर निर्विकार श्रीराम।
केहि प्रकार पाइय हरि हृदय बसहिं बहु काम ॥
नवमी नवद्वार पर बसि जेहि न आपु भल कीन्ह।
ते नर योनि अनेक भ्रमत दारुण दुख दीन्ह ॥
दशइँ दशहुँ कर संयम जो न करिय जिय जानि।
साधन वृथा होइँ सब मिलहिं न शारँगपानि ॥
एकादशी एक मन वशकै सेवहु जाइ।
सोइ व्रतकर फल पावै आवागमन नशाइ ॥
द्वादशि दान देहु अस अभय होय त्रैलोक।
परहित निरत सो पारन बहुरि न व्यापै शोक ॥
तेरसि तीन अवस्था तजहु भजहु भगवन्त।
मन क्रम वचन अगोचर व्यापक व्याप्य अनन्त ॥
चौदशि चौदह भुवन चर अचर रूप गोपाल।

भेद गये बिनु रघुपति अति न हरहिं जगजाल ॥
पूनो प्रेम भक्तिरस हरिरस जानहिं दास।
सम शीतल गतमान ज्ञानरत विषय उदास ॥
त्रिविध शूल होलिय जालिय खेलिय अब फागु।
जो जिय चहसि परम सुख तौ यहि मारग लागु॥
श्रुति पुराण बुध सम्मत चांचरि चरित मुरारि।
करि बिचार भव तरिय परिय न कबहुँ यमधारि॥
संशयशमन दमनदुख सुखनिधान हरि एक।
साधुकृपा बिनु मिलहिं न करिय उपाय अनेक॥
भवसागर कहँ नाव शुद्ध सन्तन के चरण।
तुलसिदासप्रयास बिनु मिलहिं रामदुखहरण २०४॥

राग कान्हरा।

जो मन लागै रामचरण अस। देह गेह सुत वित कलत्र महँ मगन होत बिनु यतन किये जस॥ द्वन्द्वरहित गतमान ज्ञानरत विषय विरत खटाइ नाना कस। सुखनिधान सुजान कोशलपति ह्वै प्रसन्न कहु क्यों न होहिं बस॥ सर्वभूतहित निर्व्यलीक चित भक्ति प्रेम दृढ़ नेम एकरस। तुलसिदास यह होय तबहिं जब द्रवैं ईश जेहि हत्यो शीशदश २०५॥

जो मन भज्यो चहै हरि सुरतरु। तौ तजि विषय विकार सार भजु अजहूं जो मैं कहा सोइ करु॥ समसन्तोष

विचार विमलअति सतसङ्गति ए चारि दृढ़ करि धरु। काम क्रोध अरु लोभ मोह मद राग द्वेष निशेषकरि परिहरु॥ श्रवण कथा मुख नाम हृदय हरि शिर प्रणाम सेवाकर अनुसरु। नैनन निरखि कृपासमुद्र हरि अग जग रूप भूप सीतावरु॥ यहै भक्ति वैराग्य ज्ञान यह हरि तोषन यह शुभव्रत आचरु। तुलसिदास शिवमत मारग यह चलत सदा सपनेहुँ नाहिंन डरु २०६॥

नहिंन आर कोउ शरण लायक दूजो श्रीरघुपति सम विपति निवारन। काको सहजस्वभाव सेवकवश काहि प्रणत पर प्रीति अकारन॥ जन गुण अलप गनत सुमेरु करि अवगुण कोटि विलोकि बिसारन। परमकृपालु भक्त चिन्तामणि विरद पुनीत पतितजन तारन॥ सुमिरत सुलभ दासदुख सुनि हरि चलत तुरत पटपीत सँभारन। साखि पुराण निगम आगम सब जानत द्रुपदसुता अरु वारन॥ जाको यश गावत कवि कोविद जिनके लोभ मोह मद मारन। तुलसिदास तजि आश सकल भजु कोशलपति मुनिवधू उधारन २०७॥

भजिबे लायक सुखदायक रघुनायक सरिस शरणप्रद दूजो नाहिंन। आनँदभवन दुखदवन शोकशमन रमा-रमण गुण गनत सिराहिं न॥ आरत अधम कुजाति

कुटिलखल पतित सभीत कहूं जे समाहिं न। सुमिरत नाम विवशहूं वारक पावत सो पद जहां सुर जाहिं न॥ जाके पदकमल लुब्ध मुनिमधुकर विरति जे परमसुगतिहु लुभाहिं न। तुलसिदास शठ तेहि न भजसि कस कारुणीक जो अनाथहि दाहिन २०८॥

राग कल्याण।

नाथ सों कौन विनती कहि सुनावों। त्रिविध अनगणित अवलोकि अघ आपने शरण सम्मुख होत सकुचि शिर नावों॥ विरचि हरि भक्त को वेष वरटाटिका कपटदल हरितपल्लवनि छावों। नामलगि लाइ लासा ललित वचन कहि व्याध ज्यों विषय विहँगनि बझावों॥ कुटिल शत कोटि मेरे रोम पर वारियहि साधुगनतीसों पहिलहिं गनावों। परमवर्बर खर्ब गर्व पर्वत चढ्यो अज्ञ सर्वज्ञ जनमणि जनावों॥ सांच किधौं झूंठ मोको कहत कोउ कोउ राम रावरो होहुँ तुमरोइ कहावों। विरद की लाज करि दासतुलसीहि देव लेहु अपनाइ अब देहु जनि बावों २०९॥

नाहिंनो नाथ अवलम्ब मोहिं आन की। कर्म मन वचन प्रण सत्य करुणानिधे एकगति राम भवदीय पदत्रानकी॥ कोह मद मोह ममतायतन जानि मन बात नहिं जात कहि

ज्ञान विज्ञान की। कामसङ्कल्प उर निरखि बहु बासनहिं आश नहिं एकहू आंक निर्वान की॥ वेदबोधित कर्म धर्म बिनु अगमअति यदपि जिय लालसा अमरपुर जान की। सिद्ध सुर मनुज दनुजादि सेवत कठिन द्रवहिं हठयोग दिये भोगबलि प्रान की॥ भक्ति दुर्लभ परम शम्भु शुक मुनि मधुप प्यास पदकंज मकरंद मधुपानकी। पतितपावन सुनत नाम विश्रामकृत भ्रमत पुनिसमुझि चित ग्रंथि अभिमान की॥ नरक अधिकार मम घोर संसार तमकूप कहि भूप मोहिं शक्ति आपान की। दासतुलसी सोऊ त्रास नहिं गनत मन सुमिरि गुह गीध गजज्ञाति हनुमान की २१०॥

और कहँ ठौररघुवंशमणि मेरे। पतितपावन प्रणतपाल अशरणशरण बांकुरे बिरद बिरुदैत केहि केरे॥ समुझि जिय दोष अति रोष करि राम जेहि करत नहिं कान बिनती बदन फेरे। तदपि है निडर हौं कहौं करुणासिंधु क्यों बरहि जात सुनि बात बिनु हेरे॥ मुख्य रुचि होत बसिबे को पुर रावरे राम तेहि रुचिहि कामादिगण घेरे। अगम अपवर्ग अरु स्वर्ग सुकृतैक फल नामबल क्यों बसों यमनगर नेरे॥ कतहुँ नहिं ठाउँ कहँ जाउँ कोशलनाथ दीन वितहीन हौं बिकल बिनु डेरे। दासतुलसि हि बास देहु अब करि कृपा बसत जग गृध्र व्याधादि जेहि खेरे २११॥

कबहुँ रघुवंशमणि सो कृपा करहुगे। जेहि कृपा व्याध गज विप्र खल नर तरे तिनहिं सम मानि मोहिं नाथ उद्धरहुगे॥ योनि बहु जन्मि किय कर्म खल त्रिविध विधि अधम आचरण कछु हृदय नहिं धरहुगे। दीनहित अजित सर्वज्ञ समरथ प्रणतपाल चित मृदुल निजगुणनि अनुसरहुगे॥ मोह मद मान कामादि खलमंडली सकुल निर्मूल करि दुसह दुख हरहुगे। योग जप यज्ञ विज्ञान ते अधिक अति अमल दृढ़ भक्ति दै परमसुख भरहुगे॥ मन्दजनमौलिमणि सकल साधनहीन कुटिल मन मलिन जिय जानि जो डरहुगे। दासतुलसी वेद विदित विरदावली विमल यश नाथ केहि भाँति विस्तरहुगे २१२॥

राग केदारा।

रघुपति विपतिदवन।
परमकृपालु प्रणतप्रतिपालक पतित पवन॥
क्रूर कुटिल कुलहीन दीन अति मलिन यवन।
सुमिरत राम नाम पठये सब अपने भवन॥
गज पिंगला अजामिल से खल गने धौं कवन।
तुलसिदास प्रभु केहि न दीन गति जानकीरवन २१३॥
हरिसम आपदाहरन।
नहिं कोउ सहज कृपालु दुसह दुखसागर तरन॥

गज निज बल अवलोकि कमल गहि गयो शरन।
दीन वचन सुनि चले गरुड़ तजि सुनाभधरन॥
द्रुपदसुता कहँ लग्यो दुशासन नगन करन।
हा हरि पाहि कहत पूरे पट विविध बरन॥
इहै जानि सुर नर मुनि कोविद सेवत चरन।
तुलसिदास प्रभु को न अभय कियो नृग उद्धरन २१४॥
ऐसी कौन प्रभु की रीति।
विरद हेत पुनीत परिहरि पांवरनि पर प्रीति॥
गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाइ।
मातु की गति दई ताहि कृपालु यादवराइ॥
काममोहित गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन्ह।
जगतपिता विरंचि जिन्हके चरण की रज लीन्ह॥
नेम ते शिशुपाल दिनप्रति देत गनि गनि गारि।
कियो लीन सो आपु में हरि राजसभा मँझारि॥
व्याध चित दै चरण मार्यो मूढ़मति मृग जानि।
सो सदेह स्वलोक पठयो प्रकट करि निज बानि॥
कौन तिन्हकी कहै जिनके सुकृत अरु अघ दोउ।
प्रकट पातकरूप तुलसी शरण राख्यो सोउ २१५॥
श्रीरघुबीर की यह बानि।
नीचहूं सों करत नेह सुप्रीति मन अनुमानि॥

परमअधम निषाद पांवर कौन ताकी कानि।
लियो सो उरलाइ सुत ज्यों प्रेम की पहिंचानि॥
गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि।
जनक ज्यों रघुनाथ ता कहँ दियो जल निज पानि॥
प्रकृतिमलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण खानि।
खात ताके दिये फल अति रुचि बखानि बखानि॥
रजनिचर अरु रिपु विभीषण शरण आयो जानि।
भरत ज्यों उठि ताहि भेंटत देह दशा भुलानि॥
कौन सौम्य सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि।
किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि॥
राम सहज कृपालु कोमल दीनहित दिन दानि।
भजहि ऐसे प्रभुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि २१६॥
हरि तजि और भजिये काहि।
नाहिंनै कोउ राम सों ममता प्रणत पर जाहि॥
कनककशिपु विरंचि को जन कर्म मन अरु बात।
सुतहि दुखवत विधि न बरज्यो काल के घर जात॥
शम्भु सेवक जान जग बहु बार दिय दशशीश।
करत राम विरोध सो सपनेहु न हटक्यो ईश॥
और देवन की कहा कहौं स्वारथहि के मीत।
कबहुँ काहु न राखि लियो कोउ शरण गये सभीत॥

को न सेवत देत सम्पति लोकहू यह रीति।
दासतुलसी दीन पर यक रामही की प्रीति २१७॥
जो पै दूसरो कोउ होइ।
तौ हौं बारहि बार प्रभु कत दुख सुनावौं रोइ॥
काहि ममता दीन पर काको पतितपावन नाम।
पापमूल अजामिलहि केहि दियो अपनो धाम॥
रहे शम्भु विरंचि सुरपति लोकपाल अनेक।
शोकसरि बूड़त करीशहि दई काहु न टेक॥
विपुल भूपतिसदसि महँ नर नारि कह्यो प्रभु पाहि।
सकल समरथ रहे काहु न वसन दीन्हों ताहि॥
एक मुख क्यों कहौं करुणासिन्धु के गुणगाथ।
भक्तहित धरि देह काह न कियो कोशलनाथ॥
आपसे कहुँ सौंपिये मोहिं जोपै अतिहि घिनात।
दासतुलसी और विधि क्यों चरण परिहरि जात २१८॥
कबहिं देखाइहौ हरि चरण।
शमन सकल कलेश कलिमल सकल मंगल करण॥
शरदभव सुन्दर तरुणतर अरुण वारिज वरण।
लच्छि लालित ललित करतल छवि अनूपम धरण॥
गंगजनक अनंगअरिप्रिय कपटबटु बलि छरण।
विप्रतिय नृग वधिक के दुख दोष दारुण दरण॥

सिद्ध सुर मुनि वृन्द बन्दित सुखद सब कहँ शरण।
सकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारण तरण॥
कृपासिंधु सुजान रघुबर प्रणत आरति हरण।
दरश आश पियास तुलसीदास चाहत मरण २१९॥

द्वारे हौं भोरही को आज।
रटत ररिहा आरि और न कौरही के काज॥
कलि कराल दुकाल दारुण सब कुभांति कुसाज।
नीच जन मन ऊंच जैसो कोढ़ में की खाज॥
हहरि हिय मैं सदय बूझ्यों जाइ साधु समाज।
मोहुँ से कहु कतहुँ कोउ तिन कह्यो कोशलराज॥
दीनता दारिद दलै को कृपावारिधि बाज।
दानि दशरथराय के सुत बानइत शिरताज॥
जनम को भूखो भिखारी हौं गरीबनेवाज।
पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भक्ति सुधा सुनाज २२०॥

करिय सँभार कोशलराय।
और ठौर न और गति अवलम्ब नाम विहाय॥
बूझि अपनी आपनो हित आप बाप न माय।
राम राउर नाम गुरु सुर स्वामि सखा सहाय॥
रामराज न चले मानसमलिन के छलछाय।
कोप तेहि कलिकाल कायर सु यहि घालत घाय॥

लेत केहरि सों वयर ज्यों भेक हनि गोमाय।
त्योंहि रामगुलाम जानि निकाम देत कुदाय॥
अकनि याके कपट करतब अमित अनय अपाय।
सुखी हरिपुर बसत होत परीक्षितहि पछिताय॥
कृपासिन्धु विलोकिये जन मन कि सांसति साय।
शरण आयो देव दीनदयालु देखन पाय॥
निकट बोलि न बरजिये बलिजाऊँ हनिय न हाय।
देखिहैं हनुमान गोमुख नाहरनि के न्याय॥
अरुणमुख भ्रूविकट पिङ्गलनयन रोष कषाय।
वीर सुमिरि समीर को हटिहै चपल चित चाय॥
विनय सुनि विहँसे अनुज सों वचन के कहि भाय।
भली कही कह्यो लषणहूं हँसि बने सकल बनाय॥
दई दीनहिं दादि सो सुनि सुजन सदन बधाय।
मिटे सङ्कट शोच पोच प्रपञ्च पाप निकाय॥
पेखि प्रीति प्रतीति जन पर अगुण अनघ अमाय।
दासतुलसी कहत मुनिगण जयति जय उरगाय २२१॥
नाथ कृपाही को पंथ चितवत दीन हौं दिन राति।
होइधौं केहि काल दीनदयालु जानि न जाति॥
सुगुण ज्ञान विराग भक्ति सुसाधननि की पांति।
भजे विकल विलोकि कलि अघ अवगुणनि की थाति॥

अति अनीति कुरीति भइ भुइँ तरणिहूं ते ताति ।
जाउँ कहँ बलिजाउँ कहूँ ना ठाउँ मति अकुलाति ॥
आप सहित न आपनो कोउ बाप कठिन कुभांति ।
श्यामघन सींचिये तुलसी शालि सफल सुखाति २२२ ॥
बलिजाउँ और कासों कहौं ।
सद्गुणसिंधु स्वामि सेवकहित कहुँ न कृपानिधि सों लहौं ॥
जहँ जहँ लोभ लोल लालचवश निजहित चित चाहनि चहौं ।
तहँ तहँ तरणि तकत उलूक ज्यों भटकि कुतरुकोटर गहौं ॥
काल स्वभाव करम विचित्र फलदायक सुनि शिर धुनि रहौं ।
मोको तौ सकल सदा एकहि रस दुसहदाह दारुण दहौं ॥
उचित अनाथ होइ दुखभाजन भयो नाथ किङ्कर न हौं ।
अब रावरो कहाय न बूझिये शरणपाल सांसति सहौं ॥
महाराज राजीवविलोचन मगन पाप संताप महौं ।
तुलसी प्रभु जब तब जेहि तेहि विधि राम निबाहे निबहौं २२३॥
आपनो कबहूं करि जानिहो ।
राम गरीबनेवाज राजमणि विरद लाज उर आनि हो ॥
शीलसिन्धु सुन्दर सबलायक समरथ सद्गुण खानि हो ।
पाल्यो है पालत पालहुगे प्रणत प्रेम पहिंचानि हो ॥
वेद पुराण कहत जग जानत दीनदयालु दीनदानि हो ।
कहि आवत बलि जाउँ मनहुँ मेरी बार बिसारे बानि हो ॥

आरत दीन अनाथनि के हित मानत लौकिक कानि हो।
है परिणाम भलो तुलसी को शरणागत भय भानि हो२२४॥
रघुवरहि कबहुँ मन लागिहै।
कुपथ कुचाल कुमति कुमनोरथ कुटिल कपट कब त्यागिहै॥
जानत गरल अमिय विमोह वश अमिय गनत करि आगिहै।
उलटी रीति प्रीति अपने की तजि प्रभुपद अनुरागिहै॥
आखर अर्थ मंजु मृदु मोदक रामप्रेमपाग पागिहै।
ऐसे गुण गाय रिझाय स्वामि सों पाय है जो मुँह मांगिहै॥
तू यहि विधि सुख शयन सोइहै जिय की जरनि भूरि भागिहै।
रामप्रसाद दासतुलसी उर रामभक्तियोग जागिहै २२५॥
भरोसो और आइहै उर ताके।
कै कहूं लहै जो रामहि सो साहिब कै अपनो बल जाके॥
कै कलिकाल कराल न सूझत मोह मार मद छाके।
कै सुनि स्वामि स्वभाव न रह्यो चित जो हित सब अँग थाके॥
हौं जानत भलिभांति अपनपौ प्रभु सों सुन्यो न शाके।
उपल भील खग मृग रजनीचर भले भये करतब काके॥
मोको भलो रामनाम सुरतरु सो भयो प्रसाद कृपालु कृपाके।
तुलसी सुखी निशोच राज ज्यों बालक माय बबाके २२६॥
भरोसो जाहि दूसरो सो करो।
मोको तौ राम को नाम कलपतरु कलि कल्याण फरो॥

कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सो सब भांति खरो।
मोहिं तो सावन के अंधहि ज्यों सूझत रंग हरो॥
चाटत रहौं श्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो।
सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेखत परसि धरो॥
स्वारथ औ परमारथ हू को नहिं कुञ्जरो नरो।
सुनियत सेतु पयोधि पषाननि करि कपिकटक तरो॥
प्रीति प्रतीति जहां जाकी तहँ ताको काज सरो।
मेरे तौ माय बाप दोउ आखर हौं शिशु अरनि अरो॥
शङ्कर साखि जो राखि कहा कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो रामनामहि ते तुलसिहि समुझि परो २२७॥
नाम राम रावरोई हितु मेरे।
स्वारथ परमारथ साथिन सों भुज उठाय कहौं टेरे॥
जननीजनक तज्यो जन्मि कर्मबिनु विधिहूं सृज्योहा अवढेरे।
मोह स कोउ कोउ कहत रामहिं को सो प्रसंग केहि केरे॥
फिर्यों ललात बिनु नाम उदर लगि दुखउ दुखित मोहिं हेरे।
नाम प्रसाद लहत रसाल फल अब हौं बबुर बहेरे॥
साधत साधु लोक परलोकहु सुनि गुनि यतन घनेरे।
तुलसी को अवलम्ब नाम को एक गांठि कइ फेरे २२८॥
प्रिय राम नाम ते जाहि न रामो।
ताको भलो कठिन कलिकालहुँ आदि मध्य परिणामो॥

सकुचत समुझि नाममहिमा मद लोभ मोह कोह कामो।
राम नाम जप निरत सुजन पर करत छांह घोर घामो॥
नामप्रभाव सही जो कहै कोउ शिला सरोरुह जामो।
जो सुनि सुमिरि भाग भाजन भई सुकृतशील भीलभामो॥
बालमीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामो।
उलटे पलटे नाम महातम गुञ्जनि जितो ललामो॥
राम ते अधिक नाम करतब जेहि किये नगर गत गामो।
भये बजाइ दाहिने जो जपि तुलसिदास से बामो २२९॥
गरैगी जीह जो कहौं और को हौं।
जानकीजीवन जन्म जन्म जग ज्यायो तिहारेहि कौर को हौं॥
तीनि लोक तिहुँ काल न देखत सुहृद रावरे जोर को हौं।
तुम सों कपट करि कल्प कल्प कृमि ह्वैहौं नरकघोर को हौं॥
कहा भयो जो मन मिलि कलिकालहि कियो भुरूट भौंर को हौं।
तुलसिदासशीतलनितयहिबलबड़े ठिकानेठौर को हौं२३०॥
अकारण को हितू और को है।
बिरद गरीबनिवाज कौन को भौंह जासु जन जोहै॥
छोटो बड़ो चहत सब स्वारथ जो बिरंचि बिरचो है।
कोल कुटिल कपि भालु पालिबो कौन कृपालुहि सोहै॥
काको नाम अनख आलस कहे अघ अवगुणनि बिछोहै।
को तुलसीसे कुसेवक संग्रह्यो शठ सब दिन साईं द्रोहै२३१॥

और मोहिं को है काहि कहिहौं।
रंकराज ज्यों मन को मनोरथ जेहि सुनाय सुख लहिहौं ॥
यमयातना योनि संकट सब सहे दुसह अरु सहिहौं।
मोको अगम सुगम तुम को प्रभु तउ फल चारि न चहिहौं ॥
खेलिबे को खग मृग तरु किङ्कर ह्वै रावरो राम हौं रहिहौं।
यहि नाते नरकहु सचु पैहौ या बिनु परमपदहुँ दुख दहिहौं ॥
इतनी जिय लालसा दास के कहत पानहीं गहिहौं।
दीजै वचन कि हृदय आनिये तुलसीको पन निर्बहिहौं २३२॥
दीनबन्धु दूसरो कहँ पावों।
को तुम बिनु पर पीर पाइ है कहि दीनता सुनावों ॥
प्रभु अकृपालु कृपालु अलायक जहँ जह चितहिं डुलावों।
इहै समुझि सुनि रहौं मौनही कहि भ्रम कहा गँवावों ॥
गोपद बुड़िबे योग करम करौ बातनि जलधि थहावों।
अति लालची काम किङ्कर मन मुख रावरो कहावों ॥
तुलसी प्रभु जिय की जानत सब अपनो कछुक जनावों।
सो कीजै जेहि भांति छांड़ि छल द्वार परो गुण गावों २३३ ॥
मनोरथ मन को एक भांति।
चाहत मुनि मन अगम सुकृत फल मनसा अघ न अघाति ॥
कमभूमि कलि जन्म कुसंगति मति विमोह मद माति।
करत कुयोग कोटि क्यों पैयत परमारथपद शांति ॥

सेइ साधु गुरु सुनि पुराण श्रुति बूझेउ राग बाजी तांति।
तुलसी प्रभु स्वभाव सुरतरुसो ज्यों दर्पण मुख कांति २३४॥
जन्म गयो बादिहि वर बीति।
परमारथ पाले न पर्‌यो कछु अनुदिन अधिक अनीति॥
खलतखात लड़कपन गा चलि यौवन युवतिन्ह लियो जीति।
रोग वियोग शोक श्रम संकुल बड़ा वय वृथहि अतीति॥
राग रोष ईर्षा विमोह वश रुची न साधु समीति।
कहे न सुने गुणगण रघुपति के भइ न रामपद प्रीति॥
हृदय दहत पछिताय अनल अब सुनत दुसह भव भीति।
तुलसी प्रभु ते होइ सो कीजिय समुझि विरद की रीति २३५॥
ऐसेहि जन्म समूह सिराने।
प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तजि सेवत चरण बिराने॥
जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने।
सूखत वदन प्रशंसत तिन्ह कह हरि ते अधिक करि माने॥
सुख हित कोटि उपाय निरंतर करत न पायँ पिराने।
सदा मलान पन्थ के जल ज्यों कबहुँ न हृदय थिराने॥
यह दानता दूरि करिबे को अमित यतन उर आने।
तुलसी चित चिन्ता न मिटै बिनु चिन्तामणि पहिचाने २३६॥
जोपै जिय जानकीनाथ न जाने।
तौ सब कर्म धर्म श्रमदायक ऐसइ कहत सयाने॥

जे सुर सिद्ध मुनीश योगविद वेद पुराण बखाने।
पूजा लेत देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने॥
काको नाम धोखेहू सुमिरत पातकपुंज सिर
विप्र वधिक गज गृध्र कोटि खल कौन के पेट समाने॥
मेरु से दोष दूरि करि जन के रेणु से गुण उर आने।
तुलसिदासतेहिसकलआशतजि भजहिनअजहुँ अयाने २३७

काहे न रसना रामहिं गावहि।
निशि दिन पर अपवाद वृथा कत रटि रटि राग बढ़ावहि॥
नर मुख सुन्दर मन्दिर पावन बसि जनि ताहि लजावहि।
शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रविकरजल कहँ धावहि॥
काम कथा कलि कैरवचन्दिनि सुनत श्रवण दै भावहि।
तिनहिं हटकि कहि हरि कल कारति करण कलंक नशावहि॥
जातरूप मति युवति रुचिर मणि रचि रचि हार बनावहि।
शरणसुखद रविकुल सरोज रवि राम नृपहि पहिरावहि॥
वाद विवाद स्वाद तजि भजिहरि सरल चरित चित लावहि।
तुलसिदास भव तरहि तिहूंपुर तू पुनीत यश पावहि २३८॥

आपनो हित रावरे सों जोपै सूझै।
तौ जनु तनु पर अछत शीश सुधि क्यों कबन्ध ज्यों जूझै॥
निज अवगुण गुण राम रावरे लखि सुनि मति मन रूझै।
रहनिकहनि समुझनि तुलसीकी को कृपालु बिनु बूझै २३९॥

जाको हरि दृढ़ करि अंग करेउ ।
सोइ सुशील पुनीत वेदविद विद्या गुणनि भरेउ ॥
उत्पति पाण्डुसुतन की करणी सुनि सतपंथ डरेउ ।
ते त्रैलोक्य पूज्य पावन यश सुनि सुनि लोक तरेउ ॥
जो निज धर्म वेदबोधित सो करत न कछु बिसरेउ ।
बिन अवगुण कृकलास कूप मज्जत कर गहि उधरेउ ॥
ब्रह्मविशिख ब्रह्माण्डदहन क्षम गर्भ न नृपति जरेउ ।
अजर अमर कुलिशहु नाहिन वध सो पुनि फेन मरेउ ॥
विप्र अजामिल अरु सुरपति ते कहा जो नहिं बिगरेउ ।
उनको कियो सहाय बहुत उर को सन्ताप हरेउ ॥
गणिका अरु कन्दर्प ते जग महँ अघ न करत उबरेउ ।
तिनको चरित पवित्र जानि हरि निज हृदिभवन धरेउ ॥
केहि आचरण भलो मान प्रभु सो तो न जानि परेउ ।
तुलसिदास रघुनाथ कृपा को चितवत पन्थ खरेउ २४० ॥
सोइ सुकृती शुचि सांचो जाहि राम तुम रीझे ।
गणिका गीध वधिक हरिपुर गये ले काशी प्रयाग कब सीझे ॥
कबहुँ न डिग्यो निगममग ते पगनृगजगजानि जितदुखपाये ।
गजधौं कौनदीक्षित जाके सुमिरतलैसुनामवाहनतजिधाये ॥
सुर मुनि विप्र विहाय बड़ेकुल गोकुल जन्मगोपगृह लीन्हों ।
बांयों दियोविभवकुरुपतिको भोजन जाइ विदुरघरकीन्हों ॥

मानत भलहि भलो भक्तनि ते कछुक रीति पारथहि जनाई।
तुलसी सहजसनेहरामवश और सबै जलकी चिकनाई२४१॥

तो तुम मोहू से शठनि हठि न गति देते। कैसेहु नाम लेत कोउ पामर सुनि सादर आगे ह्वै लेते॥ पापखानि जियजानि अजामिल यमगण तमकि ताइ ताको भेजे। लिये छुड़ाय चले कर मींजत पीसत दांत गये रिसि रेते॥ गौतमतिय गज गृध्र विटप कपि है नाथहि नीके मालुम तेते। तिन्ह तिन्ह काजनि साधु समाज तजि कृपासिंधु तब तब उठि गेते॥ अजहुँ अधिक आदर यहि द्वारे पतित पुनीत होत नहिं केते। मेरे पासंगहु न पूजि हैं ह्वैगये हैं होने खल जेते॥ हौं अबलौं करतूति तिहारिय चितवत हुतो न रावरे चेते। अब तुलसी पूतरो बांधिहै सहि न जात मोपै परिहास एते २४२॥

तुम सम दीनबन्धु न दीन कोउ मो सम सुनहु नृपति रघुराई। मो सम कुटिल मौलिमणि नहिं जग तुम सम हरि न हरण कुटिलाई॥ हौं मन वचन कर्म पातकरत तुम कृपालु पतितनि गतिदाई। हौं अनाथ प्रभु तुम अनाथ हित चित यह सुरति कबहुँ नहिं जाई॥ हौं आरत आरतिनाशक तुम कीरति निगम पुराणनि गाई। हौं सभीत तुम हरण सकल भय कारण कौन कृपा बिसराई॥ तुम सुखधाम राम

श्रमभंजन हौं अतिदुखित त्रिविध श्रम पाई। यह जिय जानि दासतुलसी कहँ राखहु शरण समुझि प्रभुताई २४३॥

यहै जानि चरणनि चित लायो। नाहिंन नाथ अकारण को हित तुम समान पुराण श्रुति गायो। जननि जनक सुत दार बन्धुजन भये बहुत जहँ जहँ हौं जायो। सब स्वारथ हित प्रीति कपट चित काहू नहिं हरिभजन सिखायो॥ सुर मुनि मनुज दनुज अहि किन्नर मैं तनु धरि शिर काहि न नायो। जरत फिरत त्रय ताप पापवश काहु न हरि करि कृपा जुड़ायो॥ यत्न अनेक किये सुख कारण हरिपद विमुख सदा दुख पायो। अब थाक्यो जलहीन नाव ज्यों देखत विपतिजाल जग छायो॥ मो कहँ नाथ बूझिये यह गति सुखनिधान निज पति बिसरायो। अब तजि रोष करहु करुणा हरि तुलसिदास शरणागत आयो २४४॥

याहि ते मैं हरि ज्ञान गँवायो। परिहरि हृदयकमल रघुनाथहि बाहर फिरत विकल भयो धायो॥ ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद अति मतिहीन मर्म नहिं पायो। खोजत गिरि तरु लता भूमि बिल परमसुगन्ध कहाँते धौं आयो॥ ज्यों सर विमल वारि परिपूरण ऊपर कछु सिवार तृण छायो। जारत हियो ताहि तजि हौं शठ

चाहत यहि विधि तृषा बुझायो ॥ व्यापत त्रिविध ताप तनु दारुण तापर दुसह दरिद्र सतायो। अपनेहि धाम नाम सुरतरु तजि विषय बबूर बाग मन लायो॥ तुम सम ज्ञान-निधान मोहिंसम मूढ़ न आन पुराणनि गायो। तुलसिदास प्रभु यह विचारि जिय कीजै नाथ उचित मन भायो २४५॥

मोहिं मूढ़ मन बहुत बिगोयो। याके लिये सुनहु करुणा-मय मैं जग जन्म जन्म दुख रोयो॥ शीतल मधुर पियूष सहज सुख निकटहिं रहत दूरि जनु खोयो। बहु भांतिन श्रम करत मोहवश वृथहि मन्दमति वारि बिलोयो॥ कर्म कीच जिय जानि सानि चित चाहत कुटिल मलहि मल धोयो। तृषावन्त सुरसरि विहाय शठ फिरि फिरि विकल अकाश निचोयो॥ तुलसिदास प्रभु कृपा करहु अब मैं निज दोष कछू नहिं गोयो। डासतही गइ बीति निशा सब कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो २४६॥

लोक वेदहूं विदित बात सुनि समुझि मोह मोहित विकल मति थिति न लहति। छोटे बड़े खोटे खरे मोटेहू दूबरे राम रावरे निबाहे सबही की निबहति॥ होती जो आपने वश रहती एकही रस दुनी न हरष शोक सासति सहति। चहतो जो जोइ जोइ लहतो सो सोइ सोइ केहू भांति काहूकी न लालसा रहति॥ कर्म काल स्वभाव गुण

दोष जीव जग माया ते सो सभै भौंह चकित चहति। ईशनि दिगीशनि योगीशनि मुनीशनिहूं छोड़ति छोड़ायेते गहायेते गहति॥ शतरंज को सो राज काठ को सब समाज महराज बाजी रची प्रथम न हति। तुलसी प्रभु के हाथ हारिबो जीतिबो नाथ बहु वेष बहु मुख शारदा कहति २४७॥

राम जपु जीह जानि प्रीतिसों प्रतीति मानि रामनाम जपे जैहै जियकी जरनि। रामनाम सों रहनि रामनाम की कहनि कुटिल कलिमल शोक सङ्कट हरनि॥ राम नाम को प्रभाव पूजियत गणराव कियो न दुराव कही आपनी करनि। भवसागर को सेतु काशीहूं सुगति हेतु जपत सादर शम्भु सहित घरनि॥ बालमीकि व्याध हे अगाध अपराधनिधि मरा मरा जपे पूजे मुनि अमरनि। रोंक्यो विन्ध्य सोख्यो सिन्धु घटजहूं नामबल हास्यो हिय खारो भयो भूसुर डरनि॥ नाम महिमा अपार शेष शुक बार बार मति अनुसार बुध वेदहु बरनि। नामरति कामधेनु तुलसी को कामतरु रामनाम है विमोह तिमिर तरनि २४८॥

पाहि पाहि राम पाहि रामभद्र रामचंद्र सुयश श्रवण सुनि आयो हौं शरण। दीनबंधु दीनता दरिद्र दाह दोष

दुख दारुण दुसह दर दरप हरण ॥ जब जब जगजाल व्याकुल करम काल सब खल भूप भये भूतल भरण। तब तब तनु धरि भूमिभार दूरि करि थापे मुनि सुर साधु आश्रम वरण ॥ वेद लोक सब साखी काहूकी रती न राखी रावण की बन्दि लागे अमर मरण। ओकदै विशोक किये लोकपति लोकनाथ रामराज भयो धर्म चारिहु चरण ॥ शिला गुह गृध्र कपि भील भालु रातिचर ख्यालही कृपालु कीन्ह तारण तरण। पील उद्धरण शील-सिन्धु ढील देखियत तुलसी पै चाहत गलानिही गरण २४६ ॥

भली भांति पहिचाने जाने साहब जहांलों जग जूड़े होत थोरेही थोरेही गरम। प्रीति न प्रवीन नीतिहीन रीतिके मलीन मायाधीन सब किये कालहूं करम ॥ दानव दनुज बड़े महामूढ़ मूड़ चढ़े जीते लोकनाथ नाथ बलनि भरम। रीझि रीझि दिये वर खीझि खीझि घाले घर आपने निवाजे की न काहू के शरम ॥ सेवा सावधान तू सुजान समरथ सांचो सदगुणधाम राम पावन परम। सुरुख सुमुख एकरस एकरूप तोहिं विदित विशेषि घट घटके मरम ॥ तोसों नतपाल न कृपाल कंगाल मोसों दया में बसत देव सकल धरम। राम कामतरु छाहँ चाहै रुचि मन माहँ तुलसी विकल बलि कलि कुधरम २५०॥

तौ हौं बार बार प्रभुहि पुकारि कै खिझावतो न जो पै मोको होतो कहूं ठाकुर ठहर । आलसी अभागे मोसे तैं कृपालु पाले पोसे राजा मेरे राजाराम अवध शहर ॥ सेये न दिगीशन दिनेश न गणेश गौरी हितकै न माने विधि हरिऊ न हर । रामनामही सों योग क्षेम नेम प्रेमपण सुधा सों भरोसो यह दूसरो जहर ॥ समाचार साथ के अनाथ नाथ कासों कहौं नाथही के हाथ सब चोरऊ पहर । निज काज सुरकाज आरत के काज राज बूझिये विलम्ब कत कहूं न गहर ॥ रीति सुनि रावरी प्रतीति प्रीति रावरे सों डरतहौं देखि कलिकाल को कहर । कहेही बनेगी कै कहाये बलि जाउँ राम तुलसी तू मेरी हारि हिये न हहर २५१ ॥

राम रावरो स्वभाव गुण शील महिमा प्रभाव जान्यो हर हनुमान लषण भरत । जिनके हिये सुथल राम प्रेम सुरतरु लसत सरस सुख फूलत फरत ॥ आप माने स्वामी के सखा सुभाइ पति ते सनेह सावधान रहत डरत । साहब सेवक रीति प्रीति परिमिति नीति नेम को निबाह एक टेक न टरत ॥ शुक सनकादि प्रह्लाद नारदादि कहैं राम की भगति बड़ी विरत निरत । जाने बिनु भक्ति न जानिबो तिहारे हाथ समुझि सयाने नाथ पगनि परत ॥ छमत बिमत न पुराणमत एक पथ नेति नेति नेति नित निगम

करत। औरन की कहा चली एकै बात भले भली रामनाम लिये तुलसीहू से तरत २५२ ॥

बाप आपने करत मेरी घनी घटि गई। लालची लबार की सुधारिये बारक बलि रावरी भलाई सबही की भली भई ॥ रोग वश तनु कुमनोरथ मलिन मन पर अपवाद मिथ्या वाद वाणी हई। साधन की ऐसी विधि साधन विना न सिधि बिगरी बनावै कृपानिधि कृपा नई ॥ पतितपावन हित आरत अनाथनि को निराधार को अधार दीनबन्धु दई। इनमें न एको भयो बूझि न जूझे न जयो ताही ते त्रिताप तयो लुनियत बई ॥ स्वांग सूधो साधुको कुचाल कलिते अधिक परलोक फीकी मति लोकरँग रई। बड़े कुसमाज राज आजलौं जो खोये दिन महाराज केहू भांति नाम ओट लई ॥ रामनाम को प्रताप जानियत नीके आप मोको गति दूसरी न विधि निरमई। खीझिबे लायक करतब कोटि कोटि कटु रीझिबे लायक तुलसी की निलजई २५३ ॥

राम राखिये शरण राखि आये सब दिन। विदित त्रिलोक तिहूं काल न दयाल दूजो आरत प्रणतपाल को है प्रभु बिन ॥ लाले पाले पोषे तोषे आलसी अभागी अघी नाथ पै अनाथनि सों भये न उऋन। स्वामी समरथ ऐसो

हौं तिहारो जैसो तैसो काल चाल हेरि होति हिये घनी घिन ॥ रीझि खीझि विहँसि अनख क्योंहूं एक बार तुलसी तू मेरो बलि कहियत किन । जाहिं शूल निरमूल होंहिं सुख अनुकूल महाराज राम रावरी सों तेहि छिन २५४॥

राम रावरो नाम मेरो मातु पितु है । सुजन सनेही गुरु साहब सखा सुहृद रामनाम प्रेम अविचल चितु है ॥ शत कोटि चरित अपार दधिनिधि मथि लियो काढ़ि वामदेव राम नाम घृतु है । नाम को भरोसो बल चारिहूं फल को फल सुमिरिये छांड़ि छल भलो कतु है ॥ स्वारथ साधक परमारथदायक नाम रामनाम सारिखो न और हितु है । तुलसी स्वभाव कही सांचिये परैगी सही सीतानाथ नाम नित चितहूं को चितु है २५५ ॥

राम रावरो नाम साधु सुरतरु है । सुमिरे त्रिविध घाम हरत पूरत काम सकल सुकृत सरसिजको सर है ॥ लाभहू को लाभ सुखहू को सुख सरबस पतित पावन डरहू को डर है । नीचेहू को ऊंचे हू को रंकहू को रायहू को सुलभ सुखद आपनो सो घर है ॥ वेदहूं पुराणहूं पुराणिहूं पुकारि कह्यो नामप्रेम चारि फलहू को फर है । ऐसे राम नाम सों न प्रीति न प्रतीति मन मेरे जान जानिबो सोई नर खर है ॥ नाम सों न मातु पितु मीन हित बन्धु

गुरु साहब शुभी सुशील सुधाकर है। नाम सों निबाह नेह दीनको दयालु देह दासतुलसीको बलि बड़ो वर है २५६ ॥

कहे बिन रह्यो न परत कहे राम रस न रहत। तुमसे सुसाहब की ओट जन खोटो खरो काल की करम की कुसांसति सहत ॥ करत विचार सार पैयत न कहूं कछू सकल बड़ाई सब कहां ते लहत। नाथ की महिमा सुनि समुझि आपनी ओर हेरिकै हारि हहरि हृदय दहत ॥ सखा न सुसेवक न सुतिय न प्रभु आप माय बाप तुहीं सांची तुलसी कहत। मेरी तो थोरी है सुधरेगी बिगरियो बलि राम रावरी सों रही रावरो चहत २५७ ॥

दीनबंधु दूरियो किये दीन को न दूसरो शरण। आपको भलो है सब आपने को कोऊ कहूं सबको भलो है राम रावरो चरण ॥ पाहन पशु पतंग कोल भील निशिचर कांपते कृपानिधान किये सुबरण। दण्डक पुहुमि पायँ परसि पुनीत भई उकठे विटप लागे फूलन फरण ॥ पतितपावन नाम वामहूं दाहिनो देव दुनी न दुसह दुख दूषण दरण। शीलसिंधु तोसों ऊंची नीचियो कहत शोभा भलो तोसों तुहीं तुलसी की आरतिहरण २५८ ॥

जानि पहिचानि मैं बिसारे हौं कृपानिधान एतो मान ढीठ हौं उलटि देत खोरिहौं। करत यतन जासों जोरिबे

को योगीजन तासों क्योंहूं जुरी सो अभागो बैठे तोरिहौं ॥ मोसे दोष कोष को भुवन कोष दूसरो न आपनी समुझि सूझि आयो टकटोरिहौं। गाड़ी के श्वान की नाईं माया मोह की बड़ाई क्षणहिं तजत क्षण भजत बहोरिहौं॥ बड़ो साईं द्रोही न बराबरी मेरी को कोऊ नाथ की शपथ किये कहत करोरिहौं। दूरि कीजै द्वारते लबार लालची प्रपंची सुधासों सलिल शूकरी ज्यों गहडोरिहौं॥ राखिये नीके सुधारि नीचको डारिये मारि दुहूं ओर की विचारि अब न निहोरिहौं। तुलसी कही है सांची रेख बारबार खांची ढील किये नाम महिमा की नाव बोरिहौं २५६ ॥

रावरी सुधारी जो बिगारी बिगरेगी मेरी कहौ बलि वेद किन लोक कहा कहैगो। प्रभु को उदास भाव जन को पाप प्रभाव दुहूं भांति दीनबंधु दीन दुख दहैगो॥ मैं तो दियो छाती पबि लयो कलिकाल दबि सांसति सहत परवश को न सहैगो। बांकी बिरदावलि बनैगी पालेही कृपालु अन्त मेरो हाल हेरि यों न मन रहैगो॥ करमी धरमी साधु सेवक विरत रत आपनी भलाई थल कहां को न लहैगो। तेरे मुँह फेरे मोसों कायर कपूत कूर लटे लटपटनि को कौन परिगहैगो॥ काल पाय फिरत

दशा दयालु सबही की तोहिं बिनु मोहिं कबहूं न कोऊ चहैगो। वचन करम हिये कहौं राम सौंह किये तुलसी पै नाथ के निबाहे निबहैगो २६० ॥

साहब उदास भये दास खास खीस होत मेरी कहा चली हौं बजाय जाय रह्योहौं। लोकमें न ठाउँ परलोक को भरोसो कौन हौं तो बलि जाउँ रामनाम ही ते लह्यो हौं॥ करम स्वभाव काल काम कोह लोभ मोह ग्राह अति गहनि गरीब गाढ़े गह्योहौं। छोरिबे को महाराज बांधिबे को कोटि भट पाहि प्रभु पाहि तिहुँ पाप ताप दह्योहौं ॥ रीझि बूझि सब की प्रतीति प्रीति येही द्वार दूध को जर्यो पियत फूंकि फूंकि मह्योहौं। रटत रटत लट्यो जाति पांति भांति घट्यो जूठनि को लालची चहा न दूधौ न्ह्यौहौं॥ अनत चह्यों न भलो सुपथ सुचाल चल्यो नीके जिय जानि इहां भलो अनचह्योहौं। तुलसी समुझि समुझायो मन बारबार अपनो सों नाथहू सों कहि निरबह्योहौं २६१ ॥

मेरी न बने बनाये मेरे कोटि कल्प लौं राम रावरे बनाये बन पल पाउ मैं। निपट सयाने हौ कृपानिधान कहा कहौं लिये बेर बदलि अमोलमणि आउ मैं॥ मानस मलीन करतब कलिमलपीन जीहहूं न जप्यो नाम बक्यों

आउबाउ मैं। कुपथ कुचाल चल्यो भयो न भूलिहूं भलो बालदशाहूं न खेल्यो खेलत सुदाउ मैं॥ देखीदेखा दम्भते कि संग ते भई भलाई प्रकटि जनाई कियो दुरित दुराउ मैं। राग रोष दोष पोषे गोगण समेत मन इनकी भगति कीन्हीं इनहीं को भाउ मैं॥ आगिलो पाछिलो अबहूं को अनुमान ही ते बूझियत गति कछु कीन्हों तो न काउ मैं। जग कहै राम को प्रतीति प्रीति तुलसीहू झूठे सांचे आश्रय साहब रघुराउ मैं २६२॥

कह्यो न परत बिनु कह्यो न रह्यो परत बड़ो सुख कहत बड़े सो बलि दीनता। प्रभु की बड़ाई बड़ी आपनी छोटाई छोटी प्रभु की पुनीतता आपनी पापपीनता॥ दुहूं ओर समुझि सकुचि सहमत मन सम्मुख होत सुनि स्वामी समीचीनता। नाथ गुणगाथ गाय हाथ जोरि माथ नाये नीचऊ निवाजे प्रीति रीति की प्रवीनता॥ यहि दरबार है गरब ते सरब हानि लाभ योग क्षेम को गरीबी मिसकीनता। मोटो दशकंध सों न दूबरो विभीषण सों बूझि परी रावरे की प्रेम पराधीनता॥ यहां की सयानप अयानप सहस सम सूधो सतिभाय कहै मिटति मलीनता। गृध्र शिला शबरी की सुधि सब दिन किये होयगी न साईं सों सनेह हित हीनता॥ सकल

कामना देत नाम तेरो कामतरु सुमिरत होत कलिमल छल छीनता । करुणानिधान वरदान तुलसी चहत सीतापति भक्ति सुरसरिनीर मीनता २६३ ॥

नाथ नीके कै जानिबी ठीक जन जीयकी । रावरो भरोसो नाह कैसो प्रेम नेम लियो रुचिर रहनि रुचि गति मतितीयकी ॥ दुष्कृत सुकृत वश सबही सों सङ्ग पर्‌यो परखि पराई गति आपनेहूं कीयकी । मेरे भले को गोसाईं पोचको सकल भाव हौं हूं किये कहौं सौंह सांची सीय पीयकी ॥ ज्ञानहूं गिराके स्वामी बाहर अन्तर्यामी यहां क्यों दुरैगी बात मुखकी औ हीयकी । तुलसी तिहारो तुमहीं पै तुलसी के हित राखिकै कहते कछु हैहौं माखी घीयकी २६४ ॥

मेरो कह्यो सुनि पुनि भावै तोहिं करि सो । चारिहूं विलोचन विलोक तू तिलोकमहँ तेरो तिहूं काल कहूं को है हितु हरिसो ॥ नये नये नेह अनुभये देह गेह बसि परिखे प्रपंची प्रेम परत उघरि सो । सुहृद समाज दगाबाजिही को सौदा सूत जब जाको काज तब मिलो पायँ परि सो ॥ विबुध सयाने पहिंचाने कैधौं नाहीं नीके देत एक गुण लेत कोटिगुण भरि सो । करम धरम श्रम फल रघुवर बिनु राख को सो होम है ऊसर को सो बरिसो ॥

आदि अन्त बीच भलो भलो करै सबही को जाको यश लोक वेद रह्यो है बगरि सो। सीतापति सारिखो न साहब शीलनिधान कैसे कल परै शठ बैठो सो बिसरि सो॥ जीव को जीवन प्राण प्राण को परमहित प्रीतम पुनीत कृत नीचन निदरि सो। तुलसी तोको कृपाल जो कियो कोशलपाल चित्रकूटको चरित्र चेतु चित करि सो॥२६५॥

तन शुचि मन रुचि मुख कहौं जन हौं सियपी को। केहि अभाग जान्यो नहीं जो न होय नाथसों नातो नेह न नीको॥ जल चाहत पावक लहौं विष होत अमी को। कलि कुचाल सन्तनि कही सोइ सही मोहिं कछु फहम न तरनि तमीको॥ जानि अन्ध अञ्जन कहै बनबाघिनि घी को। सुनि उपचार विकारको सुविचार करौं जब तब बुद्धि बल हरै हीको॥ प्रभु सों कहत सकुचत हौं परौं जनि फिरि फीको। निकट बोलि बलि बरजिये परिहरै ख्याल अब तुलसिदास जड़ जी को २६६॥

ज्यों ज्यों निकट भयो चहौं कृपालु त्यों त्यों दूरि पस्यो हौं। तुम चहुँ युग रस एक राम हौंहूं रावरो यदपि अघ अवगुणनि भर्योहौं॥ बीच पाइ नीच बीचही छरनि छर्योहौं। हौं सुवरण कुवरण कियो नृपते भिखारि करि सुमतिते कुमति कर्योहौं॥ अगणित गिरि कानन फिर्यो

बिनु आगि जस्योहौं। चित्रकूट गये मैं लखी कलि की कुचाल सब अब अपडरनि डस्योहौं॥ माथ नाइ नाथ सों कहौं हाथ जोरि खस्योहौं। चीन्हो चोर जिय मारि है तुलसी सो कथा सुनि प्रभुसों गुदरि बस्योहौं २६७॥

प्रण करि हौं हठि आजते राम द्वार पस्योहौं। तू मेरो यह बिनु कहे उठिहौं न जनम भरि प्रभुकी सौं करि निबस्यो हौं॥ दै दै धक्का यमभट थके टारे न टस्योहौं। उदर दुसह सासति सही बहुबार जनमि जग नरक निदरि निकस्योहौं॥ हौं मचला लै छांड़िहौं जेहि लागि अस्यो हौं। तुम दयालु बनिहै दिये बलि बिलम्ब न कीजिय जात गलानि गस्योहौं॥ प्रकट कहत जो सकुचिये अपराध भस्योहौं। तौ मनमें अपनाइये तुलसिहि कृपाकरि कलि बिलोकि हहस्योहौं २६८॥

तुम अपनायो तब जानिहौं जब मन फिरि परिहै। जेहि स्वभाव विषयनि लग्यो तेहि सहज नाथसों नेह छांड़ि छल करिहै॥ सुत की प्रीति प्रतीति मीत की नृप ज्यों डर डरिहै। अपनो सो स्वारथ स्वामी सो चहुंविधि चातक ज्यों एक टेकते नहिं टरिहै॥ हरषि है न अति आदरे निदरे न जरि मरिहै। हानि लाभ दुख सुख सबै समचित हित अनहित कलिकुचाल परिहरिहै॥ प्रभु गुण

सुनि मन हरषि है नीर नयननि ढरिहै। तुलसिदास भयो रामको विश्वास प्रेम लखि आनन्द उमँगि उर भरिहै २६६॥

राम कबहुँ प्रिय लागि हौ जैसे नीर मीन को। सुख जीवन ज्यों जीवको मणि ज्यों फणिको हित ज्यों धन लोभलीन को॥ ज्यों स्वभाव प्रिय लगति नागरी नागरं नवीन को। त्यों मेरे मन लालसा करिये करुणाकर पावन प्रेम पीन को॥ मनसा को दाता कहैं श्रुति प्रभु प्रवीन को। तुलसिदास को भावतो बलि जाउँ दयानिधि दीजै दान दीन को २७०॥

कबहुँ कृपा करि रघुवीर मोहूं चितैहौ। भलो बुरो जन आपनो जियजानि दयानिधि अवगुण अमित बितैहौ॥ जन्म जन्म हौं मन जित्यो अब मोहिं जितैहौ। हौं सनाथ ह्वैहौं सही तुमहूं अनाथपति ज्यों लघुतहिं न भितैहौ॥ विनय करौं अपभयहुं ते तुम परम हितैहौ। तुलसिदास कासों कहै तुमहीं सब मेरे प्रभु गुरु मातु पितैहौ २७१॥

जैसो हौं तैसो हौं राम रावरो जन जनि परिहरिये। क्षमासिंधु कोशलधनी शरणागत पालक ढरनि आपनी ढरिये॥ हौं तो बिगरायल और को बिगरो न बिगरिये। तुम सुधारि आये सदा सबकी सबही विधि अब मेरियो सुधरिये॥ जग हँसिहै मेरे सँग रहे कत यहि डर डरिये।

कपि केवट कीन्हें सखा जेहि शील सरल चित तेहि स्वभाव अनुसरिये ॥ अपराधी तउ आपनो तुलसी न बिसरिये । टूटियो बांह गरे परै फुटेहूं विलोचन पीर होत हित करिये २७२ ॥

तुम जनि मन मैलो करो लोचन जनि फेरो । सुनहु राम बिनु रावरे लोकहुँ परलोकहुँ कोउ न कहूं हितु मेरो ॥ अगुण अलायक आलसी जानि अधम अनेरो । स्वारथ के साथिन्ह तज्यो तिजरा कैसो टोटक औचट उलटि न हेरो ॥ भक्तिहीन वेद बाहिरो लखि कलिमल घेरो । देवनिहूं देव परिहस्यो अन्याय न तिनको हौं अपराधी सब केरो ॥ नाम की ओट लै पेट भरत हौं पै कहावत चेरो । जगत विदित बात है परी समझिये धौं अपने लोक की वेद बड़ेरो ॥ ह्वैहै जब तब तुमहिं ते तुलसी को भलेरो । दीन दिनहूं दिन बिगरिहै बलि जाउँ विलंब किये अपनाइये सबेरो २७३ ॥

तुम तजि हौं कासों कहौं और को हितु मेरे ।
दीनबन्धु सेवक सखा आरत अनाथ पर सहज छोह केहि केरे ॥
बहुत पतित भवनिधि तरे बिनु तरनी बिनु बेरे ।
कृपा कोप सतिभायहुँ धोखेहुँ तिरछेहुँ राम तिहारेहि हेरे ॥
जो चितवनि सौंधी लगे चितइये सबेरे ।

तुलसिदासअपनाइयेकीजैनढीलअबजीवनअवधिअतिनेरे।

जाऊं कहां ठौर है कहां देव दुखित दीन को। को कृपालु स्वामी सारिखो राखे शरणागत सब अँग बल विहीन को॥ गणिहि गुणहि साहब लहै सेवा समीचीन को। अधम अगुण आलसिन को पालिबो फबि आयो रघुनायक नवीन को॥ मुखकै कहा कहौं विदित है जीकी प्रभु प्रवीन को। तिहुँ काल तिहुं लोक में एक टेक रावरी तुलसी से मन मलीन को २७५॥

द्वार द्वार दीनता कही काढ़ि रद परि पाहूं। है दयालु दुनि दश दिशा दुख दोषदलन क्षम कियो न संभाषण काहूं॥ त्वचा तजत कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु पिताहूं। काहे को रोषदोष काहिधौं मेरेही अभाग मोसों सकुचत सब छुइ छाहूं॥ दुखित देखि सन्तन कह्यो शोचै जनि मन माहूं। तोसे पशु पामर पातकी परिहरे न शरण गये रघुवर ओर निवाहूं॥ तुलसी तिहारो भये भयो सुख प्रीति प्रतीति विनाहूं। नामकी महिमा शील नाथ को मेरो भलो बिलोकि अबते सकुचाहुँ सिहाहूं २७६॥

कहा न कियों कहां न गयों शीश काहि न नायों। राम रावरो बिनु भये जन जन्मि जन्मि जग दुख दशहू दिशि पायों॥ आश विवश खास दास है नीच प्रभुनि

जनायों। हाहा करि दीनता कही द्वार द्वार बार बार परी न छार मुँह बायों॥ अशन वसन बिनु बावरो जहँ तहँ उठि धायों। महिमा अति प्रिय प्राणते तजि खोलि खलनि आगे खिन खिन पेट खलायों॥ नाथ हाथ कछु नाहिं लग्यो लालच ललचायों। सांच कहौं नाच कौनसो जो न मोहिं लोभ लघु निलज नचायों॥ श्रवण नयन मन मग लगे सब थल पतितायों। मूंड़ मारि हिय हारिकै हित हेरि हहरि अब चरणशरण तकि आयों॥ दशरथ के समरथ तुम्हीं त्रिभुवन यश गायों। तुलसी नमत अवलोकिये बलि बांह बोलदै बिरदावली बुलायों २७७॥

राम राय बिनु रावरे मेरे को हितू सांचो। स्वामी सहित सबसों कहौं सुनि गुनि विशेषि कोउ रेख दूसरी खांचो॥ देह जीव योग के सखा मृषा टांचन टांचो। किये विचार सारकदली ज्यों मणिकनक संग लघु लसत बीच बिच कांचो॥ विनयपत्रिका दीन की बापु आपु ही बांचो। हिये हेरि तुलसी लिखी सो स्वभाव सही करि बहुरि पूछियेहि पांचो २७८॥

पवनसुवन रिपुदवन भरत लाल लषण दीन की। निज निज अवसर सुधि किये बलि जाउँ दास आस पूजि है खास खीन की॥ राजद्वार भली सब कहैं साधु समीचीन

की । सुकृत सुयश साहब कृपा स्वारथ परमारथ गति भये गति विहीन की ॥ समय सँभारि सुधारिबी तुलसी मलीन की । प्रीति रीति समुझाइबी नतपाल कृपालुहि परमिति पराधीन की २७६ ॥

मारुति मन रुचि भरत की लखि लषण कही है ।
कलिकालहूंनाथनामसोंप्रतीतिप्रीतिएककिंकरकीनिबही है ॥
सकल सभा सुनि लै उठी जानी रीति रही है ।
कृपा गरीबनिवाज की देखत गरीबको साहब बांह गही है ॥
बिहँसि राम कह्यो सत्य है सुधि मैं हूं लही है ।
मुदितमाथनावतबनीतुलसीअनाथकीपरीरघुनाथहाथसहीहै

इति ।